कालपुत्र
एक रहस्यमयी कातिल
वर्तमान से लेकर ढाई हजार साल
पहले तक फैली एक महागाथा .
अनुराग कुमार जीनियस

कालपुत्र

कालपुत्र ,मुंडक शिब्रा उपन्यास का दूसरा भाग है । जिन पाठकों ने मुंडक शिब्रा नहीं पढ़ा है उनके लिए यहां पर मुंडक शिब्रा का सारांश दे रहा हूं ताकि उन्हें काल पुत्र पढ़ कर समझने में कोई दिक्कत पेश न आए। बाकी जिन पाठक दोस्तों ने पहला भाग पढ़ रखा है उन्हे तो कोई दिक्कत पेश नहीं आने वाली।

एक छोटे से समुद्री टापू पर बसे छोटे से देश जिसकी आबादी लगभग 5 लाख के करीब है की कहानी है। सारी घटना इसी टापू पर घटित होती हैं। इस छोटे से टापू पर दो समुदाय रहते हैं। नयाना समुदाय और मुंडक समुदाय। हजारों साल से मुंडक समुदाय इस छोटे से देश पर राज करता रहा है। यहां पर मुंडक समुदाय के तानाशाह युगांडा की तानाशाही चलती है । मुंडक समुदाय मुंडक शिब्रा (देवता) के वंशज हैं और इसीलिए किसी को कोई एतराज नहीं क्योंकि यहां पर ऐसी मान्यता है ढाई हजार साल पहले नयाना समुदाय पर गंडक और उसका बेटा दंडक नामक शैतान अत्याचार करते थे। लोग बड़े परेशान थे। उनका जीवन दुभर हो गया था। फिर जब लोग त्राहि त्राहि करने लगे। ऐसे में मुंडक शिब्रा अपने कुछ साथियो के साथ आसमान से धरती पर अवतरित होकर उन दोनों शैतानों का खत्म कर नयाना समुदाय के लोगों को मुक्त किया था । उन्हें अच्छा जीवन जीने के लिए सुअवसर प्रदान किया था । तब से नयाना समुदाय मुंडक शिब्रा और उसके वंशज को अपना आराध्य मानते आ रहे हैं। सभी महत्वपूर्ण पदों पर मुंडक समुदाय के लोग हैं पर किसी को कोई एतराज नहीं । इक्का-दुक्का कभी-कभी आवाज उठती हैं। उन्हें दवा दिया जाताखुद है और ऐसी आवाजों को दबाने में नयाना समुदाय के लोगों का ही ज्यादातर हाथ होता है।

नयाना समुदाय का ही एक 30 वर्षीय वबलिष्ठ शरीर का हैंडसम युवक सामंता मुंडक शिब्रा का बहुत बड़ा भक्त है । उसके दिल में बड़ी इच्छा है की काश ढाई हजार साल पहले वह होता तो अपने समुदाय पर अत्याचार करने वाले गंडक और दंडक को मुंडक शिब्रा के साथ मिलकर मजा चखाता । और उसकी इस इच्छा को उसका वैज्ञानिक दोस्त जमन्ता पूरी करता है।

वह एक टाइम मशीन का आविष्कार करता है जिससे कोई भी किसी भी समय की यात्रा,ट्रेवल कर सकता था आसानी से। दोनों इस टाइम मशीन से ढाई हजार साल पहले के समय में पहुंचते हैं । वहा का वातावरण देखकर बहुत खुश होते हैं पर वहां पहुंचकर उनकी सोच को बड़ा धक्का लगता है। वहां अनेकों रहस्यों से उनका पाला पड़ता है ।

सामंता और जमन्ता को सच्चाई पता चलती है। उनकी विचारधारा में बदल जाती हैं पर हालात ऐसे होते हैं कि उन्हें वहां से टाइम मशीन के जरिए वापस अपने युग में आना पड़ा।

यहां तक की कहानी आपने मुंडक शिब्रा में पढ़ी और खूब सराही । आपके ईमेल्स , अमेजन और फैकबुक पर प्राप्त हुए फीडबैक ,मैसेज इस बात की पुष्टि करते हैं और इसी बात से उत्साहित होकर मैं इसका दूसरा भाग कालपुत्र भी बड़ी मेहनत से लिखा पाया और पूरी उम्मीद है कि मुण्डक शिब्रा की तरह ही कालपुत्र भी आपको पसंद आएगा। 5 में से 4स्टार मिले है अमेजन पर।

तो अब देर ना करते हुए पढ़ते हैं कालपुत्र।

****

अनोखी चीज

वह दबे पांव आगे बढ़ रहा था। बेहद चौकन्ना लग रहा था। सांस तक रोक रखी थी। लगता था अगर उसने जोर से सांस भी ली तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा।

नदी के किनारे जंगल में दोपहर के वक्त कुछ बच्चे बकरियों को चरा रहे थे और साथ ही साथ वे खेल भी खेल रहे थे और उनका गेम था छुपम छुपाई जिसमे कुछ बच्चे छुप जाते थे। और एक उन सब को बारी बारी से ढूढता था। बच्चे बेहद खुश नजर आ रहे थे। इस बार एक छोटे से बच्चे के हिस्से में सबको ढूंढने का काम आया था। फिर जब सारे बच्चे झाड़ियां में इधर-उधर जा कर छुप गए तो वह सबको ढूंढने की कोशिश करने लगा।

वह 12 वर्षीय लड़का जो दबे पांव एक झाड़ी की तरफ बढ़ रहा था जिसके पीछे लगता था उसे की कोई छुपा है पर अचानक उसका पैर किसी चीज में फंसकर उलझ गया और वह धड़ाम से जमीन पर गिरा पर वह बेहद पूर्ति के साथ उठा और जिस चीज में उसका पैर फंसा था और वह गिरा था उसने उसे तुरंत देखा । वह कोई बेहद चमकीली वस्तु थी जो जमीन में गड़ी हुई थी। उसने हाथ से उसे साफ किया तो वह चमकने लगी थी वह वस्तु सोने का एक बड़ा कड़ा था।

उसने अपने सभी साथियों को जोर से आवाज देकर बुलाकर,"देखो मुझे क्या मिला है, जल्दी आओ!"

पर कोई भी बच्चा वहां पर नहीं आया क्योंकि सबको लगता था कि वह कोई चाल चल रहा है पर जब वह लगातार यही बात कहता रहा तो सारे बच्चे एक एक करके बाहर निकल आए और जब सब उसके पास आए और उन्होंने उस चमकती हुई वस्तु को देखा तो सब ने मिलकर उसको उखाड़ने की कोशिश की । लकड़ी से उस जगह को खोदा गया।

खोदने पर जो भी चीज निकली वह सोने का कड़ा था जो बेहद भारी था और चमकीला भी था । कड़े पर कुछ लिखा भी था पर बच्चे शायद पढ़ना नहीं जानते थे।

जिस बच्चे को कड़ा मिला था वह बेहद खुश था। पर सारे बच्चे कड़े को लेकर आपस में झगड़ने लगे। उनके झगड़े का शोर सुनकर वहां से गुजरने वाले दो लोगों ने सुना तो वे वहां आ गए। बच्चों के हाथ में सोने का कड़ा देख कर पूरी बात पूछी और फिर वह कड़ा उनसे लेते हुए बोले ,"यह राजा साहब की संपत्ति है इस पर उनका का हक है । इस चीज का परीक्षण किया जाएगा कि यह क्या वस्तु है, कहीं कोई हानिकारक वास्तु तो नही है।,"

बच्चों ने डर कर वह कड़ा दोनों को दिया पर बच्चे ज्यादा नाराज ना हो इसलिए उन दोनों ने अपनी जेब से कुछ पैसे निकाल कर उन बच्चों को दिए ताकि बच्चे खुश हो जाए और सोने का कड़ा लेकर वहां से चले गए ।

वे दोनों चूंकि पुरातत्व विभाग से ताल्लुक रखते थे इसलिए अपने ऑफिस में पहुंचकर अपने अधिकारियों से इस बारे में बात की उन्हें बताया कि जिस जगह पर यह सोने का कड़ा मिला है

अगर वहां पर खुदाई की जाए तो और भी कुछ मिल सकता है।

अधिकारियों ने उन दोनों की बात को मद्दे नजर रखते हुए अपने सीनियर लोगों से बातचीत की। ऊपर से आर्डर मिला तो उन्होंने उस जगह पर जाकर खुदाई करना शुरू कर दिया।

****

शपथ

एक बड़े से कमरे में अचानक टाइम मशीन प्रकट हुई । कुछ क्षण बाद उसके बल्ब जल उठे। टाइम मशीन की दो सीटों पर दोनों मित्र बैठे थे सामंता और जमन्ता। दोनों ही बेहद शांत थे। उसकी वजह यही थी की जैसा वे सोचते थे सच्चाई उसके विपरीत निकली थी। जिस शख्स को वे अपना हीरो समझते थे वह सबसे बड़ा खलनायक था और जिन लोगों को खलनायक समझकर रोज बेइज्जत करते थे, गालियां देते थे, जूते का हार पहनाते थे वे हीरो थे।

उनके दिलों दिमाग पर जो भी ढाई हजार साल पहले के समय में देख कर लौटे थे का प्रभाव बुरी तरह छाया हुआ था।

छाया भी क्यों ना हो ..अभी वक्त ही कितना हुआ था !

वे दोनों कुछ पल शांत बैठे रहे फिर अचानक सामंता उठ खड़ा हुआ और टाइम मशीन से नीचे आ गया । उसका दोस्त भी उठा और नीचे आ गया।

"हम सैकड़ो सालों से एक शैतान को पूजते आ रहे हैं और जिसको पूजना चाहिए उसकी अपेक्षा करते आ रहे! बेकार है ऐसी सोच और समझ और ऐसी व्यवस्था पर जो झूठ को सच और सच को झूठ साबित करने पर तुली हो। मैं तो बचपन से मुंडक शिब्रा को ही अपना आराध्य मानता आ रहा था जबकि गंडक और दंडक को आराध्य मानना चाहिए था । पर बचपन से ही उन्हें गालियां बकता आ रहा हू। खुद मैंने अपने हाथों से कई बार उन्हें पत्थर मारे हैं अपने हाथों से जूते की मालाओं को पहनाया है । सच कहूं तो आज मुझे अपने आप पर शर्मा रही है। घृणा हो रही है अपने आप से।" सामंता दुखी और गुस्से के मिलेजुले भाव में बोला।

जमन्ता खामोश था।

सामंता ने कमरे का दरवाजा खोला और झट से बाहर निकल गया। बाहर कंपाउंड में खड़ी अपनी बाइक उठाई। उस पर सवार हुआ , बाइक स्टार्ट की और घर की तरफ रवाना हो गया । वह बड़ा व्यतीत और दुखी जान पड़ता था। उसका दिमाग बेहद उलझा हुआ जान पड़ता था।

10 मिनट बाद वह अपने घर पहुंचा। घर पर उसके पिता बाहर बरामदे में बैठे थे। उनके गले में मुंडक शिब्रा का ताबीज पड़ा था। उसकी नजर उस ताबीज पर पड़ी तो पता नहीं क्यों उसकी आंखों में खून उतर आया। उसने झपटकर उसे अपने पिता के गले से उस ताबीज को खींच लिया और बाहर रखे डस्टबिन में डाल दिया। उसके पिता अचानक हुई इस हरकत पर चौक पड़े उन्हें समझ में नहीं आया कि आखिर उसने यह हरकत क्यों की । वह फौरन नाराज हो गए और गुस्से में बोले।

"यह क्या बदतमीजी है?"

"यह बदतमीजी नहीं है पापा ! इस ताबीज को जहां होना चाहिए मैंने वही पहुंचा दिया।"

"क्या बक रहे हो? तुम्हें पता है वह ताबीज मुंडक शिब्रा की है जो हम सबके आराध्या हैं और.. और तुम तो उन्हें बहुत मानते हो फिर आज यह बेजा हरकत क्यों ? क्या तुम्हारा दिमाग घूम गया है?"

"दिमाग तो पहले घूमा था अभी तो सही रास्ते पर आया है!"

"क्या बक रहे हो? मुझे तो लगता है सच में तुम्हारा दिमाग घूम गया है या फिर तुमने ड्रिंक किया हुआ है!"

उसके पिता तुरंत डस्टबिन की तरफ बढ़े पर उसने तुरंत उन्हें डस्टबिन से दूर किया और सख़्त चेतावनी भरे लहजे में बात की जिस लहजे में उसने अपने बाप से कभी भी बात नहीं की थी," उससे दूर रहो पापा, उस शख्स का मुकाम डस्ट बिन ही होना चाहिए!"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम अचानक यह सब क्या उल्टा सीधा क्या बक रहे हो? वैसे तुम इतने दिनों से कहां थे ? ," उसके बाप को ध्यान आया की उसका बेटा अचानक कई दिनों से गायब था तो पूछ बैठे,"मुझे तो लगता है जरूर तुम किसी की गलत संगत में पड़े हुए थे उसी से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है!"

"मेरी बुद्धि पहले भ्रष्ट थी पर अब सही और आप भी अपनी बुद्धि भ्रष्ट मत कर लीजिए! मुंडक कोई शिब्रा नहीं है वह शैतान था शैतान और हम जिन्हे शैतान मानते हैं वह हमारे महान पूर्वज थे । नयाना समुदाय के महान योद्धा थे गंडक और दंडक जिनका हमें सम्मान करना चाहिए था पर हमारी बुद्धि को इतने सालों से बदल कर रख दिया गया कि हम अपने हीरो को खलनायक समझने लगे!"

"यह तुम आज कैसी बहकी बहकी बाते कर रहा है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा!,"अचानक उसका पिता कहते-कहते रुक गया और उसे कुछ ध्यान आया तो उसने कहा,"तू जब कुछ दिनों से यहां नहीं था तभी निमांडा आया था । एक लिफाफा दे गया था!"

निमांडा का नाम सुनकर सामंता को याद आया कि ढाई हजार साल की यात्रा करने से पहले वह उसके पास गया था और उसने अपने सपने के बारे में पूछा था तो उसने कहा था कि वह सोच कर बतायेगा। हो सकता है लिफाफे में ऐसा ही कुछ हो जो उसके सपने के बारे में राज बताता हो हालांकि अब उसे काफी पता था पर फिर भी उसके मन में इस बात की जिज्ञासा थी । निमांडा देखें क्या सोचता है इसी बात को सोचकर उसने तुरंत पिता से पूछा,"वह लिफाफा कहां है?"

" तेरे कमरे में , मेज पर ।"

वह बेहद फुर्ती के साथ अपने कमरे में पहुंचा। मेज पर लिफाफा रखा था उसने तुरंत उसे उठाया और खोला। लिफाफे में एक छोटी सी पर्ची थी जिसे वह बड़े ध्यान से पढ़ने लगा और जिसमें लिखा था, तुझे वह सपना इसलिए आता है क्योंकि ढाई हजार साल पहले तुझसे कोई बड़ा पाप हुआ था। उसने ढाई हजार साल पहले भी जन्म लिया था और उसके हाथों कोई बड़ा पाप हुआ था। बस वह सपना तुझे इसलिए आता है । तुझे वह पाप याद दिलाता है और तुझे प्रायश्चित करने के लिए कहता है । तुझे अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। पर मुझे यह नहीं पता कि वह पाप क्या था और उस पाप को खत्म करने के लिए तुझे क्या प्रायश्चित

करना चाहिए।

पत्र पढ़ने के बाद उसके मन में पक्का विश्वास हो गया की ढाई हजार साल पहले का समीरा वही है। और उसके हाथों क्या पाप हुआ था वह अच्छी तरह जानता था और जिसके लिए वह खुद को अब हर पल ,हर क्षण कोस रहा था । गंडक जैसे महा बलशाली , महायोद्धा और विशाल हृदय के व्यक्ति ने उसे अपना जिगरी दोस्त समझा था और उसने उसके साथ क्या किया? उसने धोखा किया उसके साथ और इस धोखे की वजह से सब कुछ तबाह बर्बाद हो गया। न सिर्फ उसे जिगरी दोस्त समझने वाला गंडक मर गया , उसका प्यारा मासूम बेटा दंडक जो शादी के लिए मन में खुशियों के पलो को संजोए था अपने आगे की नई जिंदगी के बारे में उमंग में खुशी में सोचते हुए अपनी प्रेमिका से मिलने जा रहा था वह भी मर गया । खुद सबसे ज्यादा विकसित उसका नयाना समुदाय छिन्न भिन्न हो गया। शैतानों का गुलाम बन गया हजारों साल के लिए । जिन लोगों को शासन करना चाहिए था वह दास बन गए सिर्फ और सिर्फ उसकी वजह से!

"क्या बात है तुम्हारा व्यवहार मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा?"उसके पिता भी उसे कमरे में आ गए वह देख रहे थे कि उनका बेटा आज बिल्कुल वैसा नहीं लग रहा जैसा कि रोज लगता था इसीलिए उन्होंने कमरे में आकर प्यार से पूछा। फिर क्षण भर रुकने के बाद, उसका उत्तर देने का मौका दिए बगैर पुना बोले," और इस पत्र में क्या लिखा है? मैने निमांडा से तेरे सपने के बारे में पूछा था जब वो ये लिफाफा देने आया था तो उसने बडी अजीब बात की थी। वह कह रहा था कि तूने बहुत बडा पाप किया है वो भी ढाई हजार साल पहले। मुझे तो उसका दिमाग हिल गया जान पड़ता है।"

" उसकी बात सच है।"

" क्या! उसकी बे सिर पैर वाली बात सच है? " उसके बूढ़े पिता को अचरज हुआ।

" हा।"

फिर सामंता ने टाइम मशीन के द्वारा ढाई हजार साल की अपनी उस यात्रा के बारे में विस्तार से बताया तो उसका पिता उसके सामने मुंह बाये हैरत से उसे देखता रहा । उसे बेटे की बातों पर बिल्कुल यकीन नहीं आ रहा था वैसा स्पष्ट जान पड़ता था।

" तूने अभी जो कुछ कहा वह सच है?" सारी बात सुनने के बाद भी उसके मन में शंका पनप रही थी शायद इसीलिए उसने फिर से कंफर्म करने के लिए पूछा।

जवाब में उसने हां मैं गर्दन हिलाई। उसका बूढ़ा आप वही पलंग पर धम्म से बैठ गया । उसके हाव भाव बता रहे थे कि वह बेहद परेशान है।

"मुझे तेरी बातों पर यकीन नहीं आ रहा। शायद किसी को नहीं आएगा पर अगर तेरी बात सच है तो सच में तुझसे बहुत बड़ा पाप हुआ । हमारा नयाना समुदाय इस देश का समृद्ध और शान से जीने वाला समुदाय होना चाहिए था पर आज उसकी दशा बेहद खराब है और जिसका जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ तू है । मुझे तो यह सोचकर ही बड़ा अचरज हो रहा है और सच कहूं तो तुझ पर क्रोध भी आ रहा है। तेरी वजह से ढाई हजार साल से हमारा समुदाय गुलाम बनकर रहने पर विवश है और अब तो लोगों की मानसिकता भी गुलामी वाली बन चुकी है। किसी को अगर बताया भी जाएगा तो कोई मानेगा नहीं।"

कुछ पल के लिए वहां खामोशी छा गई।

"वैसे तूने नयाना समुदाय के महान सरदार जो तुझे अपना जिगरी दोस्त समझता था के साथ तूने गद्दारी क्यों की ,उसकी पीठ में छुरा क्यों घोंपा आखिर तुझे क्या चाहिए था?"

"मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता कि मैंने वैसा क्यों किया पर मैं पता करके रहूंगा ..न सिर्फ पता करके रहूंगा बल्कि मुण्डक जैसे शैतान की हकीकत सबको बताऊंगा और हमारे महाप्रतापी सरदार उनके बेटे को उनके स्थान दिला कर रहूंगा चाहे कुछ भी हो जाए!"

"तुझे लगता है तेरी बात कोई मानेगा। आज तो खुद नयाना समुदाय के लोग ही मुण्डक को अपना आराध्य मानते हैं और गंडक दंडक के लिए उनके मन में अथाय नफरत रहती । ऐसे में कैसे तू उन्हे समझाएगा । मुझे नहीं लगता कि कोई समझेगा । उल्टा सब तुझे ही गलत साबित करने पर तुल जाएंगे और तुझे चोट भी पहुंचा सकते।"पिता के स्वर में उसके लिए बेहद चिंता झलक रही थी।

"कुछ भी हो मैं सच्चाई सबके सामने लाकर ही रहूंगा । अपने सरदार गंडक और उनके बेटे दंडक को सम्मान दिला कर ही रहूंगा अंजाम चाहे कुछ भी!"

अपने बेटे के चेहरे पर फैली दृढ़ता देखकर उसका पिता समझ गया कि यह अब किसी की नहीं सुनने वाला। लेकिन वह हकीकत भी जानता था कि हजारों साल से जिस बात को लोग सच मान रहे हैं उसके विपरीत जाकर कोई दूसरा सच उन्हें बताया जाएगा तो वह हजम नहीं करेंगे। समाज शिक्षित होता तो बात और थी । अशिक्षित समाज तो बिल्कुल भी नहीं मानने वाला । वह जो देखता है, सुनता है या उसे जो दिखाया जाता है ,सुनाया जाता है, बताया जाता है वह उसी को सत्य मन कर चलता है हकीकत भले ही उसकी उलट हो।

अचानक सामंता कमरे से बाहर निकल गया।

" कहा जा रहा है?"पीछे से पिता ने पुकारा तो वह दरवाजे पर ठिठक गया,पलटा और बोला,"यह जानने के लिए कि आखिर मैंने इतना बड़ा पाप क्यों किया .. मैंने गंडक के साथ गद्दारी क्यों की?"

इतना कह कर वह बाहर चला गया। पीछे पिता को उलझन में छोड़ कर।

****

वह वहां से सीधा निमांडा के आश्रम में पहुंचा जो की एक सुंदर से बगीचे में बना हुआ था। बगीचे के ठीक बीच में लाल ईंटों से उसका छोटा सा खूबसूरत रहने का स्थान था जहां उसके साथ उसके दो-चार केला चपाटी भी रहते थे । तंत्र-मंत्र विद्या से संबंधित लोग उसके पास आते रहते थे। फिलहाल वहां पर कुछ लोग उपस्थित थे जो अभी-अभी अपने काम से फारिग हुए थे और वहां से जाने की तैयारी कर रहे थे इसीलिए उसे मिलने का तुरंत मौका मिल गया । उसने भी बिना देर किए निमांडा के पास पहुंचने के लिए कदम आगे बढ़ा दिए हालांकि बीच में उसे रोका गया तो उसने कहा ,"निमांडा से कहो सामंता उससे मिलना चाहता है!"

शीघ्र ही उसे अंदर बुलाया गया और वह उसके सामने उपस्थित था। खुद निमाडा भी शायद उससे मिलना चाहता था क्योंकि उसके चेहरे के भाव यही बता रहे थे।

" बैठो।"निमांडा ने उसे बैठने के लिए कहा तो वह उसके सामने ही चटाई जैसे आसन पर बैठ

गया । वह खुद उसके सामने विशाल सोफे पर बैठा था।

"पिछली बार तुम अपने सपने को लेकर मुझसे मिलने आए थे तब मुझे कोई अनुमान नहीं लग पा रहा था ,हालांकि ऐसा पहली बार हुआ था । मैं खुद नहीं समझ पा रहा था और इसीलिए मैंने समय मांगा था। तुम्हें वह लिफाफा तो मिल ही गया होगा जो मैं तुम्हारे घर देने गया था । मैं खुद इसलिए गया था ताकि तुमसे बात कर सकूं पर तुम थे नहीं । तुम्हारे पिता को भी नहीं पता था कि तुम कहां हो और आज तुम यहां आए हो तो जाहिर है कि तुम्हें वह लिफाफा मिल चुका होगा। तुम्हारा यहां आना ही साबित करता है तुमने उस में रखा पत्र पढ़ा लिया है ।

"हा।"

"शायद उसमें जो लिखा है तुम्हें उसे पर यकीन नहीं होगा और तुम इसीलिए यहां पर आए हो.. है ना ? हालांकि उसमें जो लिखा है शायद किसी को उसे पर यकीन नहीं होगा।"

"मुझे यकीन है।"

" अच्छा!" सामंता ने सपाट लहज़े में एक दम से कहा तो वह कुछ पल के लिए हड़बड़ा गया पर तुंरत संभला।

"हां क्योंकि मैं सच्चाई जान चुका हूं!"

"सच्चाई जान चुके हो? कैसे ? मैने तो मैं तो अपनी सारी तांत्रिक क्रियाएं कर ली पर कुछ भी स्पष्ट नजर नहीं आता सिवाय इस बात के की ढाई हजार साल पहले तुमसे कोई बहुत बड़ा पाप हुआ और उसी की वजह से सपना तुम्हें बार बार आता है और यह सपना भविष्य में तुम्हारे लिए काफी खतरनाक साबित भी हो सकता है!"

" जानता हूं।"

कुछ पल सन्नाटा पसरा रहा।

" हूं। ," आखिर कर निमांडा ने ही मौन तोड़ा,"बहरहाल तुम्हें क्या सच्चाई पता चली और सबसे बड़ी बात है कैसे?"

सामंत ने अपने ढाई हजार साल की यात्रा जो उसने टाइम मशीन से पूरी की थी और फिर वहां जो कुछ देखा सब कुछ विस्तार से बयां किया।

उसकी पूरी बात सुनकर निमांडा अवाक बैठा रहा शायद उसे यकीन नहीं आ रहा था।

"मेरी बात का यकीन करो , मैं सच कह रहा हूं!" सामंता ने उसे आश्चर्य में पड़े देखा तो उसका संशय ख़त्म करने इरादे से पुर जोर तरीके से अपनी बात कही ।

"मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है। यकीन बस इस बात पर नहीं हो रहा था कोई ऐसी भी मशीन बन सकता है जो भूतकाल में ढाई हजार साल पहले के समय में जाकर आ सके, ट्रेवल कर सके हमें हमारा पास्ट हमे दिखला सके! कमाल हो गया ये तो!"

सामंता खामोश रहा।

" सच्चाई जान कर मुझे सच में बहुत बुरा लग रहा है। तुमसे बहुत गंभीर अपराध, पाप हुआ है। यकीन मानो मुझे तुमसे अब घृणा हों रही है। नयाना समुदाय जो कभी सबसे ज्यादा

विकसित और उन्नतिशील हुआ करता था पर आज गुलामों की तरह जी रहा है। और इस बात के लिए सिर्फ और तुम दोषी हो।" अचानक वह क्रोध में नज़र आने लगा।

" जानता हूं।," सामंता ने उसकी बात का कोई विरोध नहीं किया," पर अभी बहुत सी ऐसी बातें हैं जो मुझे जानना है कि आखिर मैंने इतना बड़ा पाप क्यों किया ,कैसे किया?"

"तुम्हारे पास तो टाइम मशीन है तुम फिर से उस टाइम मशीन से ट्रैवल करके वहां जा सकते हो? "

" हालात जैसे बन बन पड़े थे उसके मद्दे नजर वो सब कर पाना मुश्किल था, है! बहरहाल आप ने अपनी शक्तियों से काफ़ी कुछ जान लिया है तो कोई तो उपाय होगा सच्चाई जानने का?"

"एक उपाय तो है अगर काम कर जाए तो। पर वो तुम्ही पर कर सकता है।" उसने सोच कर कहा।

" क्या?"उसने तुरंत आशापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

" ध्यान की प्रक्रिया से तुम उस कालखंड में पहुंच सकते हो। मतलब तुम्हारी आत्मा वहां पहुंच सकती है और सब कुछ देख सकती है । पर यह केवल तुम पर ही काम करेगा क्योंकि मैं पहले भी कई बार कोशिश कर चुका हूं पर सिवाय इसके तुमसे ढाई हजार साल पहले बहुत बड़ा अपराध हुआ था के अलावा मैं कुछ भी नहीं जान सका पर मुझे लगता है कि तुम उस कालखंड से कनेक्ट हो तो हो सकता है कि तुम्हें सफलता मिल जाए । प्रयास करके देख लो मैं उसका प्रबंध कर दूंगा।"

"ठीक है आप इसका प्रबंध कीजिए मुझे अभी इसी क्षण सब कुछ पता करना है!"

" ठीक है।" उसने कुछ क्षण सोचा फिर सहमति जताई।

उसने सामंता के लिए एक अलग छोटे से ऐसे कमरे में व्यवस्था करवाई जो एकदम शांत था। एक खिड़की बाग की तरफ खुली थी जिससे उसमें रोशनी आ रही थी और ठंडी-ठंडी मध्यम हवा भी।

इस कमरे में उसने दो चटाई बिछाई । एक पर निमांडा खुद बैठा ,दूसरे पर उस को बिठाया । बीच में कुछ रंगो से रंगोली जैसा बनाया। बीच में एक घी का बडा सा जलता हुआ दीपक रखा। फिर उसे ध्यान लगाने को कहा। उसने ध्यान की मुद्रा में खुद को समायोजित किया और फिर निमांडा मंत्र उच्चारण करने लगा। कुछ क्षण बाद वह शांत हो गया।

वह ध्यान की मुद्रा में बैठा था और फिर देखते ही देखते उसकी आत्मा ढाई हजार साल पहले के इस कालखंड में विचरण करने लगी जिसमें से कुछ घंटे पहले ही वह लौटा था। पहले पहल उसे कुछ भी स्पष्ट नज़र नही आ रहा था पर कुछ क्षण बाद उसे सब कुछ स्पष्ट नजर आने लगा ।

****

जंगल में लाशे इधर उधर बिखरी पड़ी पड़ी थी। यह वही युद्ध स्थल था जहां उसके धोखे से किए गए वार ने सब कुछ बदल दिया था। जब गंडक अपने बेटे दंडक की शादी के लिए भील समुदाय में अपने कुछ साथियों और सामान के साथ जा रहा था तब मुण्डक और उसके

साथियों ने उन पर हमला कर दिया था । बहुत भीषण युद्ध हुआ । दोनों पक्ष ही बहादुरी से लड़े थे पर महान योद्धाओं को धोखे से मार डाला गया। पर गंडक और दंडक दोनों महान योद्धाओं की लाशे वहां नहीं थी जबकि अन्य कई और लोगों की लाशे पड़ी थी । सामंता की आत्मा इस समय वहीं पर भ्रमण कर रही थी । चारों ओर देख रही थी और पर जब गंडक और दंडक दोनों की लाशों वहां नहीं देखा तो पता नहीं क्यों वह अंदर तक हिल गया पर उसे सच जानना था की पूर्व जन्म में वह समीरा के रूप में अवतरित हुआ था और गंडक का जिगरी यार था फिर उसने उसके साथ गद्दारी क्यों की क्यों ? वह वहां से नयाना समुदाय की ओर चल पड़ा।

मुंडक और उसके साथी जंगल में भारी रक्तपात मचा कर नायना समुदाय की तरफ बढ गए थे। और कुछ ही देर में वहां अपना खूनी लावा लश्कर लेकर नयाना समुदाय के बड़े से गेट पर आ पहुंचा था । गंडक और दंडक दोनों वीरों की लाशे घोड़े पर लाद कर वहां लाई गई थी और इस समय दरवाजे के बाहर जमीन पर पड़ी हुई थी।

उन शैतानों के भयंकर शोर शराबे की वजह से नयाना समुदाय के लोगों को उनके बारे में पता चल चुका था और उन्होंने अनुमान लगा लिया था कि उन पर हमला होने वाला है । सरदार और उनका बेटा मारे जा चुके हैं यह पता चल चुका था इसीलिए समुदाय के अंदर गंडक के विश्वासी लोग तुरंत एक्शन में आ चुके थे और उसकी वजह से ही किले का मजबूत दरवाजा बंद किया जा चुका था। किले के अंदर सभी को इस बारे में पता चल चुका था कि उन पर मुंडक और उसके आदमी हमला करने के लिए दरवाजे पर आ खड़े हुए हैं। मुंडक और उसके आदमियों के बारे में सबको पता था कि वह कितने खतरनाक है। वह देखने में इंसान लगते थे पर उन्हें इंसान कहना भी इंसान की बेइज्जती करना के बराबर था । वे जानते थे की वे बेरहम शैतान है, जानवर है । उनके जैसे इंसानों को देखते ही कच्चा चबा जाने की हसरत रखते हैं इसीलिए सबके दिल में दहशत भरी हुई थी। और सबसे ज्यादा डर तो यह सोचकर लग रहा था कि उन्हें बचाने वाला उनका बहादुर सरदार अब जीवित नहीं है। उनका सरदार जीवित होता तो उन्हें इतना भयभीत नहीं होना पड़ता क्योंकि वह जानते थे कि उनके सरदार के रहते उन्हें कोई खतरा नहीं था । उन्हें सरदार और उसके बेटे की मौत की हृदय विदारक सूचना कटक के द्वारा प्राप्त हुई।

" हमारे सरदार और उनके बेटे की मौत हो गई । मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा?" गंडक के विश्वासपात्र प्रेसेन ने कटक से घबरा कर कहा।

" हू । इस समय इस भारी आफत से कैसे निपटा जाए यह सोचना जरूरी है!"कटक ने उसकी बात की तरफ ध्यान नहीं दिया और अपनी बात पूरे प्रभाव से कहीं। सच में हालात ऐसे बन पड़े थे की कटक से बहस करना बेकार था पर यह खबर ही नयाना समुदाय के लोगों का मनोबल तोड़ने वाली थी और भयभीत करने वाली थी कि उनका महाबली महायोद्धा सरदार अब इस दुनिया में नहीं है। वह उसी से उम्मीद कर सकते थे और अब उनके सर पर आ पहुंची इस भारी आफत से निपटने के लिए उन्हें ही कुछ करना था। नयाना समुदाय के लोग भी - बहुत बहादुर थे इसमें कतई संदेह नहीं था पर मुंडक और उसके लोगों का जिस प्रकार से नाम कुख्यात था उसकी वजह से यह शब्द है सपने थे । इस समय समुदाय के सभी जिम्मेदार लोग जिनमे निमेशु, प्रशेन, कोडत थे। और अब सारी स्थिति उन सब को ही संभालनी थी ।

अंदर जितने भी सैनिक थे वे सब उसके साथ थे और अंदर ही अंदर भयभीत थे। पर फिर भी लोगों को संभालने में लगे थे इसके साथ ही दरवाजे पर आकर उन्होंने मोर्चा संभाल लिया था

। किले की छत पर भी काफी सैनिक थे जो धनुष और बाण लिए खड़े थे। जब तक मजबूत दरवाजा बंद था तब तक के सुरक्षित थे यह बात उन्हें भी पता थी। इसीलिए दरवाजे की खास सुरक्षा की जा रही थी। लोगों में भगदड़ मची थी उसको भी शांत किया जा रहा था। तीसरा मोर्चा किले की छत पर चारों ओर से निगाह रखें था।

"वे लोग शीघ्र ही दरवाजा तोड़ देंगे और फिर सोचो यहां कितनी तबाही मचेगी?" विप्र प्रशेन के पास आकर बोला।

वह जानता था कि वह सही कह रहा है पर उसकी समझ में भी नहीं आ रहा था कि वह क्या करें इसीलिए उसने पूछा,"तो क्या किया जाए , कैसे उन शैतानों से अपने समुदाय की रक्षा की जाए तुम्हें कुछ विचार आ रहा हो तो बताओ?"

"हमें दरवाजा खोल देना चाहिए!"

" क्या!" वह चौंक गया।

" हां, हम अपनी तरफ से दरवाजा खोलेंगे तो उन्हें अंदाजा नहीं होगा और हम उन पर हमला कर देंगे इससे पहले कि वह हम पर करें।"

"यह तो खुद को आग में झोंकने वाली की बात है!"

"आग में तो वैसे भी झुकना पड़ेगा क्योंकि मौत सर पर ..बिल्कुल सर पर आ खड़ी हुई है। मुण्डक और उसके लोगों को अच्छी तरह जानते हो वे खुद में एक आफत है। उन्हें इंसान नहीं शैतान कहा जाता है । सोचो अगर वे दरवाजा तोड़कर अंदर आए तो क्या हश्र होगा हम सब का?"

प्रशेन सोच में पड़ गया। उस समय उसके पास निमेशू खड़ा था । कटक किले की दीवारों पर सैनिकों के साथ मोर्चाबंदी के लिए तैनात था इसीलिए उसने अपने डरे सहमे लोगों की तरफ देखा । उसकी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें।

"मुझे नहीं लगता कि दरवाजा खोलना चाहिए। जब तक दरवाजा बंद है तब तक हम सुरक्षित है!" आखिर कार उसने निर्णय सुनाया।

" लेकिन कब तक?" विप्र के साथ खड़ा नौखंडा चिल्ला पड़ा।

" पता नहीं।"

" मुझे लगता है दरवाज़ा खोलकर उनसे बात करनी चाहिए। हो सकता है उन्हे कुछ उपहार दे कर शांत कराकर वापस भेजा जा सके। और खतरा टल जाय।

" मुझे त्रिकोटी से बात करनी पड़ेगी।"

" तो करो! लेकिन जल्दी।"

त्रिकोटि भी दूर से उधर ही आता दिखा। वह भी सब की तरह चिंतित और परेशान था क्योंकि उसे भी हकीकत पता चल चुकी थी। वह जब दरवाजे के नजदीक पहुंचा। उसे भी पता चला कि सरदार मर जा चुका है वह और ज्यादा चिंतित हो गया पर इस समय चिंता और दुख करने का वक्त नहीं था। वह जानता था कि अब समुदाय की सुरक्षा की जिम्मेदारी वहां के जिम्मेदार लोगों पर आन पड़ी है।

प्रेशुन ने उससे बात की। त्रिकुटी के भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए पर इतना तो उसे पता था कि जब तक दरवाजा बंद है तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता लेकिन दरवाजा टूटा तो फिर उनसे दुश्मनों को रोकना संभव नहीं होगा वह भी बिना सरदार के।

" तो क्या किया जाय?" निमेषु ने सोच विचार कर रहे त्रिकोटी से पुछा।

तब तक बहार शैतानों ने एक बड़े से पेड़ को उखाड़ कर दरवाजे पर जोर दार प्रहार करने लगे।

ऊपर खडे कटक ने तुंरत सैनिकों को आक्रमण करने का आदेश दे दिया। इस पर शैतान पेड़ उखाड़ कर साथ लाए थे उन्ही को सैनिकों के उपर फेकने लगे। दूसरी तरफ दरवाज़ा तोड़ा जा रहा था।

" हमे शीघ्र ही कोई निर्णय लेना पड़ेगा? "बाहर से भी काफी हो हल्ला होने लगा था और दरवाजे पर लगातार चोट की जा रही थी। दरवाज़ा बुरी तरह हिला रहा था,यही देखकर प्रशेनु , त्रिकोटी और निमेशु पर एक नजर डालते हुए विप्र बोला। हालांकि वह केवल चिंतित होने का नाटक कर रहा था।

" दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा। " प्रेषणु ने पूरी दृढ़ता से कहा।

" तो फिर सब मरेंगे! "विप्र बनावटी गुस्से में बोला।

"जो होगा देखा जाएगा । मरना ही है तो लड़ कर मरेंगे।" प्रेषणु आत्मविश्वास से भरा हुआ जान पड़ता था पर अंदर से वह भी भयभीत था लेकिन खुद को साहसी दिखाने की लगातार चेष्टा कर रहा था । विप्र भी यह बात जानता था इसलिए वह मन ही मन खुश था। वह जानता था किसी भी क्षण दरवाजा टूट जाएगा और फिर जो कयामत आएगी वह सदियों तक याद रखी जाएगी।

बाहर किले की दीवार पर मौजूद सैनिक शैतानों को रोक नहीं पाए और वह मजबूत दरवाजा शीघ्र ही टूटा । अंदर दरवाजा टूटकर गिरते ही भयंकर अफरा तफरी मच गई। वहां जमा सारे लोग इधर-उधर जान बचाने के लिए भागे पर दरवाजे पर सैनिक और गंडक के विश्वाश पात्र प्रेषणु, निमेशु,त्रिकोणी खडे रहे। खडे तो कटक , विप्र और नौ खंड भी थे। पर उनके भाव दूसरे थे।

दरवाजा टूटते ही जैसे ही शैतान अंदर दाखिल हुए भयंकर लड़ाई शुरू हो गई । अन्दर सैनिकों के पास तलवार , धनुष ,बाण थे शैतानों के पास उखड़े हुए पेड़ थे , भाले थे । शैतान इंसानों पर भारी पड़ रहे थे।

समीरा को उन शैतानों के साथ अंदर देखकर त्रिकोटी और निमेष वगैरह तीनों ही परेशान नजर आने लगे । उनके समझ में नहीं आया कि आखिर समीरा उनके साथ क्यों है और अपने ही साथियों पर क्यों हमला कर रहा है पर तब तो उन्हें देखकर और ज्यादा घोर आश्चर्य हुआ जब कटक और नौखंडा , विप्र को भी अपने सैनिकों पर तलवार चलाते हुए देखा । उन्हें समझते देर ना लगी की वे सब गद्दार हो चुके हैं । पर वजह क्या थी.. यह सोचने का समय बिलकुल भी नहीं था। त्रिकोणी और गंडक के सभी विश्वास पात्र गुस्से में पागल हो गए। और पूरी शिद्दत से तरह लड़ने लगे। पर एक ही झटके में विप्र ने निमेशू की गर्दन तलवार से उड़ा दी। त्रिकोटी के हाथ पैर फूल गए । एक तो वह वृद्ध था दूसरे तलवारबाजी छोड़ें उसे काफी दिन हो गए थे। विप्र ने उसकी गर्दन पर तलवार रख दी और कहा ," अपने लोगों से कहो

आत्मसमपर्ण कर दे। नहीं तो सब मारे जाएंगे । सभी से घुटनों पर बैठ जाए बोलो।"

लोगों में अफरा तफरी मची थी । शैतान खून की होली खेल रहे थे । समुदाय के सैकड़ो लोग मारे जा चुके थे। बाकी बचे लोग इधर-उधर छिपे हुए खड़े थे और जो छिपे नही खड़े थे वह जान बचाने के लिए दर-दर भाग रहे थे । काफी चीख पुकार मची थी । ऐसा लगता था जैसे मौत अट्टाहस कर रही हो और कह रही हो सब कुछ विनाश कर देगी।

त्रिकोणी को भी लगा विप्र की बात सही है मगर उसकी बात नहीं मानी तो सब मारे जाएंगे इसीलिए उसने उसकी बात स्वीकार की और सैनिकों को आदेश दिया घुटने पर बैठ जाए । साथ ही साथ वहां अपने जितने सारे लोग थे उनसे भी वही बात कही। विप्र ने गज्जू के माध्यम से यह बात मुण्डक की बहन को बताई तो बहन के आदेश पर शैतान भी रुक गए।

कुछ ही देर में आलम यह था कि एक ऊंचे स्थान पर मुंडक, उसकी बहन, गज्जू, विप्र समीरा, कटक आदि सब खड़े थे। उनके चेहरे पर विजई मुस्कान थी।

नीचे मैदान में सैनिक और वहां के सभी बूढ़े , बच्चे, महिलाएं सब घुटनों पर बैठे थे । उन सब के सर झुके हुए थे। पंक्ति में सबसे आगे घुटनों पर सर झुकाए बैठा था त्रिकोटी।

उसके आस पास खूब लाशे बिखरी पड़ी थी। पूरी तरह दहशत का माहौल था।

तभी भीड़ से सुगंडा निकल कर आई और समीरा के पास आ खड़ी हुई। वह उसकी तरफ़ देख कर अदा से मुस्कराई और बोली,"तुमने मेरे प्यार को हासिल करने के लिए काफी तगड़ी योजना तैयार की। अपनी योजना में विप्र, कटक, नौखंड़ा आदि का तुमने अच्छे से इस्तेमाल किया। तुमने जब मेरा प्यार पाने की मुझसे बात की थी तब मैंने तुमसे यही शर्त रखी थी कि तुम्हें यहां का सरदार बनना है । गंडक से मेरा बदला लेना है और तुमने मुझसे वादा भी किया था। मैने भी तुम्हारी शर्त मान ली थी। हालांकि मुझे विश्वास नहीं था तुम ऐसा कर पाओगे पर तुमने कर दिखाया और अब तुम यहां के सरदार बनोगे और मैं तुम्हारी पत्नी हम दोनों ही शक्तिशाली होकर नयाना समुदाय पर राज करेंगे।"

समीरा भी मुस्कराया।

" मुंडक और उसके आदमियों से कहो शर्त के अनुसार वे सारी वस्तुएं लेकर यहां से शीघ्र ही चले जाए। हमारी यही बात तय हुई थी । उन्होंने हमारा साथ निभाया इसके लिए उन्हें शुक्रिया बोल देना।" सुगंडा के इशारे पर समीरा ने विप्र से कहा तो विप्र ने यही बात गज्जू से कहीं और गज्जू ने मुण्डक की बहन से बात की । उसकी बहन ने मुण्डक को वह बात बताई फिर जवाब में दोनो जोर से हंसे। फिर मुंडक ने कुछ कहा जिससे उसकी बहन ने गज्जू को बताया गज्जू के चेहरे पर चिंता साफ दिखाई देने लगी।

"क्या बात है खुल कर बताओ?" समीरा को भी कुछ गड़बड़ लगा तो उसने तुरंत गज्जू से पुछा।

"मुंडक का कहना है कि वे लोग यहां से नहीं जा रहे अब यहां पर वह हमेशा हमेशा के लिए रहेंगे और उनका ही राज्य चलेगा!"

" क्या?"

यह बात सुनकर समीरा और उसके साथी आश्चर्यचकित हो गए। साथ ही साथ गुस्से से भर

गए । वह तुंरत गुस्से में आग बबूला होकर बोला,"लेकिन हमारे बीच ऐसा कोई समझौता नहीं हुआ था, जो तय हुआ था उसी पर अडिग रहो हो । तुम हमारे साथ धोखा कर रहे हों।"

गज्जू ने डरते हुए समीरा की बात आगे मुण्डक की वहन से उसकी भाषा में कही । मुंडक के चेहरे पर भयानक क्रोध दिखने लगा जब उसने गुस्से में ही कुछ कहा और बहन ने गज्जू से कहा।

"मुण्डक इरादा बदलने वाला नहीं है । उसका कहना है कि धोखे बाजो के साथ धोखा करने में कोई बुराई नहीं । उसकी बात नही मानी तो पछताओगे ।"

मुंडक के बदले इस इरादे ने उन सबके मन में खलबली पैदा करती थी। सब कुछ उनके सोच के विपरीत हो रहा था। समीरा और उसके साथी तो सोचते थे की नयाना पर उनका राज हो जायेगा। गंडक और दंडक को ठिकाने पर लगाने के बाद। पर मुंडक की नियत बदल गई थी । वह खुद उस नयाना समुदाय का सरदार बनने की सोच रहा था, बनने वाला था और उसकी इस बात का विरोध करने का साहस किसमें था ? किसी में नहीं ! पर सत्ता हासिल करने के लिए उन्होंने सब कुछ किया था इतनी आसानी से मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे । वे विद्रोह पर उतर आए । विप्र और उसके साथियों ने फिर से तलवार निकाल ली । मुंडक और उसके आदमियों पर वार करने वाले थे समीर उसे रोकना चाहता था पर वह नहीं रोक पाया । परिणाम स्वरुप कुछ ही देर में उन तीनों की लाशें भी भूमि पर पड़ी हुई थी। मुण्डक ने एक ही झटके में तीनों का काम तमाम कर दिया था। सब कुछ इतनी जल्दी, फुर्ती से हुआ था कि देखने वाले हैरत में थे, दहशत में थे।

सुगंडा काफ़ी देर से मुण्डक की तरफ प्यार से देख रही थी। मुण्डक भी मुस्कराया था।

"यहां तो सब कुछ उल्टा पुल्टा हो गया।," अचानक सुगण्डा के तेवर बदले और वह अदा से समीरा से बोली ,"यानि तुम सरदार नहीं बन रहे हो। फिर भी तुमने गंडक से बदला लेने में मेरी मदद की उसके लिए हृदय से आभार पर मेरा एक और सपना था सरदार की पत्नी बनने का और वह तुम नहीं बन रहे इसलिए मुझे माफ करना!"अचानक उसके हाथ में छोटी सी कटार दिखी और इससे पहले की कोई कुछ समझ पाता उसने समीरा की गर्दन पर चला दी । समीर बिना आवाज किए आंखों में हैरत लिए भूमि पर गिर पड़ा ।

वह फिर अदा से इठलाती हुई मुण्डक के पास जा खड़ी हुई। वह शैतान उसे ही घूर रहा था।

"मुझे पता है तुम मुझे चाहते हो तुम्हारी आंखें बता रही है। और मेरा प्रेम तो वैसे भी उसी के लिए है जो मेरे काम आए । मेरे सबसे बड़े शत्रु गंडक को मार कर तुमने पहली शर्त पूरी की, दूसरी सरदार बनकर करने वाले हो इसलिए मेरा प्रेम तुम्हारे लिए है। "

मुंडक उसकी आंखों में कुछ देर देखता रहा फिर उसने उसे पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया।

फिर उसने गज्जू के माध्यम से घुटने पर पर बैठे सभी लोगों के लिए फरमान जारी किया कि आज से वे सब उनके गुलाम है वह उनका सरदार है उसके हिसाब से भी सबको चलना होगा।

त्रिकोटी ने हां गर्दन हिला कर हामी भरी और अपने लोगों से भरवाई। वह जानता था कि इस समय विद्रोह करना सबको मौत के घाट उतरवाना होगा । वह नहीं चाहता था कि नयाना समुदाय के निर्दोष लोग बेमौत मारे जाएं। और समझदारी भी इसी में थी की सब कुछ माना

जाए।

शीघ्र ही यह भी घोषणा की गई की नयाना समुदाय के लोग किले के बाहर खाली पड़े बड़े मैदान में झोपड़ी बनाकर रहेंगे और गुलामो की तरह।

समुदाय के संपन्न लोग, खुशहाली से रहने वाले लोग अब बाहर खुले मैदान में घास फूस की झोपड़िया में रहने के लिए मजबूर थे। राजा गुलाम बनने पर मजबूर थे। जिन्होंने बहादुरी दिखाई थी वे सब वीरगति को प्राप्त हुए थे।

मुण्डक ने खुद को वहां का शिब्रा घोषित किया । खुद को मुंडक शिब्रा बना लिया था । उसने ही बाहर खुले मैदान में अपनी एक बड़ी मूर्ति बनवाई थी और उसके ठीक सामने गंडक और दंडक की मूर्ति बनवाई थी। खुद की पूजा करने का चलन भी उसने ही शुरू किया था।

नयाना समुदाय के काल पुत्र शिब्रा की मूर्ति को उसने तुड़वा दिया था।

और ये सब हुआ था समीरा की गद्दारी की वजह से।

अपने लोगों की बर्बादी,तबाही उसकी आत्मा ने देखी थी। और जानती थी इसके लिए वही जिम्मेदार है।

****

सामंता की बंद आखों से आंसू निकल रहे थे। हालांकी अभी भी वह ध्यान में ही था। सामने बैठा निमांडा चुपचाप बस देख रहा था।

फिर उसने आंखे खोली। आंखे लाल हुई पड़ी थी। लगातार रोने की वजह से। चेहरे पर पश्चाताप के भाव परिक्षिलित हो रहे थे जिन्हे कोई भी समझ सकता था।

"सारी बर्बादी की जड़ सिर्फ और सिर्फ मैं हूं! मैंने जो पाप किया है उसे कोई माफी ,कोई सजा धुल नहीं सकता।" निमांडा उसे लगातार घूर रहा था। उसके चेहरे पर पश्चाताप के भाव देख कर उसके चेहरे के कठोर भाव थोड़े कम हुए तो सामंता तुंरत भावुक स्वर में बोला।

" तुमने आखिर गद्दारी क्यों की थी?" उससे पुछा गया।

" एक ऐसी लडकी के प्रेम को पाने के लिए जो किसी की नहीं हो सकती। उसका प्रेम उसी के लिए था जो नयाना समुदाय का सरदार होता और.. और।"

" और क्या?"

" और गंडक को समाप्त करता।"

" इसीलिए तुमने सरदार गंडक के साथ गद्दारी की जो तुम्हें अपना जिगरी दोस्त भी समझता था!"

उसने जबाब नहीं दिया। उठ खड़ा हुआ। और बोला," मैंने .. मैंने जो किया उसके लिए कोई माफी नहीं । कोई सजा नहीं। मैं अच्छी तरह जानता हूं पर मैं अपने पाप के प्रभाव को कुछ तो कम जरुर करूंगा । मैं गंडक और दंडक को फिर से उनका वही स्थान दिलाऊंगा जिसके वह हकदार हैं और जो मुण्डक जूता खाने का हकदार है उसे मिट्टी में मिला दूंगा । मैं इस बात की शपथ लेता हूं।"

निमांडा उसकी मनोदशा से अच्छी तरह परिचित था। वह जानता था कि सामंता ने अपने पूर्व जन्म में जो पाप कर्म किया है उसके लिए वह बेहद शर्मिंदा है और पश्चाताप भी कर रहा है और उसने जो भी कहा है उसके लिए पूर्ण रूप से निश्चय भी जाना पड़ता है पर वह ढाई हजार साल पुराने इतिहास को बदलने की बात कर रहा था। इतिहास हजारों साल मे बदलता हैं तो क्या सच में नयाना समुदय का इतिहास बदलने वाला है। पर यह बहुत दुष्कर कार्य था। वह जानता था। एक अकेले इन्सान के लिए तो असंभव है। उसके लिए सबसे बडी चुनौती तो इसी बात की थी कि लोग जो ढाई हजार साल से मानते आ रहे हैं भले ही ढाई हजार साल पहले वह चीज उन्हें जबरदस्ती ताकत के बल पर उनके दिमाग में प्रविष्ट कराई गई है। पर झूठी बातें सच और दृढ़ हो चुकी हो तो उन्हे तोड़ना पर्वत तोड़ने के बराबर होता है। फिर जब जिस किसी को भी अपना इतिहास नहीं पता वह जो देखते हैं , सुनते हैं वही सही मानते है। सबसे बड़ी बात मुंडक समुदाय के लोग जो हजारों साल से सत्ता पर काबिज है क्या वह इतनी आसानी से सच को स्वीकार कर लेंगे या किसी को स्वीकार करने देगे। कभी नहीं। वह कभी स्वीकार नहीं करेंगे। सामंता के लिए आगे की परिस्थितिया काफी विकेट होने वाली थी । वह एक अकेला ऐसा योद्धा बनने जा रहा था जो न सिर्फ सत्ता पर काबिज लोगों के खिलाफ बिल्कुल भी फूंकने वाला था बल्कि वहां की लाखों की जनता की सोच के खिलाफ भी लड़ाई लड़ने वाला था। बात सिर्फ अगर सत्ता पर काबिज लोगों से लड़ाई की होती तो एक बार माना भी जा सकता था वह कामयाब हो सकता है पर लड़ाई सत्ता पर काबिज एक तानाशाह और जनता की सोच बदलना दोनों से थी । ऐसे में उसकी जीत दूर-दूर तक नहीं दिखाई देती थी । निमांडा काफ़ी देर तक इस बारे में सोचता रहा।

"तुमने जो रास्ता चुना है वह कांटों से भरा हुआ है और बेहद मुश्किल है.. कैसे करोगे अपनी शपथ पूरी?"आखिरकार उसने सारी बातों को ध्यान में रखते हुए सामंता से पूछ ही लिया।

" मुझे नहीं पता.. मैं कैसे क्या करूंगा।" सामंता उलझन में दिखा पर चेहरे पर फैले दृढ़ता के भाव बता रहे थे की कुछ भी हो जाए वह अपनी शपथ पूरी करेगा। वह पीछे नहीं हटने वाला।

"मेरे लायक कभी कोई सेवा हो तो जरूर बताना मैं भी नयाना समुदाय का हूं अपने समुदाय के खोए हुए सम्मान को वापस पाने के लिए जान भी दे सकता हूं!"

सामंता दरवाज़े की तरफ बढ़ रहा था ने पलट कर है उसकी ओर देखा। उसका आभार व्यक्त किया।

"कितने वर्षों से नयाना समुदाय है जिसे यहां राज करना चाहिए था वह गुलामी की जिंदगी जी रहा है । पता नहीं था तो और बात थी लेकिन अब सच्चाई पता चल चुकी है तो एक अपने समुदाय का जिम्मेदार नागरिक होने के नाते मेरा भी कुछ दायित्व बनता है।"

उसने कुछ पल सोच हां मैं गर्दन हिलाई और फिर दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

*****

सामंता निमाड़ा के यहां से अपनी मोटरसाइकिल से सीधा उस स्थान पर पहुंचा जहां पर मुंडक की मूर्ति और उसके सामने गंडक और दंडक की मूर्तियां बनी हुई थी बड़े से पक्के चबूतरे पर।

उसने अपनी बाइक लाल मिट्टी वाले उस स्थान पर मूर्तियों से कुछ दूर पहले ही खड़ी की। वहां पर उस समय कोई नहीं था । चारों तरफ सुनसान सन्नाटा पसरा था। हल्की-हल्की हवा जरूर

चल रही थी जिससे उसके बड़े लंबे बाल उड़ते हुए प्रतीत हो रहे थे।

बाइक खड़ी करके वह लंबे-लंबे डग भर के उन मूर्तियों के सामने जा पहुंचा। आज पहली बार गंडक और दंडक की मूर्तियों के सामने पहुंचकर उसने उन्हें प्यार से देखा। उसके जहन में फिर से ढाई हजार साल पहले घटी सारी घटनाएं जो उसने कुछ प्रत्यक्ष और कुछ ध्यान लगाकर देखी थी सब एक-एक करके उसके मस्तिष्क में चलचित्र की भांति चलने लगी। खासकर उसके दिमाग में वे घटनाएं चल रही थी जब युद्ध में गंडक और दंडक की मौत हुई थी। बाद में नयाना समुदाय के लोगों को गुलाम बनाया गया था। दोनों मूर्तियों की तरफ लज्जित भाव से देखते हुए अचानक उसकी आंखों से फिर से आंसू बहने लगे और वह फूट-फूट कर रोने लगा । साथ ही गंडक और दंडक के पैरों पर अपने सर को रख दिया। न जाने कितनी देर उनके पैरों में सर रखकर वह फूट-फूट कर रोता रहा।

"मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी जो मैंने एक लड़की के प्रेम को पाने की खातिर अपने जिगरी दोस्त को और बेटे सामान उसके पुत्र की बेरहमी से हत्या हो जाने दी और हत्या में खुद भी शामिल था। अपने सैकड़ों निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारने में शैतान की मदद की। मुझसे ढाई हजार साल पहले जघन्य अपराध हुआ था, महा पाप हुआ था । पर मैं माफी नहीं मांगूंगा क्योंकि उस अपराध के लिए कोई माफी नहीं है। ना ही हो सकती है। लेकिन मैं आप दोनों के चरणों की सौगंध खाकर कहता हूं ढाई हजार साल पहले मेरी वजह से जो नयाना समुदाय गुलाम बना था उसे फिर से विकसित और सम्मानित जीवन जीने का मौका दूंगा। आप दोनों जिस सम्मान के हकदार है वह सम्मान दिलवाऊंगा और तुझे,"उसने सामने बनी मुंडक की विशाल मूर्ति के सामने देखकर बड़े ही क्रोध पूर्ण स्वर में उठकर कहा,"तेरी असलियत सबके सामने लाऊंगा । तू शैतान था ,शैतान है । सबको बताऊंगा । तुझे जो सम्मान हासिल है उसको मिट्टी में मिला दूंगा । मैं इस बात की शपथ लेता हूं और इस शपथ को पूरा करने में जब तक मेरे शरीर में खून की एक बूंद रहेगी मैं शपथ को पूरा करने में लगा रहूंगा।

अचानक उसने गंडक और दंडक के गले से जूतों की माला उतार कर मुण्डक के गले में डाल दी और उसके गले में पड़ी फूलों की मालाएं गंडक और दंडक के गले में डाल दी।

******

कालपुत्र

वह एक सुंदर सी टीवीएस की नई मोटरसाइकिल थी जो शायद अभी कुछ हफ्तों पहले ही खरीदी गई थी और उस मोटरसाइकिल पर दो लोग सवार थे । दोनों ही पुलिस के अफसर जान पड़ते थे। किसी लड़ाई झगड़े के मामले को निपटा कर दोनों वापस थाने के लिए लौट रहे थे। इस समय रात के 10:00 बज रहे थे। वे जिस सड़क पर होकर थाने जा रहे थे वह सड़क जंगल के रास्ते से होकर गुजरती थी और इस समय वीरान और सुनसान पड़ी थी। मोटरसाइकिल की आवाज ने ही वहां पसरे पूर्ण रूप से पिन ड्रॉप साइलेंट, सन्नाटे को खत्म किया था और अब फिजा में मोटरसाइकिल की आवाज गूंज रही थी।

"आज तो बढ़िया माल हाथ लगा। हम दोनों को काफी इनकम हो गई। थाने चलकर एक अंग्रेजी की बोतल मंगवाएंगे और साथ में चिकन फिर जमकर लुफ्त उठाएंगे।"आगे बाइक चला रहा सीनियर अफसर बड़े गर्व से मुस्कुराते हुए अपने पीछे बैठे जूनियर से बिना गर्दन

पीछे किए बोला।

"बिल्कुल सर ! मैं भी यही सोच रहा था। वैसे सर अगर यहां के नयाना समुदाय के लोग जो की हम लोगों के लिए अच्छा बिजनेस साबित होते हैं । अगर अच्छे ढंग से पढ़ लिख गए शिक्षित हो गए जैसा कि वह फरार द्विज उनके लिए अच्छी शिक्षा दीक्षा की कि अक्सर मांग करता रहता था अगर उसकी यह मांग मान ली जाती तो हम लोगों का काम तो चौपट हो जाता है ना सर ?"

"हां एकदम सही बोला तू! हम जैसे लोगों का ऊपरी कमाई तो एकदम ठप्प हो जाएगा क्योंकि लोग जब शिक्षित हो जाएगा तो समझदार बन जाएगा। दिमाग से काम लेगा। हमारे पास कोई केस ही नहीं आएगा । कुल मिलाकर हमारी ऊपरी आमदनी खत्म । पीना पिलाना, खाना पीना सब साला बंद हो जाएगा । अच्छा रहा द्विज साल यहां से गायब हो गया। मिल गया तो मै तो उसे देखते ही ठोक दूंगा। "

"और क्या। मुझे तो उससे बड़ी टेंशन होती थी। वह जब भी कभी मिलता था तो हमेशा अकड़ के ही बात करता था और जब देखो तब यही बात करता था कि हमारे समुदाय को शिक्षा सही से नहीं दी जा रही , उन्हें बराबरी का दर्जा नहीं दिया जा रहा उनके साथ घोर अन्याय हो रहा जबकि भूल जाता था कि हम लोग मुंडक शिब्रा के समुदाय से आते हैं और नयाना समुदाय के लोगों की पूरी जिम्मेदारी है कि हम लोगों के अंडर काम करें, हमारा ख्याल रखें क्योंकि मुंडक शिब्रा ने उसके समुदाय पर कितना बड़ा एहसान किया था जिसका कर्ज वह कभी नहीं चुका सकते। पर द्विज जैसे कुछ मुट्ठी भर पागल लोग ऐसी बातें नहीं समझते और सबके लिए समस्या खड़ी कर देते है। साले अहसान फरामोश!"

"तुमने सही कहा। यह द्विज की वजह से ही उस इलाके में वह घटना घटी थी जिसमें पानी पीने की वजह से कई लोगों की मौत हो गई थी और इसके बाद उसी के समुदाय के सारे लोगों ने उसके घर को फूंक दिया था । उसके घर में जो भी शख्स मिला था उसे खत्म कर दिया था। खत्म तो भी उसको भी कर देते पर वह साला वक्त पर भाग गया और अभी भी ढूंढे नहीं मिल रहा । अगर किसी दिन ढूंढे मिल गया ना तो मैं ही उसका एनकाउंटर करूंगा तुम देखना ! साला बहुत न्याय न्याय की बातें करता है।"

"आपकी बात बिलकुल दुरुस्त है सर, वैसे एक बात पूछनी थी सर आपसे कि उस मोहल्ले में आखिर पानी पीने से बच्चे कैसे मर गए हालांकि कहा यह जा रहा था कि द्विज ने मुंडक शिब्रा की बुराई की थी। उसके ही परिणाम स्वरुप वह घटना घटित हुई थी .. क्या सच में मुण्डक शिब्रा का कहर टूटा था?"

"नहीं भाई, तुम्हें तो पता है मुंडक शिब्रा ढाई हजार साल पहले थे । पर नयाना समुदाय के जाहिलो से अपने मुण्डक समाज को कोई तकलीफ ना हो यानी हम सबको और हमारा समुदाय के लोग सत्ता में बने रहे हैं इसके लिए जनता को बेवकूफ तो बनाना ही पड़ता है!"

"यानी वह पानी से हुई मौत वाली घटना एक साजिश थी?"

"और क्या, वह एक साजिश ही थी जो द्विज के खिलाफ लोगों को भड़काने के लिए रची गई थी ताकि लोगों में मुण्डक शिब्रा का प्रभाव बना रहे और हमारे समुदाय का प्रभाव भी हमेशा के लिए बना रहे । अगर ऐसा ना करें तो दूसरे समुदाय के लोग विद्रोही हो सकते हैं। वे सत्ता में अपना हक मांग सकते हैं इसीलिए वह साजिश रची गई और रचनी पड़ती है हालांकि

साजिश जिस ढंग से रची गई थी उसका परिणाम भी अच्छा आया। बस वह साला द्विज किसी प्रकार बच गया वह भी उसमें मारा जाता तो नयाना समुदाय से कोई भी आगे उस प्रकार की बात या अपने हक की मांग उठने वाला कोई नहीं है!"

"वह अगर आपको मिले तो उससे बिना बात किए आप उसको ठोक देना सर!"

"तुम्हें क्या लगता है मैं चूक जाऊंगा। कभी नहीं, मैं तो उस कुत्ते को जाने कब से ढूंढ रहा हूं जिस दिन वह मिल गया समझो उसका वह आखरी दिन होगा!"

तभी पास की झाड़ियां में सरसराहट हुई और फिर वहा से दो तीर बारी-बारी से निकले जो मोटरसाइकिल पर सवार दोनों पुलिस अफसर के सीने में समा गए। उन्हें जरा भी इल्म भी नहीं हुआ की आखिर अचानक क्या हुआ। अचानक हुए इस खतरनाक हमले की वजह से दोनों ही आश्चर्यचकित थे और इससे पहले कुछ समझ पाते उनकी मोटरसाइकिल सड़क पर लहराई और फिर धम्म से सड़क पर लुढ़क कर लुढ़कती हुई चली गई साथ ही साथ उनके जिस्म से निकलने वाले खून से भी सड़क रंगदार होने लगी।

तीर बेहद घातक थे क्योंकि उन दोनों की मौत पलक झपकते हो गई।

फिर झाड़ियां में से कोई बाहर निकला जिसके हाथों में धनुष और बाण थे, उसके साथ में एक काले रंग का बेहतरीन घोड़ा था जिसकी लगाम उसने दूसरे हाथ में थाम रखी थी। उसने अपने पूरे जिस्म को काले लबादा से ढक रखा था । पैरों में उसने स्पोर्ट के शूज पहन रखे थे।

वह झाड़ियो से निकलकर लंबे-लंबे डग भरते हुए दोनों के पास पहुंचा।

दोनो के जिस्म से तीर निकाले और उनके ऊपरी वस्त्र फाड़े और उन दोनों के सीने पर तीर से कुछ लिखा । जब हटा तो लिखा हुआ स्पष्ट दिखा।

" कालपुत्र ।"

कुछ पल उन दोनों को वहीं खड़े घूरता रहा और फिर अपने घोड़े पर सवार होकर जिस दिशा में आया था इस दिशा में चला गया । जंगल में जाकर वह कहीं विलुप्त हो गया ऐसा जान पडा।

****

मुण्डक शिब्रा के छोटे-छोटे मुकुट (मंदिर) देश में कई जगह बने हुए थे जिसमें उसकी छोटी-छोटी मूर्तियां लगी हुई थी और वहां पर एक मुण्डक समुदाय का ही व्यक्ति निश्चित था जो उसकी पूजा पाठ किया करता था।

एक सुंदर से बगीचे में मुंडक शिब्रा का छोटा सा मुकुट बना हुआ था । शाम तक वहां पर मुंडक शिब्रा की कथा चली थी और रात होने से पहले सभी लोग वहां से जा चुके थे। इस समय रात का सन्नाटा पसर चुका था । चारू ,वहां रहने वाला व्यक्ति जिसने काले कपड़े पहन रखे थे ,सर पर जिसके एक भी बाल नहीं था । कह सकते हैं कि वह टकला था । लेकिन काफी हट्टा कट्टा व्यक्ति था ।

उसने वहां के सारे काम निपटा कर मुकुट में ताला डाला था। ताला डालने के पश्चात घर की ओर रवाना होने के लिए उसने अपनी मोटरसाइकिल जो की पास में ही खड़ी थी पर बैठकर स्टार्ट की और घर जाने के लिए उस ईंटों के बने रास्ते से जो की बाग से होकर मुख्य सड़क को ओर जाता था पर डाल दिया।। उसके साथ एक और कर्मचारी काम करता था । उसके

जाने के बाद रात में उसकी ही ड्यूटी वहां पर थी । मुकुट के पास कुछ दूरी पर ही उसका एक छोटा सा झोपड़ी नुमा रहने का स्थान बना हुआ था पर फिलहाल वह झोपड़ी में नहीं था बल्कि उस मुकुट के आसपास ही टहल रहा था ।

" साहब, आपने मेरी 3 महीने से तनख्वाह नहीं दी है । अब तो आपकी कथा भी अच्छी तरह चल रही है। आमदनी अच्छी हो रही है, अब तो मेरी तनख्वाह दे दीजिए । मैं गरीब आदमी हूं , कुछ मेरा भी काम चल जाएगा । अभी तक तो लोगों से उधार ले लेकर काम चल रहा हूं पर अब उधार मिलना भी बंद हो गया है।"वह हट्टा कट्टा काले कपड़ों वाला इंसान मोटरसाइकिल पर सवार होकर जाने लगा तो उस कमजोर से मरियल से गरीब इंसान ने जैसे तैसे हिम्मत जुटाकर हांथ जोड़कर कहा।

"तुझे मैंने कहा था कि मुझे चलते वक्त टोक मत कर! तेरे टोकने की वजह से मेरे साथ कुछ अपशगुन हो सकता है । अब मुझे फिर से इस अपशगुन को काटने के लिए मुंडक शिब्रा को कल फिर से एक मुर्गा की बलि देनी होगी, फिर से मेरा खर्चा होगा । मैंने कई बार मना किया पर तू मानता नहीं है! कल मुर्गा का खर्चा भी तू ही देगा।"

मरियल सा दिखने वाला इंसान उसके रौद्र रूप चेहरे को देखकर तुरंत घबरा गया और पीछे होते हुए बोला,"गलती हो गई मुझसे ,बिल्कुल भी ध्यान नहीं रहा ,माफ कीजिए!"

"तुझे माफ कर देने से क्या मेरा अपशगुन टल जाएगा! अब तो मुझे एक मुर्गा की बलि देने ही होगी और उसका पैसा देगा तू! समझा!"

क्या आफत थी! उसके तो खाने के लाले पड़े थे उपर से मुर्गा का खर्चा!

"मैं..मैं कहां से दूंगा ? मेरे पास तो खाने तक के पैसे नहीं है!" वह घबरा गया।

"वह तू जाने ,मुझे कल सुबह यहां एक मुर्गा चाहिए!"

इतना कहकर मोटरसाइकिल वाले ने मोटर साइकिल आगे बढ़ा दी।

बाग में केवल मुकुट में लाइटिंग की व्यवस्था थी और वहां भी केवल एक बल्ब था । बाकी जगह पूर्ण रूप से अंधेरा था । उस मरियल आदमी के झोपड़ी में भी लाइटिंग की कोई व्यवस्था नहीं थी । ना जरूरत समझी गई थी। वह खुद अपनी लालटेन जलाता था। इसलिए केवल मुकुट के आसपास हल्की लाइट बिखरी हुई थी। बाकी बाग में अंधेरा पसरा हुआ था। उस मोटरसाइकिल वाले शख्स का निजी बाग था । उसने खुद अपने पैसों से ही मुकुट बनवाया था और रात में उसकी देख रेख के लिए उस व्यक्ति को अपने खर्चे पर वहां रखा हुआ था और वो गरीब नयाना समुदाय से ताल्लुक रखता था। यह अलग बात थी कि खर्चा टाइम पर कभी दिया हो ऐसा वाकया कभी नहीं घटा।

मोटरसाइकिल मध्यम गति से आगे बढ़ती जा रही थी । अभी वह बाग के अंतिम छोर पर ही पहुचा था जहां से बाग की सीमा खत्म होने वाली थी और एक चौड़ा मैदान शुरु होने वाला था। तभी कुछ दूरी पर बाग की आखिरी सीमा पर बनी ऊंची मेड पर कोई खड़ा दिखाई दिया। बाइक की रोशनी में उसने देखा कि एक काला लबादा धारी कोई शख्स उसकी तरफ मुंह किए हुए खड़ा है और उसके हाथ में धनुष बाण भी था । वह समझ नहीं सका उसका इरादा क्या है पर जैसे ही नजदीक पहुंचा तो उसका इरादा तुरंत भांप गया क्योंकि धनुष बाण हाथों में लिए शख्स ने तुरंत धनुष उसकी ओर तान दिया। वह तुरंत समझ गया कि अब क्या होने वाला है ।

यह सोचते ही उसके प्राण कांप गए । पर वह कौन है और ऐसा क्यों कर रहा है उससे दुश्मनी क्या है ? वह कुछ नहीं समझ पाया पर भयंकर इरादा भांप गया था कि वह उसका कोई अज्ञात शत्रु था जो उसे मारना चाहता था पर उसे एक बात हैरत में डाली थी कि आज के जमाने में जब गोली बंदूक का जमाना था तो धनुष बाण कौन चलाता है पर क्योंकि उसे समय इतना सब कुछ सोचने का वक्त नहीं था। सो उसने अपनी घबराहट पर काबू किया और उससे कुछ दूरी पर ही अपनी बाईक पर बैठे बैठे ही चिल्ला कर पूछा,"तुम कौन हो और तुमने मेरा रास्ता क्यों रोका है?"

"क्या करोगे जानकर? ," एक ठहरी हुई भारी आवाज़ सुनाई पड़ी," एक तो तुम्हें जानने की जरूरत नहीं है दूसरे जान भी लिया तो कोई फर्क नहीं पड़ने वाला क्योंकि तुम अब ऊपर जाने वाले हो?"सर से लेकर पांव तक काले कपड़ों में लिपटे लबादा धारी ने भारी गुर्राहट भरी आवाज़ मे कहा। अज्ञात शख्स की आवाज काफी भारी भरकम थी जो दहशत पैदा करती थी और इससे पहले उसने वह आवाज कभी नहीं सुनी थी।

"ऊपर जाने वाले हो.. उपर कहां?"वह जानता था फिर भी उसने अपनी घबराहट पर काबू पाते हुए जल्दी से पूछा।

"वहां जहां सभी को जाना है?"

" पर क्यों?"

"तुम जिस मुण्डक को शिब्रा मानते हो वह शिब्रा नहीं है। वह शैतान था। एक ऐसा दुर्दांत शैतान जिसने ढाई हजार साल पहले धोखे से नयाना समुदाय के सरदार उसके बेटे को मारा था बाद में उसने नयाना समुदाय के लोगों को अपना गुलाम बना लिया खुद को मुंडक शिब्रा घोषित कर दिया और वहां के सरदार गंडक और दंडक को शैतान । और तुम भी मुण्डक समाज के वंशज को तुम लोग भी नयाना समुदाय के लोगों पर खूब अत्याचार करते आ रहे हो । खुद को सर्वश्रेष्ठ और शासन करने वाला मानते हो । तुम सब ने नायना लोगों को जानवरों से भी बत्तर जीवन जीने के लिए मजबूर करते हो इसलिए।"

"यह तुम क्या अनाप शनाप बक रहे हो! तुम्हें पता भी है जो तुम कह रहे हो उसके लिए तुम्हें पाप लगेगा । मुण्डक शिब्रा के बारे में उल्टा सीधा बोलने वालों पर मुंडक शिब्रा की गाज गिरती है तुम्हें क्या नहीं पता इस बारे में?" वह दहशत में चीखा।

"मुझे हकीकत पता है । झूठ में तो तुम जी रहे हो और वह भी इसलिए क्योंकि तुम्हें फायदा है और जिससे फायदा हो वह अपने फायदे की हमेशा सोचता है वरना हकीकत यही है की मुण्डक कोई शिब्रा नहीं है । वह शैतान था ,शैतान है और तुम सब उसके वंशज हो। जैसी शैतानी उसमें थी वैसी ही शैतानी अब तुम सब में भी है । मैं तुम में से किसी को नहीं छोड़ने वाला नयाना समुदाय के लोगों को उनका हक दिला कर रहूंगा! अब मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

बाइक सवार हक्का-बक्का बाइक पर ही बैठा हुआ था । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें पर जैसे उसको समझ में आया वह बाइक से तुरंत फुर्ती से उतरा या यह कहें की बाइक को जमीन पर गिरा कर बाग में एक तरफ भाग खडा हुआ पर इस वक्त उस अज्ञात शख्स ने अपने हाथों से तीर भी छोड़ दिया था और इससे पहले की वह काले कपड़े वाला इंसान बाइक छोड़कर इधर-उधर भाग पाता तीर सीधे उसके पीठ से होता हुआ सीन की तरफ

निकल गया और उसे खून से रक्त रंजित करता चला गया। प्राण तो उसके पल भर में निकल गए थे और जमीन पर भरभरा कर गिरने से जरा भी दे नहीं लगी थी।

लबादा धारी स्लो मोशन में चलते हुए आगे बढ़ा। जमीन पर औंधे मुंह पड़े उस शख्स को उसने लात से सीधा किया । उसके उसके पीठ से तीर निकाल लिया । फिर उसके सीने के कपड़े को काफी हद तक उसने फाड़ा और उसके सीने पर उसी तीर से कुछ लिखने लगा। जब उठा और अपने लिखे पर एक नज़र मारी। मरने वाले के सीने पर खून से लिखा था : कालपुत्र

****

वह एक बेहद आलीशान बंगला था। बंगले के शानदार ड्राइंग रूम में दो लोग बैठे थे । दोनों ही पुलिस के बड़े अफसर थे। उनके सामने सुंदर सी मेज रखी थी जिस पर महंगी शराब की दो बोतल रखी थी । कांच के दो गिलास थे और एक बड़ी सी प्लेट में दालमोट ,काजू वगैरा भरे हुए थे। दोनों ही नशे में धुत जान पड़ते थे क्योंकि दो बोतल पहले ही खाली वहां रखी थी और दो भरी हुई थी। भरी हुई बोतलों को अभी-अभी खोला गया था और गिलासों में शराब भरकर उड़ेली गई थी।

एक अफसर ने शराब पीते हुए अपनी नशीली आंखों को अपने साथी पर स्थिर करते हुए पूछा,"अभी तो हमारा आदमी आया नहीं, काफी देर हो गई उसे गए हुए.. सारा मजा किरकिरा हुआ जा रहा है!"

"आ जाएगा तुम परेशान मत हो!"दूसरे ने जिसका वह बांग्ला था उसे तसल्ली बधांते हुए कहा।

"तुम्हारे आदमी अपने काम में सफल हो तो जाएंगे ना?"

"तुम मेरे बंगले पर पहली बार आए हो अगर पहले कभी आए होते तो ऐसी बात नहीं करते! मेरे आदमी कभी असफल नहीं होते!"

" वेरी नाइस।"

दोनों फिर चुपचाप शराब पीने लगे।

लगभग 5 मिनट बाद ड्राइंग रूम का दरवाजा खुला वहां पर दो-तीन लोग प्रकट हुए।

उन्होंने 12 ,13 साल की एक लड़की को पकड़ रखा था जिसके मुंह में कपड़ा ठूसा था। उसके हाथ पीठ की तरफ बंधे हुए थे वह सब उसे वहां एक ग्रामीण इलाके से उठाकर लाए थे।

लडकी उन लोगों से आजाद होने के लिए बुरी तरह छटपटा रही थी पर सफल नहीं हो पा रही थी।

"देखा, मैंने कहा था ना कि मेरे आदमी कभी असफल नहीं होते !," एक पुलिस वाले ने छाती गर्व से चौड़ी कर कहा ,"तुम हमारे यहां पहली बार आए हो तुम्हारी यहां नई पोस्टिंग है और तुम्हारी डिमांड थी कि तुम्हें एक कच्ची कली चाहिए लो मैंने इंतजाम कर दिया!"

"मुझे यकीन तो था पर शायद तुम्हारे आदमी को देर लग रही थी इसलिए मुझे शायद विश्वास नहीं हो रहा था। पर माल येवन क्वालिटी का है।" दुसरा अफसर लडकी को सर से लेकर पांव

तक हवस की नज़र से देखते हुए लार टपकाऊ अंदाज में बोला।

लड़की को वहीं छोड़कर बाकी लोग कमरे से बाहर निकल गए । दूर सोफा पर बैठे दोनों अफसर जो शराब के नशे में गर्द हो चुके थे की आंखों में वासना के लाल लाल डोरे साफ तौर पर देखे जा सकते थे। वासना की उनकी भूख लड़की को देखते ही और बढ़ गई थी।

शीघ्र ही दोनों अपनी जगह से उठे और लड़की के पास जाकर पहुंचे। दोनों ने लड़की को पकड़ कर जमीन से उठाए खड़ा किया ।

" चलो चलो इस कमसिन कली को बेडरूम में ले चलें और खिलता हुआ फूल बना दें।"

बंगले के मालिक अफसर ने कहा फिर दोनों ने लड़की को उठा लिया और उसे खुद से चिपटाए हुए लड़की को बेडरूम में लेकर आ गए।

बेडरूम में उन्होंने लड़की को बंधन मुक्त किया पर इससे पहले कि वह चिल्लाती उन्होंने उसे डांटा और कहा,"तुम बेवकूफ हो क्या, तुम्हें पता नहीं नयाना समुदाय के लोगों की जिम्मेदारी है कि वह मुंडक समुदाय के लोगों की हर ख्वाहिश को पूरी करें!"

लड़की थर थर कांप रही थी और छोड़ देने की गुहार लगा रही थी पर वे दोनों शैतान कहां छोड़ने वाले थे।

इंसान पर हवस और लालच जैसे भाव जब हद से ज्यादा हावी हो तो वह दुनिया का सबसे दुष्ट, भ्रष्ट,खतरनाक जानवर बन जाता है।

उन्होंने कमरे में तकरीबन एक डेढ़ घंटे अपनी वासना की आग बुझाने में लगा दी पर उन दोनों ने अपने शैतान होने के फर्ज को भी पूरा किया। डेढ़ घंटे बाद उनकी हैवानियत से लड़की की डेथ हो गई। पर उन पर कोई फर्क पड़ा । ऐसा समझ में नहीं आया । दोनों ही मजे से हंस रहे थे । डेढ़ घंटे लड़की के साथ बिताए पलों के बारे में सोच सोच कर इंजॉय कर रहे थे , बातें कर रहे थे ।

लड़की की डेड बॉडी बिस्तर पर ही पड़ी थी निर्वस्त्र। पर उन पर कोई फर्क पड़ा हो, डर लगा हो ऐसा बिल्कुल भी नहीं जान पड़ रहा था।

एक ऑफिसर ने बंगले के बाहर आकर अपने आदमियों से कहा,"अंदर लड़की की लाश पड़ी है उसे जाकर ठिकाने लगा दो!"

उसके आदमियों ने उस के आदेश का तुंरत पालन किया। उन्होंने उस लड़की को बेडरूम से जाकर उठाया और बाहर लाकर उस कार में डाला जिसमें डाल कर लाए थे । उनका इरादा फिर आगे कुछ दूरी पर बहती हुई नदी मे लाश को फेकने का था जैसा अक्सर करते थे । कार अंधेरे में खड़ी थी। लाश को ले जाने वाले दो थे । कार के पास पहुंचकर लड़की को कार की डिग्गी में डाला गया फिर दोनों कार की आगे वाली खिड़कियां खोलकर कर अन्दर जा बैठे। एक ने ड्राइविंग सीट संभाली और दूसरा उसकी बगल वाली सीट पर बैठ गया। कार स्टार्ट की गई। कार की हेडलाइट देखकर दरवाजे पर मौजूद गेट कीपर ने दरवाजा पहले से ही खोल रखा था इसलिए कार निर्विघ्न रूप से गेट के बाहर निकल गई ।

इस समय चारों तरफ काफी अंधेरा था । आसमान में घने बादलों की वजह से कुछ बूंदाबांदी

भी होने लगी थी।

नदी वहां से कुछ ही दूरी पर थी जहां पर पहुंचने में उन्हें मुश्किल से 10 मिनट ही लगे होंगे। सड़क पहाड़ी की चोटी पर थी और नदी नीचे तलहटी में बह रही थी । दोनों ने कार खड़ी की । बहार आए । बाहर घुप्प अंधेरा था। डिग्गी खोलकर लड़की की लाश को बाहर निकाला।

"यार एक बात बोलूं, बुरा तो नहीं मानोगे?" लाश डिग्गी से निकलने से पहले ड्राइवर का साथी बोला।

" क्या?"

"तुम्हें नहीं लगता कि हम गलत काम करते हैं। नयाना समुदाय की न जाने कितनी मासूम लड़कियों को हम दोनों ने शैतान अफसर को सौंपा है और उनमें से ज्यादा लड़कियों की मौत हो गई जिन्हे हम दोनों ने ही ठिकाने लगाया इसी नदी में फेंक कर जो बच गई वह डर से अपना मुंह नहीं खोलती । मैं भी यह काम करता हूं पर सच कहूं तो मैं अंदर ही अंदर बहुत घबराता रहता हूं क्योंकि यह गलत काम है!"

"क्या गलत है क्या सही है यह सोचने का वक्त नहीं हमारे पास । चलो, लड़की को बाहर निकालो और नदी में फिकवाओ।"ड्राइवर उसकी बात को बिल्कुल ही इग्नोर करते हुए थोड़े नाराजगी से बोला।

फिर कुछ सवाल पूछे जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। दोनों ने लड़की को कार की डिग्गी से बाहर निकाल लिया। इस समय चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया हुआ था ,हल्की बूंदाबांदी होनी कुछ देर पहले ही शुरु हो गई थी । पहाड़ की चोटी पर वे दोनों लाश को थामे खड़े थे। आसपास घना जंगल भी था। फिर वे दोनो आगे बढ़े। कुछ आगे बढ़कर उन्होंने लाश को तलहटी में बह रही नदी की तरफ उछाल दिया। लाश शीघ्र ही नदी में जब गिरी तो हल्की सी," छपाक" की आवाज हुई।

वे दोनों फिर वहां रुके नहीं। कार में सवार हुए और वापस बंगले में आ गए।

इस समय बंगले के बरामदे में जहां रोशनी जल रही थी वे दोनों अफसर कुर्सियों पर विराजमान थे और दारू का अभी भी दौर चल रहा था। वे दोनों कार खड़ी करके कार से बाहर निकले और लंबे-लंबे डग भरते हुए बरामदे में पहुंचे।

"लाश को ठिकाने लगा आए?"अफसर ने पूछा जिसका जवाब उन्होंने हां में गर्दन हिला कर दिया।

पर तभी अचानक कुछ ऐसा हुआ कि वहां पर उपस्थित हर कोई भय से कांप गया।

मंजर ही ऐसा था कि चौक जाना स्वाभाविक प्रक्रिया थी।

ड्राइवर ने जैसे ही हां में जवाब दिया एक तीर अचानक उसकी गर्दन में आकर आर पार हो गया और गर्दन से फव्वारे के रुप में निकला खून सामने बैठे अफसर के ऊपर गिरा। यह सब कुछ इतनी जल्दी ,अचानक हुआ था कि किसी की कुछ भी समझ में नहीं आया पर फिर भी दोनों अपसर हड़बड़ा कर कुर्सी से उठ बैठे थे।

बरामदे के बाहर बंगले में अभी भी काफी अंधेरा था इसीलिए दिख नहीं पा रहा था कि तीर किधर से आया और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाए एक दूसरा तीर ड्राइवर के साथी

की पीठ से होते हुए छाती की तरफ निकल गया । एक बार फिर से खून का फव्वारा छूटा जो दोनों अफसर के ऊपर आकर गिरा । तीर लगते ही ड्राइवर की तरह वह भी भरभरा कर वहीं जमीन पर ही ढेर हो गया।

दोनों अफसर का नशा हिरन हो गया था । उनके हाथ से गिलास छूटकर फर्श पर जा गिरे थे क्योंकि तभी उन्होंने लॉन में अपनी ओर बढ़ते हुए एक लबादा धारी को देखा था। अफसर के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था इसीलिए वह बेफिक्र थे । उनकी गने भी बेडरूम में रखी हुई थी। नही तो कुछ करने की हालत में होते भी। लड़की के साथ अपनी हवस पूरी करने के वक्त जब उन्होंने कपड़े उतारे थे तभी रिवाल्वर निकाल कर पलंग पर रख दी थी। बाद में कपड़े तो पहन लिए थे पर रिवाल्वर उठाना भूल गए थे और यही उनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई। उनके पास गन होती है तो शायद अपना बचाव कर भी पाते पर अब मुश्किल था। क्योंकि अज्ञात मौत उनके सामने आ खड़ी हुई थी।

" कौन है?"अफसर ने खुद पर कंट्रोल करने का भरसक प्रयास किया और पुछा, फिर भी उसके स्वर में खौफ साफ नजर आ रहा था।

अंधेरे में खड़ा गुमनाम शख्स जो कुछ उनके नजदीक आने पर अपनी जगह स्थिर हो गया था के हाथ में धनुष बाण नजर आ रहे थे। फिर उसने धनुष बाण उन दोनों अफसर की ओर ताने तो वे समझ गए कि अब क्या होने वाला है पर उनकी यह नहीं समझ में आ रहा था कि आखिर उसे कैसे बचा जाए। ऐसे में एक चिल्ला पड़ा,"कोई है यहां.. हमें बचाओ ..इसको पकड़ो!"

"तुम्हें बचाने वाला यहां पर कोई भी नहीं है जो भी यहां पर थे वे ऊपर चले गए हैं!" लबादा धारी की भारी भरकम आवाज उन्हें सुनाई दी तो उनके रहे बचे कसबल भी ढीले पड़ गए । वह जान चुके थे कि अब सच में उन्हें बचाने वाला कोई नहीं है यही सोच कर वे दोनों ने भागने की कोशिश की पर मौत से कोई भाग पाया है .. कोई नहीं!

 भागते हुए आपसरों के पीठ में एक एक तीर विद्युत गति से आकर समा गया था और वह खून से लथपथ जमीन पर गिर पड़े थे और उनके प्राण पखेरू उड़ गए थे।

*****

एक सप्ताह के अंदर कत्ल की यह तीसरी घटना थी।

जिस इलाके में यह तीनों घटनाएं घटी थी उसके थाने में एसपी रेंज का एक बड़ा अफसर बिना बताए सुबह ही आ धमका था और अपने अफसर को अचानक इस तरह आया देख सभी अधिकारी गण सिपाही बुरी तरह घबराए खड़े थे जबकि वह बेहद गुस्से में जान पड़ता था।

"तुम लोग यहां पर क्या कर रहे हो? कत्ल पर कत्ल होते जा रहे हैं और तुम सब लोग यहां हाथ पैर हाथ भर बैठे हो? कौन है वह बेरहम कातिल जो लोगों को कत्ल करने के बाद उनके सीने पर चाकू से गोद कर कालपुत्र लिख देता है! पता किया तुमने ? तुमने तो अभी तक यह भी पता नहीं किया कि मुंडक शिब्रा के गले में जूता का माल किसने पहनाया ? हमारे देश में ऐसा कौन पैदा हो गया जो हमारे मुंडक शिब्रा की इतनी बेइज्जती करने का दुस्साहस करें!"अपने सामने खड़े उसे थाने के मुख्य अधिकारी बिखंडा से रूबरू होकर अफसर जिसका नाम पांडा था ने बेहद गुस्से में बोल रहा था । बिंखड़ा के द्वारा चाय नाश्ता के लिए भी पूछा

गया था पर उसने तुरंत मना कर दिया था। अफसर की बात सही थी। एक हफ्ते में कई कत्ल हुए थे पर कातिल का कुछ पता नहीं चल रहा था शिवाय इसके की वह हर एक मरने वाले के सीने पर उसी के खून से कॉलपुत्र लिखता है । वह ऐसा क्यों करता है । इसके बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी । वह ऐसा क्यों कर रहा है यह नहीं समझ में आ रहा था।

पांडा अपने अधिकारी को बेहद उत्तेजित देखकर शांत खड़ा था।

"बोलो । जवाब दो, आखिर तुमने क्या प्रोग्रेस की है उसके बारे में बताओ मुझे?"

"अभी-अभी तो कुछ भी पता नहीं चला सिवाय इसके की कातिल मुंडक समुदाय के लोगों को ही निशाना बना रहा है अभी तक उसने जितने भी लोगों को मारा है वह सब मुंडक समुदाय से ताल्लुक रखते हैं!"

"यानी कातिल नयाना समुदाय से हो सकता है?"

"जी बिल्कुल सर ! कातिल नयाना समुदाय से ही हो सकता है क्योंकि इसी समुदाय के ही कुछ एक लोगों में मुंडक समुदाय के लोगों के प्रति भयंकर गुस्सा रहता है कुछ दिनों पहले आपने देखा था जब मुण्डक शिब्रा के सामने बलि दी जा रही थी तो द्विज ने कैसे सबके सामने आकर इस चीज का विरोध किया था!"

"तो क्या काल पुत्र द्विज ही हो सकता है?"

"पर वह तो भीड़ के डर से नदी में कूद गया था तब से उसका कुछ पता नहीं। मर खप गया होगा!"

" बचा भी हो सकता है! तुमने उसकी खोज भी जोरो शोरो पर करो। साथ-साथ नयाना समुदाय के अन्य लोगों जिस पर भी तुम्हें शक लगे कड़ाई से पूछताछ करो । मामला और बिगड़ना नहीं चाहिए और किसी का कत्ल नहीं होना चाहिए। कातिल को मैं जल्द से जल्द सलाखों के पीछे देखना चाहता हूं!

" जी सर।"

"मुंडक शिब्रा की मूर्ति के गले में जूते का हार किसने डाला था इस बारे में कुछ पता चला?"बिखंडा ने अपने सामने खड़े भारी डील डौल वाले पंडा की आंखों में आंखें डालते हुए पूछा।

वह कसमाशा कर रह गया। बगले झांकने लगा।

"यानी अभी इसके बारे में भी कुछ पता नहीं चला? देखो यह तुम्हारे पास आखिरी मौका है अगर तुमने सारी सिचुएशन को सही से हैंडल नहीं किया , अपराधियों को जल्द से जल्द नहीं पकड़ा तो तुम अपनी छुट्टी समझो। घर पर बैठना और रात में रात दिन तारे गिरना । मैं किसी और तुमसे ज्यादा काबिल अफसर को यहां पर तैनात करूंगा!"

पंडा की भारी बेज्जती हुई ऐसा जान पड़ा पर बेज्जती का घूंट पीकर वह रह गया । अपने अफसर से कुछ कह नहीं सकता था इसीलिए उसने जल्दी से हा में गर्दन खिलाते हुए कहा,"जी मैं जल्द से जल्द सिचुएशन को हैंडल कर लूंगा। अपराधी को पकड़ लूंगा!"

"यही तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।"

इतना कहकर बिखंडा वहां से रुखसत हो गया।

उसके जाने के बाद पांडा बेहद गुस्से में जान पड़ा। अपना सारा गुस्सा वहां मौजूद अपने जूनियर्स पर उतारा यह कहते हुए,"अफसर को लगता है मैं हाथ पैर हाथ भरे बैठा हूं । मैं यहां पर आकर सो जाता हूं । मैं कोई काम नहीं करता.. तुम सभी किसी काम के नहीं हो ,कोई भी ढंग की इनफॉरमेशन नहीं लाते हो जिससे मैं उस कातिल को और मुंडक शिब्रा के गले में जूते की माला डालने वाले को पकड़ सकूं! अब मुझे ही कुछ स्पेशल करना पड़ेगा तभी कुछ काम बनेगा नहीं तो मेरी नौकरी जाते देर नहीं लगेगी। "

वह काफी एक्टिव जान पड़ रहा था पर हकीकत यह थी कि उसके दिमाग में कोई भी प्लान नहीं था कि वह कातिल को कैसे पकड़ेगा। इसीलिए अपनी लकड़ी की कुर्सी पर जाकर बैठ गया सर पड़कर और कुछ आईडिया सोचने लगा।

"सर मेरे दिमाग में एक प्लान है जिससे हम उस कालपुत्र वाले कातिल तक पहुंच सकते हैं!"वहां तैनात एक सिपाही उसके नजदीक आकर बोला तो उसने सर उठाकर उसकी तरफ देखा और पूछा,"मैं अफसर हूं मेरे दिमाग में कोई प्लान नहीं आ रहा तु एक सिपाही है तेरे दिमाग में प्लान आ रहा है!"

सिपाही सिटपिटिया गया।

"ठीक है। ," फिर यह सोचकर कि उसके दिमाग में कोई प्लान नहीं था वह ढीला पड़ा और बोला," क्या प्लान है? बताओ ,देखे उसमें कितनी दम है?"

"कातिल के मॉडल अप्रेंटिस यानी उसके तोर तारीखों को मैंने वॉच किया है मुझे ऐसा लगता है कि उसके दिल में मरने वालों के प्रति बेहद गुस्सा है!"

"अभी अपने चाहने वालों को कौन मारता है ! जब दिल में गुस्सा होगा तभी कोई मारेगा ना इसमें कौन सी बड़ी बात तूने पता की। यह तो मुझे भी पता है!"

"जी, आपने बिल्कुल ठीक कहा उसके दिल में मरने वालों के प्रति बेहद गुस्सा है और गुस्सा क्यों है इस बारे में फिलहाल किसी को सटीक कुछ नहीं पता। इसके अलावा हमें पता है तो सिर्फ यह की वह मुंडक समुदाय से भयंकर क्रोध करता है मुझे लगता है कि हो सकता है कि मुंडक समुदाय के वे लोग जो अभी तक मारे गए ने उसके खिलाफ कुछ ऐसा किया हो जिससे उसकी जिंदगी नरक बन गई हो इसीलिए उन सबसे नाराज था और इसीलिए उसने उन सबको मार दिया!"

"अच्छा तो अब वह किसी को नहीं मरेगा?"

"यह कह पाना तो मुश्किल है। हो सकता है किसी और ने भी उसके खिलाफ या उसके साथ ज्यादती की हो।"

"और यह कैसे पता चलेगा कि कातिल के साथ किसने किसने ज्यादती की है?"

सिपाही बगले झांकने लगा। फिर कुछ सोच कर बोला,"जो लोग मारे गए हैं उनकी इन्वेस्टिगेशन की जाए तो शायद वह शख्स निकलकर सामने आ सकता है जिसके प्रति उन्होंने अन्याय किया हो और उसी से शायद में पता चले कि उसके साथ और किन-किन लोगों ने अत्याचार किया है तभी हम उस तक पहुंच सकते हैं!"

"बात तो तुम्हारी ठीक है पर मुझे नहीं लगता कि मामला इस तरह से है! तुम्हें याद है मुण्डक शिब्रा के गले में जूता की माला भी किसी ने पहनी थी?"

" जी।"

"तो मुझे पता नहीं क्यों ऐसा लगता है कि मुंडक शिब्रा के गले में पहनाई जूते की माला और होने वाले कत्लों के बीच जरूर कुछ जुड़ा हुआ है। शायद यह दोनों काम ही कातिल कालपुत्र ने ही अंजाम दिए हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि वह पूरे मुंडक समुदाय से दुश्मनी का भाव रखता है जैसे की द्विज रखता था। वह हमेशा मुण्डक समुदाय के खिलाफ ही बोलता था। वह नहीं तो उसके जैसा ही कोई और भी हो सकता है!"

"जी सर बिल्कुल हो सकता है पर अगर ऐसा है तो उस तक पहुंचना और मुश्किल होगा?"

"अभी मेरा सिर्फ यह अनुमान है वैसे तुम्हारा क्या प्लान था उसके बारे में बताओ?"

"मुझे लगता था सर की शेर को पिंजरे में करने के लिए जैसे शिकारी जाल फैलाता है, उसके आगे चारा डालता है जिसके माध्यम से शेर पिंजरे में आसानी से फंस जाता है। हमें भी कुछ ऐसा ही करना चाहिए! हमें नयाना समुदाय के किसी शख्स के साथ अन्याय करना चाहिए ताकि यह बात कालपुत्र तक पहुंचे और वह हम तक आसानी से आ जाए और हमारी चाल में फंस जाए । जितने लोग अभी तक मारे गए हैं मुझे लगता है कि उन्होंने कहीं न कहीं या कभी न कभी नयाना समुदाय के लोगों के प्रति अन्याय किया होगा और इसीलिए उस समुदाय में से कोई व्यक्ति कालपुत्र के रूप में आफत बन कर खड़ा हो गया । वह द्विज भी हो सकता जो नदी में डूबने से बच गया हो और वापस लौट आया है कालपुत्र बनकर।"

पांडा को उसकी बात सही लगी।

"ठीक है। फिलहाल इसी प्लान पर काम करते हैं । है तो खैर अंधेरे में तीर पर इस समय हमारे सामने अंधेरे के अलावा कुछ नहीं है तो अंधेरे में तीर चलाना तो बनता है । क्या पता सही जगह लग जाए तो अफसर की गाज गिरने से बच जाएगा।"

*****

सामंता कई दिनों के बाद अपने गेराज में पहुंचा था। वहां काम करने वाले लड़कों ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया था और पूछा भी था कि इतने दिनों कहां रहा पर उसने कुछ कहा नहीं। जाकर अपने केबिन में बैठ गया था। बाहर उसके लड़के वाहनों को ठीक कर रहे थे इसीलिए ठोका पीटी की हल्की आवाज उसके केबिन में भी पहुंच रही थी पर उसका ध्यान आवाज़ों की तरफ नहीं था। वह अपनी कुर्सी पर पीठ टिखाएं और अपने पैर आगे मेज पर पूरी तरह फैलाएं एकदम ढीला बैठा हुआ था उसके दिमाग में ढाई हजार साल पहले घटी सारी घटनाएं घूम रही थी । ज्यादा सोचते सोचते उसने आंखें बंद कर ली।

पता नहीं कितनी देर इस मुद्रा में बैठा रहा। उसकी आंखें तब खुली जब उसके केबिन का दरवाजा किसी ने खोलकर वहां अंदर कदम रखा।

केबिन में कदम रखने वाला शख्स और कोई नहीं बल्कि उसकी प्रेमिका त्रिवेला थी । उसने बैठने की मुद्रा बदली, पैर मेज से नीचे उतार कर जमीन पर टिका लिए थे और कुर्सी पर सीधा बैठ गया। मेज की दूसरी तरफ पड़ी कुर्सी पर लडकी बैठ गई थी। वह उसे घूरती हुई नाराजगी

भरे स्वर में बोली,"इतने दिनों तुम कहां गायब रहे ..मैं तुम्हें फोन भी ट्राई करती रही पर तुमने फोन भी नहीं उठाया ..आखिर कहां चले गए थे?"

वह चुपचाप बैठा था । उसके मन में मुंडक समुदाय के लिए अथाय नफरत आ चुकी थी। त्रिवेला भी उसी समुदाय से ताल्लुक रखती थी । यही सोच कर उसके दिल में नफरत थी शायद पर वह उसकी प्रेमिका थी । उस पर जान छिड़कती थी। इसीलिए उसने नफरत का इजहार नहीं किया। या कर नहीं पाया।

"अब बोलो भी इतने दिनों से कहा गायब रहे.. मिले भी नहीं और आज जब मिले हो तो गुमसुम बैठे हो.. उदास से.. क्या बात है कुछ तो बोलो?"त्रिवेला उसके सामने कुर्सी पर बैठ गई और उसके चेहरे पर नज़रें चिपकाते हुए शिकायती लहजे में बोली।

" तुम मुझे भूल जाओ।"

" क्या!"

सामंता ने एकदम सपाट लहजे में कहा था। त्रिवेला भौचक रह गई क्योंकि उसे ऐसे जवाब की उम्मीद बिल्कुल नहीं थी। उन दोनों का रिलेशनशिप कई साल पुराना था पर आज उसका प्रेमी अचानक से उसे भूल जाने के लिए कह रहा था ,हैरत में पड़ना स्वाभाविक था।

"क्या कहा तुमने ?मैं तुम्हें भूल जाऊं पर.. क्यों?"

"यही सही रहेगा!"

"अरे पर क्यों ? अचानक ऐसा क्या हो गया.. क्या मेरी तरफ से कोई ऐसी बात हो गई जिससे तुम नाराज हो ? मेरी जानकारी में तो मैंने ऐसा कुछ नहीं किया?"

"मुझे नहीं पता किसकी गलती है पर हमारा अलग होना ही सही रहेगा। तुम मुझे भूल जाओ मैं भी तुम्हें भूलने की पूरी कोशिश करूंगा!"

"क्या हमारे रिलेशन के बारे में हमारे घर वालों को पता चल गया है और उनकी तरफ से ही ऐसी कोई वार्निंग जारी हुई है जिसकी वजह से तुम ऐसा कह रहे हो.. अगर ऐसा है भी तो इसमें डरने की क्या जरूरत है.. फिर तुम तो कहते थे हम दोनों जीवन पर साथ रहेंगे। हमारा प्रेम अगर यहां किसी को कबूल नहीं हुआ तो हम लोग यहां इस देश को छोड़ देंगे और किसी दूसरे देश में जाकर बस जाएंगे। अगर मेरी कोई गलती है तो बताओ!"

"मैं इस बारे में कुछ नहीं बता सकता क्योंकि मैं जो बताऊंगा वह तुम्हें यकीन नहीं होगा! तुम मुझे पागल समझ सकती हो। "

"क्या यकीन नहीं होगा ..पहले बताओ तो?"

वह कुछ नहीं बोला। उसने त्रिवेला से नजरे दूसरी तरफ कर ली। लडकी के दिल पर आघात सा लगा । उसके प्रेमी का मूड कुछ ज्यादा ही बदला और रूखा था कि वह बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। एक तो कई दिनों से उससे मिली नहीं थी पर आज मिली थी तो बेहद खुश थी और उसे नहीं पता था कि उसकी खुशी क्षण भर में काफूर हो जाएगी।

"तुम आखिर इतने दिनों रहे कहां क्योंकि जहां भी रहे तुम्हारा ह्रदय परिवर्तन वही हुआ.. क्या तुम्हें किसी दूसरे से प्रेम हो गया है?" लडकी को शंका होने लगी।

" हा।"

" क्या?"अपने प्रेमी से ऐसा सुनकर त्रिवेला का दिल पूरी तरह टूट गया उसकी आंखों में आंसू मचलने लगे जिसे उसने बहने से बड़ी मुश्किल में रोका और बोली," कौन है वो?"

"वह कोई लड़की नहीं है!"

" लड़का है?"

" नहीं।"

" फिर?"

" नयाना समुदाय है। मुझे अपने समुदाय से प्रेम हो गया।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम क्या कहना चाहते हो । नयाना समुदाय से प्यार होना कोई बड़ी और बुरी बात नहीं है । वह तो तुम पहले से ही करते थे!"त्रिवेला को यह जानकर थोड़ी तसल्ली हुई कि उसके दिल में कोई लड़की नहीं है पर जिस प्रकार से उसने जवाब दिया था उसे वह बिल्कुल भी समझ नहीं पाई।

"पहले मुझे उतना प्रेम नहीं था पर अब बहुत ज्यादा है इतना ज्यादा की मैं अपनी सारी जिंदगी उसके नाम कर चुका हूं। मैं अपने समुदाय की तरक्की और समाज में उन्हें जो सम्मान हासिल होना चाहिए वह दिलाने के लिए मैं प्रतिबद्ध हूं । मैं कसम खा चुका हूं और इसीलिए मेरे इस रास्ते में प्यार व्यार के लिए कोई जगह नहीं है!"

"मैं अभी भी तुम्हारी बात नहीं समझ पा रही हूं और जो समझ रही हूं उस हिसाब से बात करूं तो अपने समुदाय से प्यार करना अच्छी बात है उसकी तरक्की की लिए काम करना अच्छी बात पर ऐसा क्यों कह रहे हो कि इसमें मेरे लिए कोई जगह नहीं। हम दोनों मिलकर भी यह काम कर सकते हैं!"

"तुम्हारा ताल्लुक मुंडक समुदाय से है और मुंडक समुदाय ने आज से नहीं ढाई हजार साल से मेरे समुदाय को गुलाम बना रखा है वह कभी हमारी तरक्की की कभी बात नहीं करेगा...?"

"तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?"

"तुम्हें नहीं लगता ऐसा ? तुमने कभी गौर नहीं किया होगा शायद इसलिए.. कभी गौर करती तो तुम्हें पता चल जाता कि इस देश में मुंडक समुदाय की क्या हैसियत है और नयाना समुदाय की क्या है। एक मालिक है और दूसरा गुलाम ! जब मैं ही नही समझ पाया तो तुम कहा से समझ पाओगी। तुम्हारा तो कोई संबध ही नहीं नयाना समुदाय से।"

"हां, तुम्हारी बात ठीक है लेकिन बाकी किसी को भी इस बात पर एतराज नहीं है । सभी को पता है कि मुण्डक समुदाय मुण्डक शिब्रा के वंशज हैं उन्होंने तुम्हारे समुदाय को गंडक और दंडक शैतानों के अत्याचारों से मुक्त कराया था और इसीलिए नयाना समुदाय के लोग हजारों साल से मुंडक समुदाय को अपना आराध्य मानते हैं.. सर्वश्रेष्ठ मानते!"

"मानने में और होने में फर्क होता है। उन्हें ऐसा ही बताया जाता है ,समझाया जाता है और हजारों साल से यह चल रहा है इसीलिए सबको हकीकत यही लगती है जबकि हकीकत यह नहीं है शैतान गंडक और दंडक नहीं थे बल्कि मुण्डक था!"

"यह तुम क्या बहकी बहकी बातें कर रहे हो ? सबको पता है किताबों में लिखा है कि कौन शैतान था और कौन शिब्रा था!"

"मैंने कहा ना लोगों को जो बातें बताई जाती हैं, समझाई जाती है वही सही लगती है। शुरू-शुरू में वह अजीब लग सकती हैं पर हजारों साल गुजर जाने के बाद वे सच लगने लगती है। ऊपर से जब लोगों को शिक्षित ना किया जाए ठीक ढंग से तब तो वे पूरी तरह से गलत बातों को ही सच मानने लगते हैं और उसी को सच मानकर जीने लगते हैं। यह हर मनुष्य की खूबी या कमी कह सकती हो। ऐसा ही मेरे समुदाय के साथ भी है.. अगर ऐसा नहीं है तो क्या तुम मुझे बता सकती हो कि इस देश में सभी बड़े पदों पर तुम्हारे समुदाय के लोग क्यों हैं ..क्या नयाना समुदाय में से थोड़े भी लोग ऐसे नहीं थे इस काबिल थे जो बड़े पदों पर आ सकते थे लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि उन्हें ऐसा समझाया बुझाया ही गया है जिससे उन्हें लगने लगे कि उनके लिए शिक्षा कोई मायने नहीं रखती वह अ शिक्षित ही बने रहे और मुंडक समुदाय के लोग उन पर शासन करते रहे!"

"तुम तो काफी पढ़े लिखे हो और नयाना समुदाय से ही ताल्लुक रखते हो.. तुम कैसे पढ़ गए।"

"मैं पढ़ लिख कर भी गेराज चल रहा हूं किसी बड़े पद पर नहीं हू। क्योंकि यहां के कानून के हिसाब से हमारे समाज का कोई व्यक्ति भी इसी बड़े पद पर नहीं आ सकता बाकी सिपाही कांस्टेबल बनने की मेरी ख्वाहिश नहीं थी!"

त्रिवेला को जवाब नहीं आया।

"मुझे लगता है तुम्हें किसी ने बहकाया है, तुम्हारे दिमाग में उल्टी सीधी बातें भरी है । तुम भी इस द्विज की तरह बात कर रहे हो।"

"तुमने सही कहा । पहले मैं द्विज को गलत मानता था पर अब मैं मानता हूं कि वह अपनी जगह सही है। अपने ऊपर गुस्सा आता है कि जो बात उसने इतनी जल्दी समझ ली मैं क्यों नहीं समझ पाया.. काश नयाना समुदाय का हर इंसान यह समझ ले तो परिवर्तन बहुत जल्दी हो सकता है । गंडक और दंडक जिन्हे सारा देश शैतान मानता है उन्हें अपना हीरो स्वीकार करे और मुण्डक जो शैतान था , शिब्रा बना लोगों में पूजा जा रहा है उसे मिट्टी में मिला दिया जाए! मैने ऐसा करने की प्रतिज्ञा ली है।"

"मुझे नहीं पता कि तुम यह सब बातें क्यों कर रहे हो ? मैं केवल इतना जानती हूं कि मैं तुम्हें प्यार प्रेम करती हूं और इसलिए तुम्हारी किसी बात का बुरा नहीं मान रही । मैं भी चाहती हूं कि नयाना समुदाय के सभी लोगों को उनके हक मिले। इस मिशन में मैं भी तुम्हारा साथ देने तैयार हूं भले ही अंजाम कुछ भी हो।"

"मैं जानता कि तुम मुझसे प्रेम करती हो इसीलिए ऐसा कह रही हो और मेरा साथ भी दोगी पर मैं तुम्हारा अहित नहीं चाहता । तुम मेरे साथ होगी तुम्हे मुश्किल होगी क्योंकि जिस रास्ते पर मैं जाने वाला हूं वह कांटों से भरा हुआ है। कब क्या हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता और मैं नहीं चाहता कि तुम्हें जरा भी चोट पहुंचे इसलिए मैं कह रहा हूं कि तुम मुझे भूल जाओ। मेरी जिंदगी को एक सार्थक लक्ष्य मिल गया और मैं उसी को पूरा करूंगा!"

"एक बात पूछूं ? ," कुछ रूक कर लडकी ने पूछा,"नयाना समुदाय की तरक्की की बात तो

ठीक है पर तुम मुंडक शिब्रा को उल्टा सीधा क्यों कह रहे हो और गंडक ,दंडक शैतान की तारीफ़ क्यों कर रहे हो?"

"क्योंकि मुझे सच्चाई पता चल गई है!"

" सच्चाई पता चल गई.. क्या..कैसे?"

"तुम्हें यकीन नहीं होगा!"

"तुम्हारी हर बात का मुझे यकीन है बताओ तो सही।"

उसने कुछ क्षण सोचा और फिर टाइम मशीन के द्वारा अपने दोस्त के साथ ढाई हजार साल पहले की उसने जो यात्रा की थी उसके बारे में विस्तार से बता दिया जिसे सुनकर कुछ पल के लिए तो त्रिवेला सन्न बैठी रही । उसके चेहरे के हाव-भाव से लग रहा था कि वह बेहद आश्चर्यचकित है। और उसके चेहरे पर शंका के भी भाव हल्के हल्के दिख रहे थे जिन्हें सामंता ने नोटिस किया और बोला,"मैंने पहले ही कहा था तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होगा।"

"जिस प्रकार की तुमने बातें बताई हैं उस पर विश्वास करना बिल्कुल भी पॉसिबल नहीं है पर मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है बाकी किसी को हो या ना हो।"

कुछ पल केबिन में सन्नाटा पसरा रहा।

"तुमने जो बातें बताई है । वह बड़ी खतरनाक है और तुम्हारा इरादा भी बड़ा खतरनाक है क्योंकि खुद तुम्हारे समुदाय के लोग मुंडक शिब्रा को महान समझते हैं ऐसे में तुम्हारे समुदाय के लोग भी तुम्हारी बात को नहीं सुनेंगे ,फिर तुम जिस प्रतिज्ञा को पूरी करने की बात कर रहे हो वह कैसे पूरी होगी । मुझे तो सोच कर ही डर लग रहा है!"

वह जानता था लड़की उसे चाहती है इसीलिए उसने उसकी बात का कोई विरोध नहीं किया है वरना मुंडक समुदाय से अन्य कोई होता तो उसकी बात का तुरंत बुरा मान जाता और उस पर एक्शन लिया जाता । जमन्ता वह दुसरा शख्स था पर वह उसका दोस्त था। उसी के साथ वह टाइम मशीन से ढाई हज़ार की यात्रा पूरी की थी।

"ढाई हजार साल से इतिहास को छुपाया गया, सच्चाई को दफन किया गया और झूठी बातें गढ़ी गई । वो भी ऐसे की सच लगने लगे। झूठी बातें भी सैकड़ों बार बोली जाय तो हकिकत जान पड़ने लगती हैं। सच लगने लगती है। मैं मानता हूं कि तुमने जो कहा हूं मेरे समुदाय के लोग मेरी बात को नहीं मानेंगे, ये भी काफी हद तक सही है। क्योकि हजारों साल की मजबूत हो चुकी सोच पत्थर का पहाड़ हो जाती है जिसे तोडना कोई हंसी खेल नहीं होता पर मैं हार नहीं मानूंगा । मैंने जो शपथ ली है उसे हर हाल में पूरी करूंगा।"

"तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि ढाई हजार साल पहले विकसित नयाना समुदाय अब गुलाम बन चुका है और उसके जिम्मेदार तुम थे क्योंकि तुमने गंडक अपने जिगरी दोस्त सरदार के साथ धोखेबाजी की थी और शायद तुम अब उसका प्रायश्चित करना चाहते हो?"

"क्या नहीं करना चाहिए ? मैंने जो काम किया है तुम्हें भी पता है कि उसके लिए कोई मांफी नहीं। जिसे प्रायश्चित भी नहीं धुल सकता।"

" फिर तुम इतना खतरनाक कदम क्यों उठाना चाहते हो?"

" मै बस अपने लोगों को उनका खोया हुआ गौरव हासिल करवाना चाहता हूं बस!"

"जानती हूं पर तुमने जो शपथ ली है वह बड़ी खतरनाक और रिस्की है। तुम इस देश में अकेले हो जो यहां की तानाशाही को मिटते देखने की बात कर रहे हो क्योंकि तुम्हारा जो काम है उसका पहला लक्ष्य यहां की तानाशाही को खत्म करना ही है । बिना तानाशाही को खत्म किए कोई फर्क नहीं पड़ने वाला ! एक तरह से कहूं तो तुम अकेले तानाशाह के खिलाफ हो । और ऊपर से तुम्हारे समुदाय के लोग ही तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। उन्हें समझाना और सच्चाई बताना भी तो टेढ़ी खीर है। द्विज ने मामूली सा विरोध किया था और उसके समुदाय के ही लोगों ने ही उसके पूरे घर को खत्म कर दिया । उसकी मां को जिंदा जला दिया। उसने नदी में कूद कर अपनी जान बचाई थी। पता नहीं वह जिंदा भी है या नदी में ही उसकी मौत हो गई। इसीलिए मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है!"त्रिवेला सच में बेहद चिंतित नजर आ रही थी क्योंकि वह जानती थी की उसका प्रेमी इस भयंकर युद्ध में अकेला है और दूसरी तरफ तानाशाह है, उसके अपने समुदाय के वे लोग है जो उसकी सोच के विपरीत है।

"इसीलिए कह रहा हूं तुम मुझे भूल जाओ । मेरी जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं । मैं नहीं चाहता कि मेरी काटो भरी जिंदगी में तुम मेरे साथ रहो और तुम्हें भी कष्ट हो।"

"तुमने ऐसा क्यों सोच लिया कि मुझे तुम्हारे साथ रहने में कष्ट होगा? मैं भले ही मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखती हूं पर मैं ढाई हजार साल पहले के उन शैतानों जैसी नहीं हु । मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं। रास्ता चाहे कितना भी कांटो भरा हो। मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ने वाली और वैसे भी तुम सच के लिए लड़ने वाले हो जहां तक मैंने सुना है सच की कभी हार नहीं होती।"

सामंता ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला पर फिर पता नहीं क्या सोचकर केवल आह भर कर रह गया। एक नजर उस पर डाली और नजरे झुका ली।

"मेरे दिमाग में अभी-अभी एक ख्याल आया जिससे तुम्हारा काम आसान हो सकता है?"अचानक कुछ सोच कर लड़की खुश होते हुए बोली।

" क्या?"

"तुम जिस टाइम मशीन से ढाई हजार साल पहले के कॉल पीरियड में पहुंचे थे मुझे लगता है कि सबके सामने जब तुम यह बात रखोगे तो वह टाइम मशीन तुम्हारे बहुत काम आएगी । दूध का दूध और पानी पानी हो जाएगा हालांकि पहले कोई नहीं मानेगा पर उस टाइम मशीन से तुम कुछ लोगों को वहां भेज सकते हो वह जाकर सच्चाई पता कर सकते हैं!"

सामंता थोड़ा अचरज में पड़ा क्योंकि इतनी छोटी सी बात उसके दिमाग में अभी तक नहीं आई थी। इसीलिए वह खुश होते हुए बोला,"सच में यह बात तो मेरे दिमाग से निकल ही गई थी । यह रास्ता तो काफ़ी सरल है ,तुमने सही कहा टाइम मशीन के जरिए वहां पर कुछ लोगों को भेजा जा सकता है और वह फिर आकर गवाही दे सकते हैं तब तो सबको मानना ही पड़ेगा।"

"तो फिर देर किस बात की है इस बात पर तुरंत ही एक्शन लो!"

" हां बिल्कुल।"

*****

सामंता ने अपने समुदाय के कुछ चुने लोग जिनका प्रभाव उस समाज पर काफी ज्यादा था उन सभी को रिक्वेस्ट करके एक हाल में जिसे उसने बुक किया हुआ था में बुलाया अर्जेंट मीटिंग का हवाला देकर । यह काम उसने त्रिवेला से मिलने के अगले कुछ दिन तक तैयार किया था और तकरीबन नयाना समुदाय के ऐसे 100 प्रभावशाली व्यक्ति जिनकी बात जनता मानती थी को हाल में आमंत्रित किया था ।

जिस तारीख को मीटिंग होनी थी उस दिन वह हाल पूरा भरा हुआ था। लगभग सभी लोग आए थे और यह जानने के बेहद उत्सुक थे कि आखिर उन्हें वहां क्यों बुलाया गया है।

सामंता हाल में ऊंचे स्थान पर खड़ा हुआ था बाकी सब उसके सामने हाल में कुर्सियों पर बैठे हुए थे। वह रह रहकर अपनी घड़ी देख रहा था ,जमन्ता का फोन लगा रहा था पर फोन लग नहीं रहा था। पता नहीं क्यों उसके चेहरे पर काफी बेचैनी दिख रही थी।

तभी कुछ क्षण बाद ही उसका दोस्त जमन्ता हाल के दरवाजे पर नजर आया तो उसकी सारी चिंता दूर हो गई । वह फिर खुश हो गया जबकि उसका दोस्त हाल में उसके पास पड़ी कुर्सी पर आ कर बैठ गया।

फिर सामंता ने लोगों से अपनी बात कहना शुरु किया।

"आप सब लोग बड़ी बेसब्री से सोच रहे होंगे कि आखिर मैंने आप सब व्यक्तियों को यहां क्यों बुलाया है ,ऐसी क्या अर्जेंट मीटिंग थी!"

"हां बिल्कुल ,तुमने बोला था कि हमारे समुदाय के भविष्य को लेकर कोई मीटिंग करने वाले हो । नयाना समुदाय की उन्नति हो सके। वह बेहतर हो सकता है.. तो बताओ तुम क्या बात करना चाहते थे?"एक शख्स ने जो आगे बैठा था कुर्सी पर बैठे ही बैठे अपनी बात कही।

वह जानता था कि वह जो बात करने जा रहा है उसे वहां बैठे लोग तुरंत भडक जाएंगे पर बातों तो करनी ही थी इसीलिए उसने थोड़ी भूमिका बनाते हुए कहा,"पहले आप लोग बताइए की नयाना समुदाय की इस समय जो भी कंडीशन है ,आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक क्या उस स्थिति से आप लोग संतुष्ट हैं?"

हाल में बैठे लगभग सभी लोगो ने उत्तर दिया कि वे संतुष्ट हैं। उसे पहले से ही जवाब का मालूम था कि लोग ऐसा ही कहेंगे क्योंकि ढाई हजार साल से उनके दिमाग को ब्रेनवाश किया गया था । उनकी स्थिति ठीक नहीं थी फिर भी उन्हें लग रहा था कि कोई कमी नहीं है। कुछ संतुष्ट होंगे पर वे शायद बोल नहीं रहे थे।

"मैं संतुष्ट नहीं हूं!" सामने सामंता के नज़दीक कुर्सी पर बैठा निमाड़ा अचानक कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बोला। सब ने पलट कर उसकी ओर देखा सबके यहां भाव ऐसे थे जैसे उसने कुछ गलत कहा हो।

"मैं चाहता हूं हमारा समुदाय के लोग आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में और बेहतर हो। उन्हें शिक्षा का समुचित अवसर मिले और हमारे इस देश के महत्वपूर्ण पदों पर हमारे लोग भी विराजमान होकर देश की उन्नति में सहयोग करें!"

"क्या आप लोग निमांडा जी की इस बात से संतुष्ट हैं.. नयाना समुदाय की आर्थिक सामाजिक

और राजनीतिक स्थिति और बेहतर होनी चाहिए!"

"हमारी स्थिति जैसी भी है ठीक है। आज से ढाई हजार साल पहले नयाना समुदाय पर जब गंडक और दंडक शैतान अत्याचार कर रहे थे तो मुण्डक शिब्रा ने हमारे पूर्वजों को उनसे मुक्त कराया था और उन्हें अच्छा जीवन जीने का मौका दिया था ।हमारे पूर्वज मुंडक और उसके समुदाय के लोगों को अपना आराध्य मानते हैं और आज भी मानते आ रहे हैं । हमें लगता है कि इस देश में जैसा जो चल रहा है वह सही है।"भीड़ में से एक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और बड़े गर्व से बोला तो निमांडा ने तुरंत उसकी बात काट कर कहा,"मुझे नहीं लगता की स्थिति ठीक है! और स्थिति अगर ठीक हो भी तो क्या उसे और बेहतर नहीं करना चाहिए क्या? प्रकृति का नियम भी होता है बदलाव करना.. इसमें बुरा क्या है?"

कुछ पल के लिए हाल में सन्नाटा छा गया।

"बुरा बिल्कुल भी नहीं है पर हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि आखिर इस बातचीत का मतलब क्या है?"आगे बैठे एक और शख्स ने मंच पर मौजूद तीनो को घूरते हुए देखकर कहा। मंच पर सामंता निमांडा और जन्मता बैठे थे।

"मकसद बस एक ही है गुलामी की जिंदगी जी रहे हमारे समाज के हर शख्स को अपने ढंग से अपनी मनमर्जी के हिसाब से जीने का हक देना है।"

"तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि हमारे लोग गुलामी में जी रहे हैं . तुम्हें इतना तो पता ही है की मुंडक शिब्रा और उसके साथियों ने हमारे समुदाय पर कितना बड़ा एहसान किया था तो हम लोगों की भी रिस्पोसबिलिटी बनती है कि उनकी सेवा करें! जैसा हमारे पूर्वज करते आए हैं।"

"अगर मैं यह कहूं कि आप सबको ढाई हजार साल से गलत बातें बताई गई तो?"

हाल में एकदम सन्नाटा पसर गया।

"गलत बातें बताई गई मतलब?"

"मतलब अगर मैं कहूं कि मुण्डक ने नयाना समुदाय के पूर्वजों पर कोई एहसान नहीं किया था बल्कि उसी ने अत्याचार किया था और नयाना समुदाय के रक्षक थे गंडक और दंडक ..तो?"

"तुम इतनी बड़ी बात कैसे कर सकते हो?"

"क्योंकि मुझे सच्चाई पता है!"

"तुम्हें सच्चाई कैसे पता चली?"

"क्योंकि मैं ढाई हजार साल पहले के उस पीरियड में होकर आया हूं। मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है क्या सच है और क्या झूठ। ढाई हजार साल पहले के कालखंड में भी मैं मौजूद था यानी यह मेरा पुनर्जन्म है पिछले जन्म में मैं गंडक और दंडक के साथ ही था। नयाना समुदाय की सुरक्षा व्यवस्था को मैं ही देखता था!"

हाल में एकदम सन्नाटा पसर गया।

" ये फिल्मी बातें सुनाने के लिए ही बुलाया है तुमने यहां? " एक मुस्करा कर बोला।

"तुम किस फिराक में हो? मैं समझ नहीं पा रहा?" सामने कुर्सी पर बैठे ही बैठे एक और

लडके ने कहा तो दूसरा उसका समर्थन करते हुए बोला,"मुझे तो लगता है कि यह मुंडक समुदाय के प्रति हमें भड़काना चाहता है । हमें उनसे लड़ाना चाहता है ताकि हम सब का नाम और निशान मिट जाए क्योंकि मुंडक समुदाय से हम कभी मुक़ाबला नहीं कर सकते!"

"मेरा उद्देश्य ना तो किसी को लड़ाना है और ना ही भड़काना है। मेरा देश सिर्फ सच्चाई बताना है । जो मैंने खुद देखी है और मैं चाहता हूं कि ढाई हजार साल पहले नयान समुदाय जो उसे दौर में भी सबसे ज्यादा विकसित था और सम्मानित जीवन जीता था उसी ढंग से जीवन जिए बस!"

"तुम्हारा कहना है कि ढाई हजार साल पहले कि उस कालखंड में तुम गए थे.. कैसे?"

सामंता ने टाइम मशीन के जरिए उस कालखंड की अपनी यात्रा के बारे में सब कुछ बता दिया।

हाल में एक बार फिर से सन्नाटा पसर गया। फिर कानाफूसी होने लगी।

"हमें तुम्हारी बात का यकीन नहीं है!"

"मैं तो नयाना समुदाय से ही आता हूं फिर मेरी बात का यकीन क्यों नहीं है?"

"क्योंकि तुम्हारी बातें यकीन कर लेने लायक नहीं है!"

"मेरे साथ मेरा दोस्त जमन्ता भी गया था। टाइम मशीन उसी ने बनाई थी । वह हम सबके बीच में ही उपस्थित है । आप उसी से पूछ लीजिए!"

सबकी नज़रें जमन्ता की ओर गई जबकि जमन्ता के चेहरे पर अजीब से हावभाव थे । ऐसा लग रहा था जैसे वह डरा हुआ है पर जब सबने उससे सच्चाई को जानने के लिए कहा तो वह उठकर बोला,"मैंने ऐसी कोई मशीन नहीं बनाई!"

हाल में लगा जैसे कोई बड़ा विस्फोट हुआ हो

सामंता को तो उसकी गूंज काफी देर तक सुनाई देती रही। कानों में लगा जैसे सन्न्न की आवाज आ रही हो और उसके बाद उसे कुछ सुनाई ना पड़ रहा हो।

"तुम्हारा वैज्ञानिक दोस्त तो मना कर रहा है कि उसने ऐसी कोई टाइम मशीन ही नहीं बनाई फिर तुम इतनी बड़ी-बड़ी बातें क्यों कर रहे हो?"

सामंता की समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक यह क्या हो गया , उसका दोस्त झूठ क्यों बोल रहा है। इसीलिये वह कुछ भी कहने के लायक नहीं था। क्योंकि सारा मामला तो जमन्ता पर ही टिका था और उसने एक ही झटके में सब कुछ खत्म सा कर दिया।

"तुम झूठ क्यों बोल रहे हो ? तुमने टाइम मशीन बनाई थी और मेरे साथ ही ढाई हजार साल पहले के कालखंड में गए थे बताओ लोगों को वरना मैं झूठा साबित हो जाऊंगा!" अचानक सामंता चीखने लगा।

"मैंने बता तो दिया मैंने कोई टाइम मशीन नहीं बनाई थी। तुमने यहां हाल में आने को कहा था इसलिए मैं आ गया । मुझे नहीं पता था कि तुमने यहां पर अनाप-शनाप बातें करने के लिए मुझको बुलाया है । ऐसा पता होता तो मैं आता ही नहीं। मै जा रहा हु।"

इसके बाद वह वहां एक भी क्षण नहीं रुका। लंबे लंबे डग भरते हुए हाल से बाहर चला गया।

बाकी उस हाल में रह गया सन्नाटा और उस सन्नाटे से भी ज्यादा भयानक सन्नाटा सामंता के दिमाग में विस्फोट कर रहा था। क्योंकि हाल में मौजूद लोगों को अपनी बात समझाने का सबसे मजबूत और एकमात्र जरिया था उसका दोस्त जमन्ता था और उसका आविष्कार टाइम मशीन। उसे लगता था लोगों को समझाना बड़ा इजी रहेगा इस तरह। पर जमन्ता ने झूट बोल कर भयंकर विस्फोट कर दिया था। वह सोच नहीं पा रहा था कि आखिर इसका दोस्त इस बात से मुकर क्यों गया।

"चलो भाई लोगों ,इसका लगता है दिमाग खिसक गया है तभी ऐसी हरकत की !"हाल में कुछ लोग खड़े हुए और गुस्से में बोले," नहीं तो मुण्डक शिब्रा का कहर हम सब पर टूटेगा।"

उसके कहने पर सब उठ खड़े हुए।

"जरूर यह हम लोगों को मुंडक समुदाय के लोगों से लड़ाना चाहता है इसीलिए इतनी तगड़ी साजिश रची पर और वक्त पर इसका दोस्त शायद डर की वजह से या फिर किसी भी वजह से इसका साथ देने से मुकर गया!" एक और बोला।

"तुम हमारे समुदाय के हो इसीलिए तुम्हारा यह साजिश या मजाक जो भी था हम लोग भूल रहे हैं पर आइंदा ख्याल रहे ऐसी कोई बेजा हरकत की तो हमसे बड़ा कोई नहीं होगा।"एक बड़ी-बड़ी मूंछों वाले तगड़े व्यक्ती ने उसे धमकी देते हुए कहा और फिर वह सब एक-एक करके हाल से बाहर चले गए।

वह अभी भी अपने स्थान पर खड़ा था । उसके दिलों दिमाग में पूरी तरह से सन्नाटा छाया हुआ था जैसे हवा-साय साय चल रही थी।

"मुझे पता था कि हमारे समुदाय के लोग ही तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। क्योंकि हजारों साल से जो बातें वह मानते आ रहे हैं इतनी जल्दी उनकी मान्यताएं नहीं टूटेगी। इसमें कुछ गलत भी नहीं है पर हैरानी तो मुझे इस बात की है कि तुम्हारा दोस्त मुकर गया! वह ना मुकुरता तो हालात कुछ और होते पर ..अब तो और मुश्किल बढ़ने वाली है! मुझे लगता है कि तुम्हारा दोस्त जो मुंडक समुदाय से है और इसीलिए शायद नहीं चाहता होगा कि सच्चाई किसी को पता चले। "

सामंता चुप चाप सुन रहा था।

****

वह वहां से गुस्से में अपनी बाइक से जमन्ता के घर आ धमका।

उसका दोस्त अपने घर के बरामदे में ही बैठा था।

बाइक खड़ी करके वह दनदनाता हुआ सीधा उसके पास जा पहुंचा। उसके मित्र ने भी उसे देख लिया था और कुछ घबरा सा गया था।

"तुमने हाल में सबके सामने झूठ क्यों बोला?"

दोस्त चुप।

"तुम्हें पता है तुम्हारी वजह से हाल में सबके सामने मेरी कितनी इंसल्ट हुई । लोगों ने मुझे

झूठा कहा ,मेरी बात को मजाक बताया गया.. साजिश करार दिया और यह सब हुआ सिर्फ तुम्हारी वजह से ! तुम अगर सच बोलते तो इतना कुछ नहीं होता.. चुप क्यों हो ? जवाब दो मेरी बात का । तुमने सबके सामने झूठ क्यों बोला?"वह सच में बेहद क्रोध में जान पड़ता था इतना कि शायद उसके दोस्त की जगह और कोई होता तो उसका वह खून कर देता।

"मैंने सबकी भलाई के लिए झूठ बोला!"

"अच्छा! तुम्हारे झूठ बोलने से सबकी भलाई कैसे हो जाएगी ? क्या नयाना समुदाय के लोगों को उनका हक मिल जाएगा.. क्या सरदार गंडक और उनके पुत्र दंडक को वह सम्मान मिल जाएगा जिसके वे हकदार है?"

"यह सब भले ही ना मिले पर सब की जान बच जाएगी मेरे झूठ बोलने से और इसीलिए मैंने झूठ बोला! मैं नहीं चाहता कि यहां पर बेवजह नयाना समुदाय और मुण्डक समुदाय के लोगों में रंजिश हो ..दंगे फसाद हो और हजारों लोग बेमौत मारे जाएं।"

" हूं। और नयाना समुदाय जो ढाई हजार साल से गुलामी का जीवन जी रहा हैं जबकि वह यहां के मूल निवासी है उनका ही सब कुछ है का हक कैसे मिलेगा ..कैसे यहां के मुख्य राजा सरदार गंडक और उनके बेटे दंडक को सम्मान प्राप्त होगा.. बताओ मुझे।"

"तुम भावुकता में आकर सब कह रहे हो । जरा दिमाग से सोचो ढाई हजार साल पहले जो होना था वह हो गया । सरदार गंडक और दंडक अब जीवित नहीं है । फिर किस सम्मान की बात कर रहे हो? नयाना समुदाय के लोग भी संतुष्ट हैं । किसी को कोई दिक्कत नहीं है । क्यों बेवजह तुम सबको मरवाने पर तुले हो।" इस बार जमन्ता भी क्रोध में आकर बोला।

सामंता ने गौर से उसे देखा और कुछ सोच कर गुस्से में बोला,"मैं समझ गया तुम ऐसी बातें क्यों कर रहे हो क्योंकि तुम चाहते हो मेरा समुदाय ढाई हजार साल से गुलामी का जीवन जी रहा है वह आगे भी गुलामी का ही जीवन जीता रहे यानि तुम सब मुण्डक समुदाय के लोग शासन करते रहो हम सब पर!"

"मैं ऐसा कुछ नहीं सोच रहा । मैं वर्तमान की स्थिति के हिसाब से सोच रहा हूं । तुम जो चाहते हो उसमे हजारों लोगों की जाने जायेगी..क्या वह तुम्हें मंजूर है!"

"ऐसा कुछ नहीं होगा!"

"तुम्हें क्या लगता है कि तुम लोगों को समझाओगे और वे समझ जाएंगे.. मान जाएंगे.. फिर तुम्हारे समुदाय के लोग अपना हक मांगेंगे और ढाई हजार साल से सत्ता पर काबिज मुंडक समुदाय क्या तुम सबकी बात यू ही मान लेगा। वह कभी नहीं स्वीकार करेगा की मुण्डक समुदाय के अलावा कोई और समुदाय सत्ता हासिल करे । परिणामस्वरूप भारी रक्तपात होगा । तुम्हें इस बात का इल्म नहीं है शायद! और फिर ढाई हजार साल से जिन लोगो की सोच, समझ,आत्मा सब कुछ सोए पड़े हैं और उन्हें कोई फर्क नही पड़ता तो तुम क्यों खामखा मुर्दों को जिन्दा करने की कोशिश कर रहे हो।"

" तुम्हें उस दर्द का, चोट का जरा भी इल्म नहीं है जो ढाई हजार साल पहले नयाना समुदाय के लोगों ने खाई थी !"

"उसके लिए तो," वह सामंता घूरते हुए बोला,"तुम ही जिम्मेदार थे। तुमने ही अपने प्यारे

समुदाय से गद्दारी की थी । गंडक सरदार जो तुम्हे दोस्त समझता था और तुमने उसकी पीठ में तलवार घोंप दी थी। सारी बर्बादी का कारण तुम हो.. नयाना समुदाय को पता चलेगा तो तुम्हारा क्या हश्र होगा.. तुम्हारे समझ नहीं आ रही यह बात। तुम्हारे अपने लोग ही तुम्हें नोच खाएंगे। मुझे तुम्हारी फिक्र है।"

"मैं हर बात के लिए तैयार हूं क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हु कि मैने गद्दारी की थी और उस गद्दारी, उस पाप के लिए मैं कोई माफी नहीं चाहता लेकिन मैंने शपथ खाई है जिसे पूरा करके रहूंगा । मेरी वजह से ही मेरा समुदाय गुलाम बना था । और मेरी वजह से ही वो राजा बनेगा। इस बात के लिए मैं पूरी तरह से प्रतिबद्ध हूं। तुम मेरा साथ दोगे या नहीं?"

जमन्ता चुप रहा।

" ठीक है। मै समझ गया।"

वहां से वह पैर पटकते हुए अपनी बाइक की तरफ बढ़ गया।

*****

युगांडा अपने विशेष कक्ष में बैठा था। मौन था। उसके सामने बैठे थे कई इलाके के लीडर और उन सब का लीडर मुसंडा, त्रिवेला का बाप, भी था।

एक बड़ी सी गोलमेज के आसपास सभी बैठे थे जबकि युगांडा पास ही एक ऊंचे स्थान पर सिंहासन नुमा कुर्सी पर बैठा था।

"तुम सब लोग अपने-अपने इलाके के मुख्य कर्ताधर्ता हो और तुम में से हर एक की जिम्मेदारी है कि अपने इलाके में शांति बनाए रखने की । कोई भी ऐसी बात ना हो जो खास कर मुंडक समुदाय के खिलाफ हो। तुम लोगों को खुली छूट है इस बात की कि मुंडक समुदाय के खिलाफ कोई भी कुछ भी करें उस आवाज को अपने तरीके से कुचल दो। बगावत की आवाज सुनना नही चाहता मै पर लगता है तुम लोग इस तरफ ध्यान नहीं दे रहे । ध्यान अगर दे रहे होते तो मुंडक समुदाय के इतने सारे लोग नहीं मारे जाते । उनमें से कुछ हमारे अफसर भी थे! आखिर कौन है वह अज्ञात हत्यारा जिसे सब कालपुत्र कहते हैं?" युगांडा ने अपनी भारी आवाज में कहा। वह क्रोध में नज़र आ रहा था।

सब चुप बैठे थे । एक दूसरे की शक्ल देख रहे थे।

"यानी अभी तक तुम्हें कुछ भी पता नहीं जबकि 10 ,15 दिन से अज्ञात हत्यारा कालपुत्र हमारे समुदाय के लोगों को टारगेट करके उन्हें मारता जा रहा है और तुम सब हाथ पैर हाथ धरे बैठे हो?"उसने सभी को गुस्से में घूरते हुए देखा।

"वह हत्यारा हमारे मुंडक समुदाय के लोगों को ही टारगेट बना रहा है। इससे यह तो पता लग ही जाता है कि वह नयाना समुदाय का ही कोई सिरफिरा है जो हमारे खिलाफ बगावत करने की कोशिश कर रहा है । उसकी यह कोशिश भले ही छोटी हो पर अगर रोकी ना गई तो बहुत बड़ी भी हो सकती है। आज को एक कालपुत्र उठा है कल को सैकड़ो कालपुत्र खड़े होंगे तो उन्हें रोकना मुश्किल होगा । चिंगारी आग की भयानक लपटे बने और तबाही फैलाए इससे पहले ही उसे बुझा देना चाहिए!"

" जी।" लगभग सब एक साथ बोले।

"पता करो नयाना समुदाय में से यह बागी कौन है और उसे ऐसी कड़ी से कड़ी सजा दो जिसे देखकर फिर कोई नया कालपुत्र हमारे खिलाफ़ खड़ा ना हो। पर ध्यान रहे सजा का तरीका ऐसा होंना चाहिए कि लोगों को यह एहसास हो कि उस पर मुंडक शिब्रा का कहर टूटा है!"

" जी।"

"मुझे ऐसा लगता है कि यह कालपुत्र जो बना घूम रहा है वह द्विज ही है वही इकलौता शख्स था जिसने उस दिन मुण्डक पर्व पर बलि का विरोध किया था ,हमारे खिलाफ कड़वे बोल बोले थे । उसी ने पहले मुण्डक शिब्रा के गले में जूते की माला डाल कर बेइज्जत किया फिर हमारे लोगो को मारने लगा। उसकी फैमिली का तो इलाज हो गया था उसी दिन पर बाई चांस वह बच गया। हमने समझा था की नदी में कूदने की वजह से वह मर गया होगा पर मुझे लगता है कि वह मरा नहीं और अब मुण्डक समुदाय से बदला ले रहा है । उसे भी ढूंढो और ऐसी सजा दो पूरा नयाना समुदाय कराह उठे।"

सभी लीडर्स को दिशा निर्देश करने के बाद और वहां से जाने के बाद युगांडा ने मुसंडा को रोक लिया । सबके जाने के बाद उसने उससे कहा,"तुम मेरे सबसे खास लोगों में से एक हो ,मैं तुमसे अपनी हर बात शेयर करता हूं कुछ भी नहीं छुपाता!"

" जी आपने सही कहा।"

"सुरक्षा व्यवस्था के तुम प्रमुख हो । सारे लीडर्स के तुम लीडर हो इसलिए यहां की सुरक्षा व्यवस्था का दायित्व सबसे ज्यादा तुम्हारे ऊपर है । मैंने अभी जो बातें कही है उसकी तरफ सबसे ज्यादा ध्यान रखो और जल्द से जल्द समस्या से छुटकारा दिलाओ तुम्हारे पास में ना हो तो मुझे बताओ!"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। मैं उस अज्ञात कालपुत्र को पकड़ लूंगा और उसे कड़ी से कड़ी, कठोर से कठोर सजा दूंगा । आप बेफिक्र रहे!"

"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। मैं जानता हूं तुम यह कर लोगे । यही अच्छा रहेगा क्योंकि मैं नहीं चाहता की अगले सप्ताह मेरा बेटा विदेश से पढ़कर कई सालो बाद लौट रहा है तो यहां पर किसी प्रकार का विघ्न बाधा हो।"

"जी विघ्न बाधा बिल्कुल भी नहीं होगी! आपका बेटा मुरूदंड विदेश से पढ़ लिख कर वापस आ रहा है । यह तो बड़ी खुशी की बात है ।" मेयर । ने खुशी जाहिर करते हुए बोला।

*****

सामंता अपने दोस्त के यहां से नाराज होकर इस समय नदी के किनारे पर आ गया था। उसने पास में ही अपनी बाइक खड़ी की और दूर घास में जा बैठा। वह इस समय पहाड़ी पर था और नीचे नदी बहती थी । उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था। वह जानता था कि उसने जो कसम ली है उसे पूरा करना लोहे के चने चबाने के समान है पर फिर भी वह हर प्रकार से अपने काम को अंजाम देना चाहता था। उसे लगता था उसका दोस्त उसकी मदद करेगा जिससे उसका काम आसान हो जाएगा । वह अपने लोगों को समझा पाएगा । उनमें एक यूनिटी बना पाएगा ताकि वहां के तानाशाह युगांडा से लड़ने में उसकी मदद हो।

वह अपने देश से युगांडा की, मुण्डक समुदाय के लोगों की तानाशाही को खत्म करना

चाहता था पर इसके लिए उसके अपने समुदाय के लोगों का साथ मिलना बहुत जरूरी था इसीलिए उसने कुछ दिनों तक अपने समुदाय के कुछ प्रभावशाली लोगों को इकट्ठा किया था अपनी बात समझाने के लिए पर वक्त पर उसका दोस्त मुकर गया और उसका बनता काम न सिर्फ बिगड़ गया बल्कि बहुत बेज्जती भी हुई उसकी, शर्मिंदगी उठानी पड़ी सो अलग।

उसका दोस्त कहता था कि वह नहीं चाहता कि उस देश में लड़ाई झगड़ा हो, खून खराब हो इसीलिए उसने झूठ बोल दिया शायद उसे इल्म था कि अगर उसने सच बोल दिया तो नयाना समुदाय के लोग उसकी बात को सच मानेंगे और युगांडा के खिलाफ लड़ाई का बिल्कुल फूंक देंगे । दोनों समुदायों में भयंकर तकरार होगा और खून खराब होगा। लाशों के ढेर हर हाल में लगना तय था ।

पर दोस्त के मना करने के पीछे क्या यही वजह थी या फिर वह खुद मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखता था इसलिए नहीं चाहता था कि उस देश से मुंडक समुदाय की तानाशाही खत्म हो। मुंडक समुदाय के लोगों को जो अधिकार प्राप्त हैं वह उनसे छिन न जाए। उसे इस बात का डर था इसलिए झूठ बोला।

पहाड़ी पर घास पर बैठा सामंता इन्हीं सब विचारों में उलझा हुआ था। वह तय नहीं कर पा रहा था कि आखिर उसके दोस्त ने क्यों मना किया.. उसकी दोनों बातें ही सही थी पर पता नहीं क्यों उसे लगता था कि उसका दूसरा विचार ज्यादा सही है वह खुद मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखता था इसीलिए नहीं चाहता था की उसके समुदाय की तानाशाही खत्म हो और गुलामी की तरह जीवन जी रहे नयाना समुदाय के लोग उस देश में राज करें।

अब क्योंकि दोस्त का भी सहारा नहीं था इसलिए वह सोच नहीं पा रहा था कि अपने काम को कैसे अंजाम दे। लोगों को कैसे कन्विंस करें की ढाई हजार साल पहले यहां पर नयाना समुदाय का ही शासन चलता था । दंडक और गंडक शैतान नहीं बल्कि यहां की सरकार थे ,बहादुर महायोद्धा थे । आज उसे पहली बार महसूस हो रहा था कि किसी वक्त की गई गलती, भूल को भविष्य में सुधारना कितना कठिन होता है। एक सच्ची बात को भी सबको समझाने में नाकों चने चबाने पड़ते हैं। सदियों पहले दवा सच को क्या कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा। स्वीकार किया जा सकता है अगर वह उसकी प्रामाणिकता साबित कर दे। पर कैसे?

उसे समझ नहीं आ रहा था। पर उसने भी ठान लिया था कि वह सत्य सबके सामने ला कर रहेगा और मनवा कर रहेगा। चाहे कुछ भी हो जाए।

वह जानता था अपनी कसम को पूरे करने के लिए उसके पास दो ही रास्ते हैं, एक अपने समुदाय के लोगों को सच्चाई बताना उन्हें अपने साथ लेकर युगांडा के खिलाफ बगावत का बिल्कुल फूकना और उसकी सत्ता को उखाड़ फेंकना और दूसरा रास्ता था खुद पहले युगांडा को खत्म करें ,उसके तानाशाही शासन को खत्म करें और फिर अपने लोगों को समझाएं। पर यह रास्ता पहले वाले रास्ते से ज्यादा खतरनाक था क्योंकि उसे जो भी करना था अकेले ही करना था । उसे दूर-दूर तक अपना कोई मददगार नजर नहीं आता था । एक दो बार उसके दिमाग में द्विज का ख्याल भी आया पर जानता था की द्विज का कुछ अता पता नहीं है । फिर उसे निमांडा का ख्याल आया। उसके पास जो शक्तियां थी वह भी इतनी समर्थ नहीं थी जो ढाई हजार साल पहले की सच्चाई को पब्लिक में उजागर कर सकें। उन्हें सिद्ध कर सके।

सोचते सोचते उसका दिमाग गर्म होने लगा इसीलिए कुछ देर के लिए उसने सब बातों से है छुटकारा पाने के लिए अपने आसपास के दृश्यों का अवलोकन करने लगा। नदी के आसपास हरा-भरा माहौल था, जंगल था। सामने एक छोटी पहाड़ी थी जो पेड़ो से पूरी तरह ढकी हुई थी। सारे दृश्य दिल को सुकून देते थे पर दिल में सुकून तभी उत्पन्न होता है जब दिमाग शांत हो दिमाग में खुशी हो इसलिए अंदर की दुनिया जब खूबसूरत होती है तभी बाहर की दुनिया भी खूबसूरत लगती है । हां यह हो सकता है कि बाहर की खूबसूरत दुनिया कुछ देर के लिए अंदर की दुनिया को खूबसूरत बना दे । जिसे शायद ध्यान बांटना कहते हैं। वही उसके साथ हुआ पर अचानक उसे ढाई हजार साल पहले के वातावरण और उसकी कहानी है याद आने लगी। उसे याद आने लगा नदी के किनारे ही नयाना समुदाय के लोग खेती किया करते थे । नदी के किनारे ही दंडक अपनी प्रेमिका से मिलने आता था और यहां बैठकर उसके साथ घंटो बाते किया करता था। वह समीरा के रूप में उसके साथ होता था। खूब मस्ती करता था उसके साथ। गंडक कभी कभी बनावटी चिढ़न से कह देता था कि वह उसका दोस्त है या उसके बेटे का।

वह हस कर उत्तर देता था कि दोनों का।

उसे कुछ देर के लिए सब कुछ अच्छा लगने लगा पर जैसे ही कहानी के अंत में उसके पूर्व जन्म समीरा ने गंडक की पीठ में तलवार घोपी थी याद आया वह बुरी तरह चौक गया, हिल गया और उस सोच से बाहर निकल आया। उसे ऐसा लगा कि उसकी आंखों के सामने दंडक जो उसे अपना दोस्त मानता था, चाचा कहता था की गर्दन मुण्डक ने अभी-अभी काटी हो । गंडक की पीठ में तलवार उसने अभी-अभी घोपी हो और दोनों के मृत शरीर उसके सामने ही पड़े हो । मुंडक और उसके साथी बुरी तरह हस रहे हो । नयाना समुदाय के लोगों को कत्लेआम किया जा रहा हो । उन्हें गुलाम बनाने के लिए विवश किया जा रहा हो। चारों तरफ चीख पुकार मची हो। सारे दृश्य उसके सामने ऐसा लग रहा था जैसे चलचित्र की भांति चल रहें हो एक दम सजीव। उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा। वह हाफने लगा । अचानक खडे होकर जोर से चिल्लाया। जिसका शोर दूर पहाड़ियों में गूंजने लगा। फिर घुटनो पर बैठकर जोर जोर से रोने लगा।

****

वह एक शानदार कार थी जो जंगल के रास्ते से होकर मध्यम गति से आगे बढ़ती जा रही थी । दोपहर के वक्त था । पर सड़क के दोनों तरफ काफी पेड़ और झाड़ियां होने की वजह से वहां पर सूर्य का प्रकाश कुछ खास प्रभाव नहीं डाल पा रहा था । चारों तरफ ठंडक का माहौल था।

कार में उस इलाके का लीडर नूतन पिछले सीट पर लेटा हुआ था आंखें बंद किए। शायद उसे हल्की नींद आ रही थी। उसकी कर में ड्राइवर के साथ उसकी बगल वाली सीट पर उसका सुरक्षा कर्मी भी बैठा था जिसके हाथ में ऑटोमेटिक नई तकनीक वाली गन थी। उसके आगे भी एक जीप चल रही थी जिसमें चार सुरक्षा कर्मी थे ,ड्राइवर समेत।

दोनों कार वहां बड़े आराम से जंगल के बीच होकर गुजर रही थी । आगे चलने वाली जीप अचानक जब मोड पर पहुंची तो ड्राइवर को तुरंत ही ब्रेक लगाने पड़े क्योंकि बीच सड़क पर एक काफी मोटा पेड़ बीचों बीच पड़ा हुआ था । पीछे वाली कार के ड्राइवर ने भी अपनी कार

को उसके नजदीक ले जाकर रोका तो पिछली सीट पर ऊंघ रहे लीडर के शरीर को झटका लगा और वह सीधा होकर बैठ गया।

"क्या हुआ? कार यहां जंगल में क्यों रोक दी?"उसने बेहद नाराजगी भरे स्वर में पूछा।

"सड़क के बीचो बीच कोई पेड़ पड़ा है इसलिए कर रोकनी पड़ी साहब!" ड्राईवर ने उत्तर दिया।

"पेड़ पड़ा है ! कहा.. सड़क पर?. तो आगे जीप में बैठे सुरक्षा कर्मी क्या कर रहे हैं. पेड़ हटाए जाकर!"

"पेड़ काफी भारी जान पड़ता है साहब ! चार लोगों से शायद नहीं हटेगा!"

"तो तुम लोग भी जाओ ना यहां बैठे-बैठे क्या मुझसे बकवास कर रहे हो ..जाओ जाकर पेड़ हटाओ?" उसने तल्ख स्वर में कहा।

उसका ड्राइवर और सुरक्षाकर्मी दोनों ही कार से उतरे। पहले उन्होने खिड़कियां बंद की है और फिर आगे बढ़ गए।

नूतन महीने भर के लिए विदेश यात्रा पर गया हुआ था । आज ही लौटा था। उस देश में क्या हो रहा है क्या चल रहा है इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। पता होता तो शायद वह समझ जाता कि आज उस पर संकट आने वाला है।

उसे छोड़कर बाकी सब कुछ अज्ञात आने वाले संकट से परिचित थे पर उस घड़ी शायद उनके दिमाग से भी निकल गया था इसीलिए वह सब नूतन को छोड़कर सड़क पर पड़े हुए को पेड़ को उठाने की , खिसकाने की भरसक कोशिश करने लगे।

यही वह क्षण था जब एक साथ कई तीर उन लोगों की तरफ छोड़े गए और निशान तो इतना अचूक था कि वह सारे तीर जो संख्या में चार थे, चार लोगों के सीने में पेवस्त हो गए और उन्हें धरा साही कर दिया । वह सब खून से लथपथ जमीन पर फौरन गिर गए थे। उनके प्राण पखेरु उड़ गए थे । बाकी के बचे तीन लोग जो अचानक हमले की वजह से भौचक खड़े थे समझ ही नहीं पा रहे थे कि यह क्या हुआ पर अब उन्हें इल्म हो गया था कि उनके आसपास ही कालपुत्र आ चुका है । उसके बारे में उन्हें पहले से पता था । पर इससे पहले की तीनों ही खुद को छुपा पाए कुछ तीर और चलाए गए । एक तीर ड्राइवर की खोपड़ी में जाकर घुस गया और आर पार हो गया। वह वही उसी पेड़ की डाल पर तीर के साथ लटक गया। नूतन का सुरक्षा गार्ड और ड्राइवर डर कर अपनी कार की तरफ भाग कर आ गए। दोनों ही कारो पास आकर जल्दी से खिड़की खोलने की कोशिश करने लगे।

लीडर पिछली सीट पर बैठा हुआ था । आगे क्या हुआ उसे कुछ भी पता नहीं था पर जब उसके ड्राइवर ने घबरा कर अपनी ड्राइविंग डोर खोलने की कोशिश की और तभी एक तीन सन सनाता हुआ आया और उसकी खोपड़ी में है भक्क से घुस गया। तीर उसकी खोपड़ी में घुसने के साथ-साथ ड्राइविंग डोर की खिड़की के कांच को तोड़कर अंदर प्रविष्ट हो गया । यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ था कि किसी के कुछ समय में नहीं आया और नूतन तो पूरी तरह घबरा गया था क्योंकि वह समझ गया था कि किसी ने बहुत ही तगड़ा और भयानक हमला किया है । किसने किया है ,क्यों किया है इस बारे में सोचने की फुर्सत नहीं थी।

वह हकबकाया हुआ अपनी सीट पर बैठा था। उसका सुरक्षा गार्ड दूसरी तरफ अपनी खिड़की

खोलने में व्यस्त था तभी नूतन गुस्से में चिल्लाया"हाथ में गन लिए है बेवकूफ उसे चलता क्यों नहीं?"

सुरक्षाकर्मी अपने साथियों की मौत देखकर शायद कुछ ज्यादा ही बौखला गया था और एक सामान्य सी बात भूल गया था अब उसे अचानक ध्यान आया तो उसने अपने गले में पेट से बांध रखी गन को तुरंत निकाल और जिस तरफ से तीर आ रहे थे गन से फायर करनी शुरु कर दी।

कुछ ही देर में उसने अपनी गन की पूरी मैगजीन पूरी खाली कर दी।

सारा इलाका गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंज उठा था पर जब गन का गरजना बंद हुआ तो चारों तरफ अजीब सी शांति छा गई ऐसा लगा जैसे मरघट का सन्नाटा हो।

और तभी फिर से तीर चला जो सुरक्षाकर्मी के दिल में आकर धंस गया और वह किसी कटे हुए पेड़ की भांति भरभरा कर वही कार के पास ही ढेर हो गया।

उसे मोटे थुलथुल शरीर के मालिक नूतन की टांगे कांप रही थी। हमला बड़ा ही भयानक था । उसमें उसके सारे सुरक्षाकर्मी और ड्राइवर मारे गए थे। दो को तो उसने अपने आंखों के सामने बुरी मौत मरते देखा । उसने अनुमान लगाया कि कातिल बड़ा बेरहम था। उस समय तो उसके देवता कूंच कर गए जब सड़क पर जूते की खटपट की आवाज सुनी

कोई उसकी तरफ ही चला रहा था । वह जानता था कि कातिल के सिवा और कोई नहीं है। उसके सारे लोग तो मारे जा चुके।

उसका दिल पसलियों में बुरी तरह धड़क रहा था। लगता था जैसे पसलियों को तोड़ डालेगा।

जूते की खट खट की आवाज के साथ अपने लोगों का कातिल दिखाई दिया जो पूरी तरह काले कपड़ों में था। काले कपड़े वाला बेहद चुस्त नजर आता था। उसके शरीर का कोई भी हिस्सा नजर नहीं आ रहा था। उसके हाथों में धनुष था, पीठ पर तरकश में बाण थे ।

कातिल उसकी कार के नजदीक आकर उसकी खिड़की के पास खड़ा हो गया। उसकी नजर अंदर बैठे कांप रहे नूतन पर पड़ी इस समय ऐसा लग रहा था जैसे हिरण का सामना शेर से हो रहा हो और वह भी ऐसे हैं जब हिरण के पास भागने का कोई मौका ना हो।

" ता..; तुम कौन हो और क्या चाहते हो?" आखिर कार उसने हिम्मत जुटाकर पूछा।

"मैं जो चाहता हूं वह तुम्हारी मौत से ही हासिल होगा। तुम सब की मौत से ही हासिल होगा.. रही बात मैं कौन हूं यह तुम्हें नहीं पता चलेगा लेकिन तुम्हारे बाद सबको पता चलेगा!"

"मैंने.. मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"लीडर रोने को तैयार जान पड़ा। अचानक उसने हाथ जोड़ लिए और गिड़गिड़ाते हुए बोला,"मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो?"

"ठीक है तुम जा सकते हो । खिड़की खोलो और इससे पहले मुझे गुस्सा आए यहां से भाग जाओ!"लबादा धारी ने कहा तो उसके जी में जी आया और उसने बिना कुछ सोचे समझे खिड़की खोलकर दूसरी तरफ निकल कर सड़क पर भागने लगा पर वह जानता नही था की मौत से कोई नहीं भाग सकता । कार के अंदर रहता तब भी मारा जाता है पर कातिल उसे शायद दौड़ करवाना चाहता था इसीलिए उसने उसे कुछ दूर भागने दिया और फिर धनुष पर बाण चढ़ाया और छोड़ दिया उसकी तरफ । तीर सीधा लीडर की पीठ में घुसकर आगे दिल

को फाड़ता हुआ निकल गया और वह मोटे शरीर का मालिक कटे पेड़ की भांति मुंह के बल सड़क पर औंधे मुंह गिरा और ईश्वर को प्यार हो गया।

लाबादादारी के हाथों मे एक कटार नज़र आया। उसने आगे बढ़कर नूतन की छाती के कपड़े को अलग किया फाड़कर और फिर उस पर चाकू से कालपुत्र लिखने लगा । इसके बाद हर मरने वाले की छाती पर कालपुत्र लिखा। अपना काम पूरा करने के बाद झाड़ियों के उस पार चला गया जहां उसका घोड़ा बधा था । उसे खोला। घोड़े पर बैठा और जंगल की तरफ रवाना हो गया।

****

अभी तक मुण्डक समुदाय के जो भी लोग मरे थे। वे सभी अधिकारी वर्ग से आते थे पर पहली बार किसी लीडर स्तर के व्यक्ति को मौत के घाट उतारा गया था वो भी इस तरह। उसकी सारी सुरक्षा व्यव्स्था को धता बताकर। लीडर के साथ साथ उसके सारे सुरक्षा कर्मी भी मारे गए थे। सुरक्षा की मुख्य रिस्पांसिबिलिटी त्रिवेला के पिता मुसंडा पर थी। एक तरह से कह सकते है वो देश का रक्षा मंत्री था। और इस घटना ने उसकी चिंता बढ़ा दी थी।

वह इस समय घर पर था जब लीडर और उसके साथी की मौत की ख़बर उसे दी गई थी। वह बेहद चिंतित होकर अपने रूम में टहल रहा था। उसी कमरे में हांथ बांधे खड़ा था वह पुलिस वाला जिसने घटना स्थल का मुयाना किया था और घटना की जानकारी देने के लिए वहा उपस्तिथि था । घटना चिंता में डालने वाली थी। कुछ दिनों में किसी अज्ञात हत्यारा कालपुत्र ने कत्लेआम मचाया हुआ था। धीरे धीरे यह बात हर जगह फैल रही थी और लोगो मे डर बैठ रहा था। मरने वाले मुण्डक समुदाय से ही ज्यादा थे । एक दो नयाना समुदाय से भी थे पर वे वही थे जो उन अधिकारियों के साथ थे और मरने वाले की मदद कर रहे थे या करना चाहते थे। इसलिये यहीं माना गया था कि कातिल के टारगेट मुण्डक समुदाय के लोग ही है। युगांडा का सख्त आदेश था कातिल को जल्द से जल्द पकड़ कर फांसी पर लटकाना। पर इस मामले में कामयाबी अभी कोसो दूर थी।

" उस कालपुत्र के बारे में कुछ भी ऐसा पता चला जो हमे उस तक पहुंचा सके?" टहलते टहलते अचानक वह रुका और सामने खड़े ऑफिसर से पुछा।

ऑफिसर ने जोर से थूक गटका।

" न.. नहीं।" और बडी मुश्किल से कहा।

उसके चेहरे पर क्षण भर के लिए गुस्सा दिखा। पर पता नहीं क्या सोचकर नरम हो गया और बोला," पर इतना तो तय है कि वो जो कोइ भी हो मुण्डक समुदाय से खुन्नस खाएं हुऐ हैं। वह चुन चुन कर हमारे समुदाय के महत्पूर्ण लोगो को टारगेट बना रहा है। क्या मकसद हो सकता है उसका?"

" जनाब मुझे तो लगता है कोई बेहद सताया हुआ इन्सान है जिसके साथ हमारे समुदाय के कुछ लोगों ने घोर अन्याय किया हुआ जान पड़ता है.. या जितने लोग मारे गए उन सब ने अत्याचार किया हो सकता है तभी उन्हें मारा गया।"

" हूं। और ये कैसे पता चलेगा कि कालपुत्र कौन है उस पर अत्यचार और किन किन लोगों ने किया। "

जबाव नादरत।

" तुम्हारे ख्याल से क्या उस पर अत्याचार करने वाले समाप्त हो गए या अभी और है.. ?"

" पता नहीं जनाब। कोइ घटना अब ना घटे तो समझना चाहिए की उसके दुश्मन समाप्त हो गए।"

" ऐसा हो तो ही अच्छा रहे पर मुझे नहीं लगता कि ऐसा है। कातिल आगे भी कत्ल करेगा.. अच्छा ,कातिल मारने वाले की छाती पर कालपुत्र क्यो लिखता है, सबको क्यो बताना चाहता है कि मारने वाला कालपुत्र है.. पर कौन है ये कलपुत्र?"

" इस बारे में अभी कुछ पता नहीं जनाब। जितना पता है उसके अनुसार वह एक छलावा है जो कहीं भी, कभी भी प्रकट हो जाता है।"

" ऐसा नहीं होता। छलावा अलावा बकवास है। लोग अत्यधिक डर गए हैं और डर की वजह से ही छलावा जैसी बाते गढ़ लेते हैं।"

" हू।"

" मुझे लगता है ये कातिल का असली परिचय नहीं है असल में वह कोइ और है और अपनी पहचान छुपाने के लिए कालपुत्र जैसे छदम नाम का इस्तेमाल कर रहा है।"

" जी ,मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

" ये घटनाएं जिन जिन इलाकों में हुईं है वहा जाकर पता करो। हाल फिलहाल किसी के साथ कोइ ज्यात्ती हुई हों। सबसे पूछताछ करो। सख्ती बरतो। पर पता करो जल्द से जल्द। ताकि हम कातिल तक जल्द पहुच सके।"

" जनाब इस नजरिए से सोचने पर मुझे बस एक ही नाम जहन में टकराता है और वह है द्विज। उसके साथ क्या हुआ था आपको पता ही है।"

मुसंडा का माथा ठनका।

" पर वो तो नदी में कूद गया था। सुनने में आया कि था मर गया।"

" उसकी लाश कभी बरामद नहीं हुई जनाब । क्या पता वो जीवित हो और वही कालपुत्र बना घूम रहा हो। मरने वाले लोगों में जिनमें कुछ बयान देकर मरे उनमें सबका यहीं कहना है कि कातिल ने ख़ुद को पूरी तरह काले कपड़ों में छुपा रखा था। कोइ भी इस बात के अलावा कुछ नही बता पाया। एक बात और जो खटकने वाली है की कातिल ने मरने के लिए धनुष और जहर मे डूबे बाण का इस्तेमाल किया । आज के जमाने में कौन इस्तेमाल कर ता है ये सब।"

" आज भी हमारे देश में कहीं कहीं जहां ज्यादा जंगल है वहा लोग धनुष बाण का इस्तेमाल कर ते है। देश में तीरंदाजी की कंपीटिशन होते रहते हैं। "

" फिर तो कातिल उन्हीं लोगों में से ही कोइ हो सकता है। क्योंकि कातिल निशाना सटीक लगाता है।"

" क्या पता हैं किसी ने चुपके से सीखा हो। या कोई भी हो । उसे जल्द से जल्द खोजना होगा।"

वह चुप रह गया।

" वैसे तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं द्विज अच्छा तीरंदाज था।"

" जी।" उसके भी माथे पर बल पड़े।

" हूं। तो उसकी भी तलाश करो। और बाकी के नयाना समुदाय से भी। क्या पता कोइ छुपा रुस्तम हो। उस पर अत्याचार ना हुआ हो पर किसी के साथ हुऐ अत्याचार का बदला ले रहा हो। जितने भी एंगल समझ में आए सब को टटोलो। कातिल को गिरफ्तार करो बस। दो दिन बाद युगांडा का बेटा विदेश से पढ़कर वापस स्वदेश लौट रहा है और उसके बाद उसे यहां का अगला राजा घोषित किया जायेगा। युगांडा चाहता है कातिल उससे पहले ही पकड़ा जाय। दूसरे वह नहीं चाहता आगे चलकर कातिल की वजह से नयाना समुदाय का फिर कोइ व्यक्ति सर उठाए। उसे लगता है इससे देश में उसके खिलाफ़ बगावत का बिगुल बज सकता है। एक बार नयाना समुदाय हमारे खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ तो उसे रोकना मुश्किल होगा। अभी तक तो हम मुण्डक शिब्रा का भय दिखाकर, कहानी सुनाकर उनको रोकने में सफ़ल रहें जेसे हमारे पूर्वज रहे। "

" आगे भी रहेंगे। यहां मुण्डक समुदाय का ही राज रहेगा। आप बेफिक्र रहे। एक कालपुत्र हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।"

" एक छोटी सी चिंगारी को अगर वक्त पर रोका ना जाय तो वही समय पर हवा के साथ मिलकर भयंकर ज्वालामुखी का रूप अख्तियार कर लेती है और सब कुछ तबाह बरबाद कर देती हैं।"

" आप बेफिक्र रहे जनाब ! हम उस चिंगारी को आग की भीषण ज्वालामुखी कभी नहीं बनने देगे।"

" अच्छा ,उस हरमी का कुछ पता चला जिसने मुण्डक शिब्रा के गले में जूतों की माला डाली थी।" मेयर ने कुछ रुक कर पूछा।

"नहीं पर मुझे ऐसा लगता है कि वह कारनामा भी काल पुत्र ने ही किया है! क्योंकि उसके अलावा तो कोई ऐसा दुसाहसी नज़र नही आता।"

" हू। इस बात से तो यह लगता है कि कातिल हम सब मुण्डक समुदाय के लोगों से नफरत करता है। मुंडक शिब्रा ने उसका क्या बिगाड़ा है उसने ऐसी हरकत क्यों की?""

"अभी तक तो हम लोग सारे अनुमान लगा रहे हैं सच्चाई तो कातिल के पकड़ने पर ही पता चलेगी पर इतना तो तय है कि वह जो कोई भी है नयाना समुदाय के लोगों से सहानुभूति रखता है और इसीलिए हमें अपना पूरा फोकस नयाना समुदाय के लोगों पर रखना पड़ेगा उनमें में से ही कोई कालपुत्र निकलेगा भले ही कोई भी हो।"

" ठीक है जाओ।,"तभी उसे कमरे में त्रिवेला ने कदम रखा तो मेयर ने अपने ऑफिसर से जल्दी से कहा,"और मुझे शीघ्र ही गुड न्यूज दो !"

" जी।"

ऑफिसर् चला गया । अब कमरे में केवल त्रिवेला और उसका बाप रह गए थे।

"आप काफी परेशान देख रहे हैं पापा।"त्रिवेला ने अपने पिता के चेहरे पर चिंता की लकीरों को पढ़ लिया था शायद इसीलिए उसने तुरंत पूछा तो उसके बाप ने भी सारी बातें स्वीकार कर ली। और अपना दुख उसके साथ साझा किया।

त्रिवेला अपने पिता की सारी बातें सुनकर सोच में डूब गई और अचानक उसके दिमाग में सामंता का ख्याल आया । उस दिन वह मुंडक शिब्रा के बारे में उल्टा सीधा बक रहा था । कहीं वही तो काल पुत्र नहीं है.. कहीं उसी ने तो हो मुंडक शिब्रा के गले में जूते की माला नहीं डाली।

वह गंभीरता से सोचने लगी और चिंतित जान पड़ी शायद इसलिए क्योंकि वह जानती थी अगर सामंत ने ऐसा कुछ किया है तो उसका परिणाम बड़ा ही भयानक होने वाला है।

पर उसे अपने प्रेमी की बातों पर यकीन था और वह जान चुकी थी सच्चाई क्या है इसलिए उसने उसकी बातों का विरोध भी नहीं किया था। उसका साथ देने का पूरा भरोसा दिया था। पहले उसने सोचा कि अपने पिता को भी सच्चाई बता दे शायद वह समझ जाए पर फिर उसने यह सोचकर नहीं बताया कि पता नहीं उसका पिता उसकी बात को समझेगा कि नहीं, कहीं वह सामंता के लिए खतरा न बन जाए । बस यही सब सोच कर उसने कुछ भी नहीं बताया । अपने पिता को तसल्ली देते हुए इतना ही बोली,"आप परेशान ना हो कालपुत्र जो भी होगा वह शीघ्र ही पकड़ा जाएगा और सारा मामला सॉल्व हो जाएगा।"

****

नयाना समुदाय पर अगले कुछ दिन संकट के रहे। पुलिस ने सबसे कड़ाई से पूछताछ करना शुरु कर दिया । जिस पर जरा भी शक हुआ उसे जमकर ठोका गया। पर पुलिस के हांथ सफलता नहीं लगी।

दूसरी तरफ द्विज को भी खोजा जा रहा था जिसकी मां को जिन्दा जला दिया गया था भीड़ के द्वारा। और उत्तेजित, पगलाई भीड़ के डर से ही उसने ख़ुद को बचाने के लिए नदी में छलांग लगाई थी। आगे उसे मरा हुआ मान लिया गया था लेकिन अभी तक उसकी डेड बॉडी नहीं मिली थी इसलिए उसके जीवित होने के चांस बने हुए थे और कातिल जिसे सब कालपुत्र समझ रहे थे उसे ही समझा जा रहा था।

सामंता के दोस्त ने ऐन वक्त पर धोखा दे दिया था। जिसकी वजह से उसने नयाना समुदाय के कुछ गणमान्य व्यक्ति बुलाकर समझाने का प्रयास किया था पर वो विफल हो गया था।

वो बिलकुल अकेला पड़ गया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। कैसे अपनी शपथ पूरी करे। इसी प्रश्न का हल जानने के लिए वह सुबह सुबह ही निमंडा से मिलने उसके आश्रम में चला आया था और इस घड़ी उसके सामने बैठा था।

" तुमने अपने समुदाय के कुछ प्रभावशाली लोगों को समझाने का प्रयत्न किया था पर वो विफल रहा क्योंकी तुम्हारा दोस्त अपनी बात से मुकर गया या कहूं कि झूठ बोल गया.. आख़िर कार वो भी तो मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखता है। भला कैसे कोइ अपने समुदाय का बुरा चाह सकता है।"

" मेरे जैसा नीच तो सोच सकता है.. कर सकता है। जिसकी वजह से उसका पूरा समुदाय हज़ारों साल से गुलामी का जीवन जी ने के लिए मजबूर है।" सामंता ने भावुक हो कर कहा।

निमांडा शांत रहा।

" खैर, अब बताओ तुम्हारा अगला कदम क्या होगा?" उसने पूछा।

" मुझे लगता था कि मै उन लोगों को समझा लूंगा। फिर वे साथ होगे तो बाकियों को समझना इजी हो जायेगा। एक बार सारे लोग इकट्ठे हो कर तानाशाही के खिलाफ़ खड़े होगे तो काम आसान हो जाता और हमे हमारा हक मिल जाता।"

" ढाई हजार साल से लोगों की बनी सोच को बदलना कतई आसान नहीं होता। एक तरह से कह सकता हूं बहुत मुश्किल काम है। हमे दूसरी तरफ से सिरा पकड़ना होगा। "

" आपका मतलब है युगांडा से उसकी तानाशाही खत्म करने से है?"

" हा।"

" पर ये भी तो मुश्किल काम है। "

" फिर?"

" मै चाहता हूं एक बार अपने समुदाय के लोग सच्चाई समझ जाय तो युगांडा से लड़ना आसान होगा और उसकी तानाशाही खत्म करना भी।"

" रास्ता कोइ भी चुनो खून खराबा बहुत होगा। "

" अपना पूरा समुदाय एक तरह होता .. हमारी तरफ होता तो युगांडा को झुकना पड़ता हमे हमारा हक देना ही पड़ता। सत्ता परिवर्तन के लिए हमें हमारे लोगों का साथ चाहिए ही चाहिए।

" तुम्हे लगता है जनता के दबाव में वो गद्दी छोड़ देता! वो कभी ऐसा नहीं करेगा। एक मिनट मान लो जनता तुम्हारी बात मान कर उसके खिलाफ़ हो गई तो वह कई पैंतरे अपनाकर अपनी गद्दी बचा लेगा।"

" जानता हूं पर उसे सत्ता छोड़नी पड़ेगी और यहां नयाना समुदाय का शासन चलेगा।"

" जनता ना मानी तुम्हारी बात तो.. ?"

" मानेगी। जरूर मानेगी। "

" अशिक्षित समाज को उसकी सोच के विपरीत कुछ भी समझाना लोहे के चने चबाना होगा।"

" तो चबायेगे। लोहे के, पत्थर के जिसके भी चने चबाने पड़े चबाएगे । बस आप साथ दीजिए। आप नयाना समुदाय को समझाने का प्रयत्न कीजिए। आपका बड़ा प्रभाव है। लोग आपकी बात मानते हैं। मैं भी करूंगा। त्रिवेला भी करेंगी। "

" वो क्यो करेगी? वो तो मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखती है।"

" वो मुझे प्रेम करती हैं। "

" यानी तुम्हारे प्रेम की खातिर अपने समुदाय के खिलाफ़ जाएगी।"

वह चुप रहा।

" हूं। हमारे पास ऐसा कोइ ठोस सबूत नहीं है जो हमारी बात को सच सबित करे। जमन्ता

एक मजबूत जरिया था पर ...ठीक मैं अपने समुदाय के लिए, उनका खोया हुआ सम्मान वापस हासिल करने के लिए लोगों को समझाऊंगा भले ही परिणाम कुछ भी हो। वैसे इस जंग में फिलहाल हम दो लोग ही है।"

" शुरुवात एक ,दो से ही होती है। "

" जानता हूं। वैसे हमारा एक और साथी भी है जिसने अपना काम शुरु भी कर दीया है।"निमांडा ने कुछ रूक कर कहा।

" कौन?"

" कालपुत्र। वह मुण्डक समुदाय के लोगों को और उनका साथ देने वालों को मौत के घाट उतार रहा है और वो भी बेखौफ होकर।"

" पर इस तरह से दो चार दस लोग मारकर कोइ परिवर्तन नहीं किया जा सकता। "

" पर चिंगारी तो है ही.. क्या पता आगे चलकर भीषण आग का काम करें।"

" मुझे ऐसा नहीं लगता।"

" कोइ बात नहीं पर अपनी राह का साथी तो है ही। एक तरह से हमारा काम आसान कर रहा है।"

" हां, ये बात तो है।"

" कहीं तुम ही तो कालपुत्र बनकर दुसरे रस्ते से मुण्डक समुदाय के लोगों को ख़त्म करने में नहीं लगे हो? " अचानक ऐसा प्रश्न सुनकर सामंता चौंक पड़ा।

" नहीं। " फिर फौरन बोला।

" कालपुत्र का जिक्र तुमने ही किया था। बताया था ढाई हजार साल पहले नयाना समुदाय के लोग कालपुत्र शिब्रा की पूजा करते थे। कालपुत्र के बारे में तुम्हारे अलावा जमन्ता को पता है। वो तो हो नहीं सकता क्योंकी वो दूसरे समुदाय से ताल्लुक रखता है। वो अपने लोगों को क्यो मारेगा। इसीलिए उसने टाइम मशीन के बारे में झूठ बोला था। अब बचे तुम?"

" आप इस बात से अनुमान लगा रहे हैं की कालपुत्र के बारे में हमे जानकारी थी इसलिए कालपुत्र मैं! तो मेरे जरिए आपकों भी तो जानकारी थी उस लिहाज से आप भी कालपुत्र हो सकते है।"

" हु। फिर कौन?"

" कोइ भी सताया हुआ हो सकता है। द्विज हो सकता है।"

" पर कालपुत्र की जानकारी उसे कैसे?"

" हो सकता है उसने यू ही अपना नाम कालपुत्र रख लिया हो। और हम समानता होने के कारण कयास लगाए जा रहे हैं।"

वह सोच में पड़ गया।

फिर वे आगे की रणनीति बनाने लगे।

*****

त्रिवेला अपने पिता से हुई बातचीत के बाद अपने कमरे में जाकर काफी देर टहलती रही । अचानक वह कार से अपने प्रेमी से मिलने के लिए निकल पड़ी।

तकरीबन 20 मिनट के बाद उसकी कार सामंता की गैरिज के सामने खडी थी। लड़की कार से उतर कर दनदनाते हुए गैरेज के अंदर घुस गई और आगे उस केबिन में जा पहुंची जहां इस समय सामंता मौजूद था । वह भी कुछ देर पहले ही निमांडा से मिलकर आया था। वह भी बडी देर से गंभीर होकर सोच विचार में डूबा था । ढाई हजार साल की यात्रा करके लौटा था। तब से पूरी तरह बदल चुका । अब वह हमेशा सोचा करता कि अपने समुदाय के लोगों को उनका हक कैसे दिलाए। उसे परिणाम की बिल्कुल परवाह नहीं थी कि उसे क्या होगा। क्योंकि वह जानता था उसकी गद्दारी की वजह से उसका अपना समाज गुलाम बना ।
उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती थी अपने समुदाय के लोगों को भी समझाना ढाई हजार साल पहले लोगों ने मजबूरी में गुलामी स्वीकार की थी । पर अब नही स्वीकार करेगा।

लडकी ने समंता को कुर्सी पर सोच में डूबा बैठा हुआ देखा तो कुछ पल दरवाजे पर खड़ी हो कर उसे प्यार से निहारने लगी। वह उसे बहुत अच्छा लगता था । वह उसे इस तरह न जाने कितनी बार निहार चुकी है । अचानक वह सोच से बाहर आ गया। जैसे ही अपनी प्रेमिका को देखा वह सीधा होकर बैठ गया।

" तुम कब आई?" उसने पुछा।

"अभी आई दो मिनट पहले जब तुम किसी गहरी सोच में डूबे हुए थे!" त्रिवेला मुस्कुरा कर बोली उसके सामने आकर वह बेहद खुश हो जाती थी। जब भी मिलती थी और अदा से मुस्कुराती रहती थी। यही अदा सामंता को बहुत-बहुत पसंद थी पर अब कुछ दिनों से उस पर कोई असर होता नहीं दिख रहा था । लडकी यह बात जानती थी इसीलिए उसने पुनः कहा,"कैसे हो.. तुम्हारे चेहरे से लग रहा है तुम कुछ ठीक नहीं!"

"नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूं।"

"मुझे लग रहा है तुम पहले से कुछ कमजोर हो गए हो ?"

"अरे नहीं ,ऐसा कुछ नहीं। मै पहले जैसा ही हूं ।"

" अब पहले जैसे तो बिल्कुल भी नहीं हो।" लड़की की आवाज़ मे थोडा दर्द झलका।

वह खामोश रहा। फिर बोला," तुम्हे वजह तो मालूम है। एनी वे तुम कैसी हो?"

"मैं भी ठीक ही हूं । पहले तुम मुझसे कितनी बातें करते थे हम लोग साथ नहीं होते थे तो फोन पर बातें करते थे अब मैं सामने बैठी हूं तो तुम मुंह फुला कर बैठे हो। तुम्हारे चेहरे से नहीं लग रहा की मेरे आने से तुम्हे खुशी हुई हो?"त्रिवेला ने बनावटी शिकायत की।

"नहीं ऐसा नहीं है । मेरे दिल में तुम्हारे लिए पहले भी प्रेम था आज भी है और मरते दम तक रहेगा पर मैंने तुम्हें बताया तो था मेरे जीवन का लक्ष्य अब बदल गया । उसमें शायद तुम्हारे ..प्रेम के लिए भी जगह नहीं है । तुम मुझे भूल जाओ तो बेहतर होगा । कुछ दिन बुरा लगेगा फिर.. शायद तुम्हारी जिंदगी में कोई और भी बेहतर इंसान आ जाए । मेरा रास्ता कांटो भरा है। मेरे साथ चलने पर सिर्फ कष्ट ही मिलेगा और मैं ऐसा नहीं चाहता। "

" यह सुनकर अच्छा लगा कि तुम्हे मेरी कितनी फिक्र है।" त्रिवेला की आंखे डबडबा आई। पर बात उसने व्यंग में लपेट कर की थी। चहरे पर फीकी मुस्कान के साथ।

"मैं भी तुम्हें कभी कष्ट में नहीं देख सकती और एक बात याद रखो मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ भी होगा । आइंदा कभी मुझे भूलने की बात मत करना और मेरी जिंदगी में दूसरा इंसान कभी नहीं आएगा । तुम से बेहतर मेरे लिए कोई नहीं।"

वह खामोश हो गया।

कुछ पल कमरे में सन्नाटा पसरा रहा है। अचानक उसने उससे कहा,"चाय पियोगी, मगवाऊ?"

त्रिवेला ने यह सोचकर हामी भर दी इसी बहाने उसके पास ज्यादा देर बैठने का मौका मिलेगा।

उसने आवाज देकर बाहर काम कर रहे लड़कों में से एक को बुलाया और बाहर से चाय लाने के लिए बोल दिया।

"एक बात बोलूं ? तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?"अचानक त्रिवेला उसके चेहरे पर नज़रें गड़ा कर बोली।

" क्या?"

"लगता है तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है । तुम यह सोचते होंगे कि मैं मुण्डक समुदाय से हूं । यकीन मानो मैं तुम्हारे साथ हु। मैं सच के साथ हूं । मुझे तुम पर पूरा भरोसा है तुमने ढाई हजार साल पहले की जो कहानी बताई मुझे उसे पर एतबार और मैं मानती हूं की मुंडक समुदाय गलत । और बदलाव होना चाहिए। जिसका जो हक है उसे मिलना चाहिए।"

"तुम ऐसा मत सोचो कि मुझे तुम पर यकीन नहीं अगर मुझे तुम पर यकीन नहीं होता तो मैं तुम्हे सब सच क्यों बताता । मैं तुमसे पहले भी बहुत प्रेम करता था , करता हूं। मुण्डक समुदाय से सिर्फ तुम वो शख्स हो जिस पर मैं यकीन कर सकता हूं । जमन्ता भी था पर..।"

" हूं। वैसे तुमने कहा था कि तुम अपने लोगों को समझाओगे। तुमने कुछ लोगों को समझाने के लिए बुलाया भी था मुझे पता चला है पर उन लोगों को तुम कुछ भी समझा नहीं सके ..ऐसा क्यों?"

"तुम्हें यह बात कैसे पता चली?"

" जमन्ता मुझे मिला था एक दिन रास्ते में तब उसने ही बताया था!"

"तो उसने यह नहीं बताया कि मैं ऐसा क्यों नहीं कर पाया?"

" ना। उसने केवल उतना ही बताया और आगे बढ़ गया था। मैंने भी शायद ध्यान नहीं दिया इस बारे में। मैंने सोचा तुमसे मिलकर पूछूंगी। हालांकि मुझे भी इस बात का इल्म था कि ढाई हजार साल से लोगों की जो सोच बन गई है उसे बदलना मुश्किल है शायद यही वजह रही होगी।"

" असली वजह जमन्ता था । मैंने उसे वहां बुलाया था ताकि वह सच्चाई को बता सके। मेरी बात को एक गवाह एक सबूत मिल जाता जिसमें लोगों में मेरा प्रभाव बढ़ जाता है और वह बात मानने की तैयार हो जाते हैं पर उसने अपनी इसी बात से मुकर गया कि उसने कोई टाइम

मशीन बनाई है । बाकी ढाई हजार साल की यात्रा की बात तो खुद ब खुद बेमानी हो गई। यानी मैं सबके सामने झूठा साबित हो गया। लोगों को लगा कि मैं उन्हें मुण्डक समुदाय के खिलाफ बेवजह भड़का रहा हूं अपनी किसी निजी स्वार्थ के कारण!"

" ओह। पर उसने ऐसा क्यों किया?"

"वह नहीं चाहता कि यहां पर लड़ाई झगड़ा हो, खून खराब हो एक सुंदर दूसरे समुदाय के खिलाफ खूनी संघर्ष करें पर अपना हक लेने के लिए ये सब हो सकता है पर मुझे लगता है कि वह शायद इसलिए झूठ बोल गया क्योंकि वह नहीं चाहता कि इस देश से मुंडक समुदाय का शासन खत्म हो और नयाना समुदाय का शासन हो। उसे सच्चाई पता है फिर भी!"

"जन्मता मुंडक समुदाय से ताल्लुक रखता है और उसने तुम्हारे साथ धोखा किया कहीं इसीलिए तुम मुझ पर भी तो शक नहीं कर रहे क्योंकि मेरी मुंडक समुदाय से ताल्लुक रखते इसलिए तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे साथ हूं । तुम्हें डर है कि कहीं मैं भी गद्दारी न करूं पर यकीन करो मैं तुम्हारे साथ कभी गद्दारी नहीं करूंगी । मैं नयाना समुदाय को उसका हक दिलाने में तुम्हारी पूरी मदद करूंगी ।

"हां पर कहने और करने में बड़ा फर्क होता है कभी-कभी नौबत ऐसी आ जाती है कि तुम्हें अपनों के खिलाफ भी खड़ा होना पड़ेगा उसमें तुम्हारे पिताजी शामिल हो सकते हैं!"

"अगर वह भी गलत का साथ देंगे तो मैं उनके खिलाफ भी खड़ी हो जाऊंगी। मुझे इस बात की परवाह नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूं। अच्छा एक बात का सही सही जवाब देना। हालांकि मैं तुम्हें इसके लिए बाध्य नहीं कर रही हूं पर मुझे एकदम सच बताओ मुझे?"

" क्या?"

"तुम्हें उसे अज्ञात कातिल के बारे में तो पता ही होगा जो मुण्डक समुदाय के लोगों को और उनके साथ देने वाले लोगों को मौत के घाट उतार रहा है । लोगों को कत्ल करने के बाद उनके सीने पर कालपुत्र लिखता है कहीं तुम ही तो वह कालपुत्र नहीं हो?"

"तुम्हें मुझ पर यकीन है?" कुछ पल सोच कर वह बोला।

" हा।"

"तो सुनो वह कातिल मैं नहीं हूं!"

"तुमने बताया था कि ढाई हजार साल पहले नयाना समुदाय कालपुत्र शिब्रा को बहुत मानता था । पूजा अर्चना करता था और इस नाम के बारे में आज से पहले किसी को कुछ पता नहीं था तो फिर कातिल सबके सीने पर कालपुत्र क्यों लिखता है!"

"यह तो कातिल को ही पता होगा!"

"जिस शब्द के बारे में ढाई हजार साल पहले लोगों को मालूम था या यह ढाई हजार साल से किसी को नहीं मालूम था सिर्फ तुम्हें और तुम्हारे दोस्त को पता था ..तो फिर कौन और क्यों कालपुत्र का प्रचार कर रहा है?"

"तुम बोल रही हो इस बारे में जमन्ता को भी पता है!"

"वह मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखता है! तुम्हें लगता है कि वह ऐसा कार्य करेगा अगर उसे

ऐसा कुछ करना ही होता तो लोगों सामने झूठ क्यों बोलता !"

सामंता को कोई जवाब नहीं आया पर फिर भी उसने दिमाग लगाकर एक आईडिया दिया,"यह संयोग मात्र हो सकता है की कातिल सबके सीने पर कालपुत्र लिखता है यानी खुद को कालपुत्र दिख रहा है । हो सकता है उसने यह नाम कहीं सुन रखा हो उसे अच्छा लगता को ..इसीलिए!"

"मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है इसलिए मैं मान लेती हूं कि तुम जो कह रहे हो वह सच है और इसीलिए तुम्हें बता दूं कि काल पुत्र को लेकर मुंडक समुदाय में काफी भारी हलचल है । सिर्फ हलचल ही नहीं बल्कि उसे किसी भी तरीके से पकड़ने का भी प्रबंध किया जा रहा है । नयाना समुदाय के लोगों से भारी पूछताछ चल रही है । जिन पर जरा भी शक होता है उनके साथ बहुत सख्ती बरती जा रही है। क्योंकि उन्हें लगता है कि नयाना समुदाय का ही कोई शख्स है जो कालपुत्र बनकर मुण्डक समुदाय के लोगों को और उनका समर्थन करने वाले लोगों को मौत के घाट उतार रहा है!"

" तुम इस बारे में मुझे क्यों बता रही हो उससे मेरा कोई लेना देना नहीं है।"

"अरे उससे लेना देना नहीं है अपने समुदाय से तो लेना देना है। उसकी वजह से उन लोगों को बेवजह परेशान किया जा रहा है मारा जा रहा है क्या इस बात से भी तुम्हें कोई लेना-देना नहीं है?"

अब वह काफी गंभीर हुआ।

" एक बात पूछूं.. कहीं तुम ही तो नही हो कालपुत्र?"अचानक त्रिवेला ने यह कहकर विस्फोट सा किया । सामंत ने फौरन उसकी ओर देखा । कुछ कहने के लिए मुंह खोल फिर पता नहीं क्या सोचकर एक ठंडी आह भर कर रह गया।

" बोलो.. अगर ऐसा है तो मुझे कोई दिक्कत नहीं है। मैं तुम्हें समय-समय पर वार्निंग देती रहूंगी ताकि तुम पुलिस से बचे रहो और अपना काम करते रहो!"

"ऐसा कुछ नहीं है ,ऐसा कुछ नहीं है। मैं काल पुत्र नहीं हूं। मेरा इरादा अपने समुदाय के लोगों को जागृत करके सबको इकट्ठा करके तानाशाही के खिलाफ बिगुल फूकना है। इस तरह कालपुत्र की तरह दो-चार लोगों को मारने से मेरा मकसद हल नहीं होगा!"

" हुं। ठीक है फिर। वैसे तुमने जो रास्ता चुना है वह एक तो मुश्किल है दूसरा उसमें बहुत टाइम लगेगा पता नहीं तुम्हारे लोग तुम्हारी बात समझेंगे कि नहीं। वैसे तुमने जो रास्ता चुना है वही सही है मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।"

" थैंक्स।"

"तुम मुझे भी अपने साथ रख लो शायद तुम्हारे लोगों को समझाने में मैं तुम्हारी मदद कर पाऊं!"

"नहीं, मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकता । मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कोई प्रॉब्लम हो जो रास्ता मैंने चुना है वह तुम्हें पता ही है कितना जटिल है!"

"लगता है तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है कि मैं तुम्हारा साथ दे पाऊंगी कि नहीं!"

"ऐसा कुछ नहीं है। मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है फिर मुझे जब भी तुम्हारी जरूरत होगी मैं तुम्हे बेहिचक बताऊंगा । अब प्लीज दोबारा मत कहना कि मुझे अपने साथ रखो!"उसको नाराज होता देख वह शांत हो गई।

*†**

इस समय पुलिस वालों का एक्शन बहुत तेज हो चुका था । नयाना समुदाय के लोगों से कड़ाई से पूछताछ हो रही थी जिन पर जरा भी शक होता था उन्हें उठाकर थाने लाया जाता था और उनकी जमकर ठुकाई की जाती थी पर उन्हें अपना टारगेट कालपुत्र ढूंढे नहीं मिल रहा था।

दूसरी तरफ पुलिस को द्विज की भी तलाश थी। पर इसमें भी पुलिस को कोई सफलता हाथ नहीं लग रही थी।

एक पुलिस थाने में अभी-अभी नयाना समुदाय के कुछ नवयुवकों को पकड़ कर लाया गया था और सभी को लॉक अप में बंद करके कड़ी पूछताछ चल रही थी। मारपीट की वजह से उन युवकों की चीखे सुनाई दे रही थीं। पर उन्हें नहीं पता था कि कालपुत्र कौन है, क्या है । वे सब इनकार कर रहे थे कि उनमें से कोई भी उसे नही जानता । पर पुलिस वाले बड़ी बेरहमी से उन सबको पीट रहे थे।

कुछ देर बाद उन सबको रात के उस वक्त थाने के बाहर खुले मैदान में लाया गया और वहां पेड़ में उल्टा लटका दिया गया । फिर वहां पर तैनात सात आठ पुलिस वाले सभी उन्हें पीटने में लग गए और उनकी चीखें फिर से एक बार फिजा में गूंजने लगीं । उनके नंगे बदन लाल पड़ चुके थे । कहीं-कहीं तो खाल भी उधड़ चुकी थी और उनसे खून भी टपकने लगा था। वह सब पूरी तरह असहाय नजर आ रहे थे । पुलिस वालों को उन पर बिल्कुल भी तरस नहीं आ रहा था। कुछ देर तक उनकी पिटाई करने के बाद उन्हें पेड़ से नीचे उतारा गया । उनके कपड़े दिए गए ताकि वह पहन सके और फिर उन्हें सख्त हिदायत दी गई कि अगर उनमें से कोई कालपुत्र निकाला तो उसकी खैर नहीं या अगर उसके बारे कुछ जानकारी पता चले तो अवश्य बताएं जब भी पता चले । इसके बाद उन्हें वहां से रुखसत कर दिया गया। कुछ पुलिस वाले थाने के अंदर चले गए। पुलिस का हेड और उसके अंडर काम करने वाले दो पुलिस वाले वहीं कुर्सियों पर बैठे रहे । उन्होंने वहीं पर शराब की बोतल मंगवाई थी। कांच के तीन गिलास और फिर उसी में डालकर वे शराब का इंजॉय करने लगे। 2,3 सिपाही उनसे कुछ दूर टहल रहे थे। इस समय थाने की 6 फीट ऊंची बाउंड्री पर अंधेरे में बाहर से कोई चढ़ा और फिर बाउंड्री पर सीधा खड़ा हो गया । वह वही लबादा धारी था यानी कालपुत्र था जिसके हाथ में धनुष बाण थे । पूरा थाना उस समय अंधेरे में डूबा हुआ था शायद लाइट चली गई । बस चांद की चांदनी की रोशनी थी और थाने के मुख्य गेट के ऊपर एक छोटा सा बल्ब लगा था सूर्य ऊर्जा वाला जिसकी रोशनी हल्की रोशनी इधर-उधर बिखरी हुई थी जो बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं थी। ऐसे में उस लवादा धारी ने बाउंड्री पर चढ़कर कुछ पल उन सबको देखा और फिर एक पुलिस वाले को लक्ष्य करके तीर छोड़ दिया । तीर सीधा पुलिस वाले के पीठ से टकराया और आर पार हो गया। वह कटे पेड़ की तरह जमीन पर धड़ाम से गिरा और उसी के साथ पूरा थाना रोशन हो उठा। लाइट आ गई थी। सभी पुलिस वाले एक्शन में आ गए । कुछ पुलिस वाले अंदर से राइफल लेकर बाहर की तरफ दौड़े। रोशनी में बाउंड्री पर खड़ा हुआ है लबादा धारी उन सबको स्पष्ट तौर पर दिखा और कोई चिल्लाया,"वो रहा वहां बाउंड्री पर! निशान लगाओ! खत्म करो

उसको!"

पर इससे पहले कोई निशाना लगाता पर कालपुत्र भी बेहद फुर्तीला निकला। वह तुरंत पलटा और बाउंड्री के उस पार खड़े अपने घोड़े पर बैठकर सरपट दौड़ लगा दी।

"वह भाग रहा है । दौड़ो, पकड़ो, फायर करो उस पर!"

सभी पुलिस वाले मुख्य गेट की तरफ भागे पर जब गेट खोलकर बाहर निकले तब तक वहां कोई नहीं था । वह गधे के सिर से गायब हुए सींग की तरह गायब हो चुका था। उन्हें बस दूर से दिखाई दिया की एक घोड़ा अंधेरे में भागता चला जा रहा है । पुलिस वालों ने कई फायर किए पर सब बेकार रही।

" ओह शिट!"

****

"हमने काफी अच्छा प्लान बनाया था उस कालपुत्र को पकड़ने के लिए। यह समझिए कि हमारे जाल में फस गया था। पर वह भाग निकला!"उस थाने का हेड फलाने इस समय मेयर के घर पर मौजूद था यानी त्रिवेला के घर पर मौजूद था और उसके रूबरू होकर बोल रहा था,"मुझे पहले ही लगता था की मुण्डक समुदाय के लोगों पर हमला करके कालपुत्र भाग जाता है इसीलिए मैंने नयाना समुदाय के कुछ लड़कों को उठाकर उन पर थाने में मारपीट करवाई थी। मुझे ऐसा लगता था कि शायद काल पुत्र जरूर आएगा और आया भी । हम लोग उसे आसानी से पकड़ लेते पर..!"

"फिर वह भाग कैसे गया?"

"शायद हमने कुछ जल्दबाजी दिखाई या वह बेहद चतुर, दिलेर निकला। "

"तुम्हें इस बात की हैरानी नहीं है कि आज के जमाने में जब लोग बंदूक का इस्तेमाल करते हैं वह तीर और धनुष का इस्तेमाल कर रहा है । अगर धनुष और तीर की जगह उसने गोली का इस्तेमाल किया होता तो तुम सब का काम तमाम हो गया होता पर वैसा नहीं कर रहा तो तुमने जानने की कोशिश नहीं की क्यों?"

"शायद बहुत अच्छा निशानेबाज होगा या उसे अपने तीरंदाजी पर बहुत भरोसा होगा या फिर शायद गोली चलाना नहीं जानता होगा?"

मेयर ने उसकी ओर ऐसे देखा जैसे पागलों की ओर देख रहा हो।

"तुम्हें लगता है कि आज के जमाने में कोई ऐसा भी हो सकता है जो गोली ना चला पता हो !"

"कई सारे लोग हैं जो गोली चलाना नहीं जानते हैं.. जानते भी है तो ठीक से निशाना लेना नहीं जानते शायद यही वजह होगी!"

"जैसे उसने तीर चलाना सीखा वैसे गोली चलाना क्यों नहीं सीखा? या सीख नहीं सकता था?"

थानेदार कुछ पल के लिए हड़बड़ा गया फिर बोला,"बिल्कुल चला सकता है.. क्यों नहीं चला सकता.. सीख भी सकता है!"

"पर वह धनुष बाण चलाता है!"

"मुझे लगता है आप यह कहना चाहते हैं कि वह कालपुत्र जो भी कोई है जरूर जंगलों में रहने वाले लोगों से ताल्लुक रखने वाला है..!"

नयाना समुदाय के कुछ लोग आदिवासी की तरह जंगलों में भी रहते थे जो धनुष बाण बहुत अच्छा चला लेते थे । मेयर का इशारा उसी तरफ था।

"वहां जाकर भी पता करो!"

"वह तो कर लूंगा पर धनुष बाण की अगर बात की जाए तो हमारे स्कूल कॉलेज में भी तो ये सिखाया जाता है। कंपटीशन कराया जाता है निशानेबाजी का। क्या उनमें से से भी कोई हो सकता है!"

"बिल्कुल हो सकता है। जितने भी ऐसे लोग है उन सब को चेक करो । देखो उनमें कौन है कालपुत्र है भी या नहीं।"

" अगली बार में बचना नहीं चाहिए । युगांडा के बेटे को विदेश से आने में बस दो ही दिन बाकी है वह नहीं चाहता कि यहां पर किसी भी प्रकार के अशांति हो , स्थिरता हो।"

" जी।"

***

सामंता ने निमांडा से अपने समुदाय के लोगों को समझाने के लिए रिक्वेस्ट किया था और उसने उस रिक्वेस्ट को स्वीकार भी कर लिया था । उसी के तहत उसने अपने प्रभाव से कई लोगों को समझाया और कुछ लोगों को अपने आश्रम बुलवाया था और आश्रम के एक बड़े से कमरे में उन सब के साथ मीटिंग कर रहा था । उसके पास ही वह भी बैठा था । उसकी बात सुनने के लिए तकरीबन 20 लोग वहां मौजूद थे।

"आप सब लोगों को यहां फिर से बेहद महत्वपूर्ण बात करने लिए बुलाया गया है पर उसके बारे में चर्चा करें इससे पहले मैं आपसे एक बात कह देना चाहता हूं कि किसी भी नतीजे पर पहुंचने से पहले मेरी बात खत्म होने दे । मेरी बात को पूरा सुने और जिसके मन में जो शंका हो उस पर सवाल करें क्योंकि मामला हम सब का है ,पूरे नयाना समुदाय की भलाई का है।

सभी लोग एक दूसरे की तरफ देखने लगे । उन्हें भी लगने लगा शायद सच में बेहद महत्वपूर्ण बात ही है। तभी तो निमांडा ने उन्हें वहां बुलवाया है । उन लोगों पर निमांडा का अच्छा खासा प्रभाव था । इसीलिए वे बिना किसी हील हुज्जत के वहां पर उपस्थित हो गए थे और उसकी बात सुनने के लिए तैयार थे। सामंता का तो पहला प्रयास विफल रहा था पर उसे लगता था कि सफल होगा।

कमरे में पूर्ण रूप से सन्नाटा पसरा हुआ था अब । सब सुनने के लिए बड़े बेचैन जान पड़ते थे कि आखिर निमांडा क्या बात करना चाहता है।

"मैंने आप सबको यहां इसलिए बुलाया है क्योंकि मैं भी आप लोगों के समुदाय से ही आता हूं और आप लोगों की तरह ही अपने समुदाय का भला चाहता हूं। चाहता हूं कि हमारा नयाना समुदाय दिन दूनी रात चौगुनी उन्नत करें, प्रगतिशील बने अमीर बने, हमारी भी लाइफस्टाइल मुण्डक समुदाय के लोगों की तरह बेहतरीन हो.. क्या आप सब यह नहीं चाहते हैं?"

"अच्छा जीवन जीना कौन नहीं चाहता है निमांडा महोदय?"वहां पास से सभी लोगों में से एक तुरंत ही बोल पड़ा । बाकियों ने भी उसका समर्थन किया।

"मैं आप लोगों से पूछता हूं की नयाना समुदाय जो जीवन यहां पर जी रहा है क्या वह बेहतर है?"

सभी लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे।

"बोलिए, बताइए तभी बात आगे बढ़ेगी!"

" नहीं। नैना समुदाय के लोगों का जीवन बेहतर नहीं है।"उनमें से किसी एक ने कहा तो बाकियों में से भी काफी लोगों ने कहा ।

"इसकी वजह जानते हैं आप?"

"हमारा काम मुण्डक समुदाय के लोगों की सेवा करना है। यह काम हमारे पूर्वज भी हजारों साल से करते आ रहे हैं क्योंकि मुंडक समुदाय के लोगों ने खुद मुण्डक शिब्रा ने गंडक और दंडक के अत्याचारों से हमारे समुदाय को मुक्त किया था हमें अच्छा जीवन जीने के लिए अवसर दिया था!"

"तो क्या हम लोग अच्छा जीवन जी रहे हैं? क्या हमारे पास जीने बेहतरीन साधन है ,बेहतरीन शिक्षा है जो मुण्डक समुदाय के लोगों के पास है?"

" नहीं हैं।"

" क्यों.. क्योंकि हमें हजारों साल से बरगलाया गया है ,हमें झूठ बताया गया है कि हम मुण्डक समुदाय के लोगों की सेवा करने के लिए ही पैदा हुए जबकि हकीकत में ऐसा नहीं है । हर इंसान एक बेहतर जिंदगी जीने के लिए पैदा होता है और उसे बेहतर जिंदगी जीने का मौका मिलना भी चाहिए । हमारे समुदाय को हजारों साल से बेहतर जिंदगी जीने का कोई भी मौका नहीं मिल रहा। जानबूझकर हमें गुलाम बनाया गया। हमारी सोच को, समझ को उल्टी दिशा में मोड़ा गया इसीलिए तो आज तक कभी विरोध नहीं किया। मुंडक समुदाय के लोग हमारे दिमाग में गुलामी की सोच भर कर खुद ऐश की जिंदगी जीते हैं ..क्या यह सही है?"

"मुंडक समुदाय के लोग हमारे समुदाय के लोगों से महान होते हैं। वह मुण्डक शिब्रा से ताल्लुक रखते हैं शायद इसलिए उन्हें बेहतर जिंदगी जीने का ज्यादा अधिकार है!"एक युवक ने धीरे से कहा । निमांडा उसकी ओर घूम कर बोला,"अगर मैं कहूं कि यह बात गलत है मुण्डक समुदाय के लोग हम लोगों से कतई बेहतर नहीं है ?"

"कैसे.. क्या हमारे पूर्वज गलत थे ? क्या यह बात गलत है कि गंडक और दंडक शैतानों से मुंडक शिब्रा ने हमें आजाद करवाया था.. नरक की जिंदगी जी रहे हमारे पूर्वजो को एक बेहतर जिंदगी जीने का अवसर दिया था। क्या यह सब कुछ गलत है? अगर हम उन सबकी मुण्डक समुदाय के लोगों को बड़ा मानते हुए उनकी सेवा कर रहे हैं तो इसमें गलत क्या है? उन सबका हम पर ,हमारे पूर्वजों पर भारी एहसान है। मुंडक शिब्रा ने हमारे पूर्वजों को उन दोनो शैतानों से मुक्त न कराया होता तो शायद आज न तो हम होते और ना हमारा समुदाय ही होता!"

"अगर मैं कहूं कि तुम्हारी सारी बातें गलत है तब?"

"ऐसे कैसे ? आपको अपनी बात साबित करनी पड़ेगी?"यूवक ने ज़ोर दिया।

"तुम्हें मुझ पर भरोसा है पहले तो यह बताओ?"

" हां आप पर तो हमारा टूट विश्वास है । भरोसा ना होता तो आपके एक बार कहने पर ही हम यहां ना गए होते?"

"तो फिर मेरा यकीन करो मैं जो कह रहा हूं वह एकदम सही है। ढाई हजार साल से हमें जो कहानी सुनाई जा रही है वह गलत है । झूठ है। हकीकत तो यह है कि नयाना समुदाय उस समय सबसे विकसित था ,सबसे उन्नतशील था और गंडक कोई शैतान नहीं बल्कि हमारे समुदाय के ही सरदार थे। दंडक उनका बेटा था और वे लोग समुदाय को अच्छे देख रेख कर रहे थे। उनके राज्य में सब सुखी थे। सब खुश थे। गंडक एक महाबली, महायोद्धा थे पर नयाना समुदाय के कुछ गद्दारों की वजह से,"यह बात कहते हुए एक उड़ती हुई नजर उसने सामंता पर भी डाली और अपनी बात आगे बढ़ाई और कहा,"गद्दारों की वजह से ही सब कुछ बर्बाद हो गया, तबाह हो गया। उन गद्दारों ने दूसरे टापू पर रहने वाले शैतान ,जानवरों की तरह खूंखार पर बेहद ताकतवर मुण्डक की मदद से धोखे से गंडक और उनके बेटे दंडक को मौत के घाट उतार दिया था । गद्दार और मुण्डक के बीच एक समझौता हुआ था कि मुण्डक वहां से अपने खाने पीने का सामान लेकर वापस चला जाएगा पर वह दुष्ट जिसे हम लोग मुंडक शिब्रा के नाम से आज जानते हैं ,पूजा करते हैं पक्का शैतान निकला । उसने उन गद्दारों को भी मार दिया और नयाना समुदाय पर हुकूमत करने लगा । अच्छा, वैभव शाली जीवन जी रहे हमारे पूर्वज उसके गुलाम बन गए हमेशा हमेशा के लिए। बाद में कुछ ऐसी बातें गढ़ी गई और सबको बताया गया कि मुंडक शिब्रा है। गंडक और दंडक शैतान थे जो हमारे समुदाय पर अत्याचार करते थे और उन दोनों के अत्याचारों से मुंडक ने हमारे पूर्वजों को मुक्त कराया । यह सब बातें इसलिए फैलाई गई ताकि यह सब बातों की वजह से ही हमारा समुदाय हजारों साल तक गुलाम बना रहे और मुण्डक समुदाय के लोगों की खासकर मुण्डक के वंशजो कि तानाशाही हुकूमत चलती रहे। और उसकी यह बात सच साबित हुई । हमारा समुदाय ढाई हजार साल से गुलामी का जीवन जी रहा है और हमें इस बात का अहसास तक नहीं। जबकि हालात सबके सामने है । हमारे लोगों की शिक्षा दीक्षा भी ठीक से नहीं कराई जाती । आर्थिक रूप से भी संपन्न नहीं होने दिया जाता । हमारे लोग ऊंचे पदों पर नहीं हैं। हमको लगता है कि ऐसा मुण्डक शिब्रा की इच्छा है और उसे अपना आराध्य मानकर हम आंख बंद कर सब मानते चले आ रहे हैं। जबकि हकीकत ये कि हमारे समुदाय के लोगों को जानबुझ कर एक सोची समझी रणनीति के तहत कमजोर किया गया और आज भी किया जा रहा है। ये साज़िश ढाई हजार साल से चल रही है। हमारे लोग हर प्रकार से कमजोर हैं बल्कि कमजोर किए गए ताकि मुंडक समुदाय और उनके लोगों की तानाशाही के खिलाफ कुछ ना कर सके।"

कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया।

"आप अपनी यह बात साबित कर सकते हैं जो कह रहे हैं कि ढाई हजार साल पहले हमारे समुदाय पर गंडक और दंडक राज करते थे। वे दोनों हमारे समुदाय के थे। मुंडक शिब्रा को आप शैतान बता रहे हो । जबकि हम तो बचपन से यही सुनते आ रहे हैं कि गंडक और दंडक शैतान थे। वे हमारे समुदाय पर अत्याचार करते थे। मुण्डक शिब्रा ने आसमान से धरती पर अवतरित होकर हमारे समुदाय की रक्षा की थी। हम कैसे यकीन कर ले कि आप जो कह रहे

हैं वह सच है । इसमें आपकी कोई चाल हो सकती है!"वहां उपस्थित लोगों में से एक ने खड़े होकर सवाल किया।

"मैने बताया तो कि ढाई हजार साल पहले ये रणनीति बनाई गई थी जिसका मकसद हमें, हमारे समुदाय को सदियों तक गुलाम बनाए रखने की थी।"

"क्या पता आप अपने किसी निजी स्वार्थ के लिए हमें मुण्डक समुदाय के विरुद्ध भड़का कर मुंडक समुदाय के लोगों से लड़वाना चाहते हो?"

"मुझे ऐसा कुछ करना होता तो अब तक क्यों नहीं किया । मैं पहले भी कर सकता था पर सोचो जरा .. मैंने क्यों नहीं किया क्योंकि तब मेरी सोच भी तुम लोगों की तरह ही थी। मुझे भी उतना ही पता था जितना की तुम्हें है पर अब मुझे सच्चाई पता चली है और इसीलिए मैं चाहता हूं हमारे लोगों के साथ इंसान हो और उन्हें उनका हक मिले। इस देश पर राज करने का हक हमारे लोगो को है। इस देश में नायना समुदाय का शासन था। हमारे पूर्वजों ने यहां सदियों तक राज्य किया है। यह देश हमारा है। और हम आज गुलामी का जीवन जी रहे हैं। क्या आप लोग नहीं चाहते कि हमारे हीरो ,सरदार गंडक और दंडक को उनका खोया हुआ गौरव, सम्मान मिलना चाहिए। खुद हमारे समुदाय के लोगों को बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए? इस देश में नायना समुदाय के लोगों का शासन होना चाहिए ?"

एक बार फिर कमरे में सन्नाटा पसर गया।

"पहले आप यह तो बताइए की आपको यह सब कैसे पता चला? जैसे आप बार-बार सच्चाई पता चली , सच्चाई पता चली कह रहे हैं उसे साबित करिए!"

निमाड़ा ने एक नजर सामंता पर डाली। वह जानता था कि ऐसी सिचुएशन आएगी । हजारों साल से लोगों के दिमाग में जो सोच बनी हुई है उसे तोड़ना इतना आसान नहीं। एक लंबे वक्त के साथ लोग जो जीवन जीते चले आ रहे हैं वे उसे ही सच मान लेते है । इंसान की मान्यताएं ही वे चाबी होती है जिससे वह चलता है और फिर जब उनकी उचित शिक्षा दीक्षा न हो तो उन्हें अहसास भी नहीं होता कि जो वे जीवन जी रहे हैं वो गुलामी का है। खुद को गुलाम समझने लगते हैं। कोई उन्हें मालिक बनाने की बात करें तो उनकी समझ में नहीं आती।

" अब तुम बताओ भाई!"उसने पास बैठे सामंता की ओर इशारा किया है तो उसने गला खाकारा और अपनी जगह पर खड़ा हो गया । सबकी ओर उसने एक सरसरी नजर डाली ।

"निमांडा जी ने अभी आपके सामने जो भी बातें कही वह सब सच है। ढाई हजार साल पहले इस देश में नयाना समुदाय का शासन था। पर कुछ चंद गद्दार की वजह से ," इतना कहते वक्त उसके पूरे शरीर में एक एक अजीब सी झनझनाहट सी हुई। पर उसने उसे उजागर नहीं होने दिया ,"सब कुछ तबाह बर्बाद हो गया । गद्दारों की वजह से हमारे सरदार गंडक को छल से मार दिया। इसके बाद सभी लोगों को गुलाम बना लिया गया । जो गुलाम बनने के लिए राजी नहीं थे उन्हें बेरहमी से मार दिया गया। और बाद में ऐसी बातें गढ़ी गई जो साबित करे मुंडक शिब्रा था । गंडक और दंडक शैतान थे और लोगों पर अत्याचार करते थे। मुण्डक शिब्रा ने उन शैतानों का अंत करके हमारे समुदाय को बचाया। मुंडक जो शैतान था एक खूंखार जानवर था शिब्रा बन बैठा । यही बात धीरे-धीरे लोगों के दिमाग में बैठती चली गई क्योंकि बिठाई गई। और उन्हें सच लगने लगी । इतना तो आप लोग समझते ही होंगे कि किसी भी बात को इंसान को बार-बार बताई जाए तो उसे वही सच लगने लगता है और वह इंसान अगर

शिक्षित भी ना हो, कम पढ़ा लिखा हो अल्प विकसित दिमाग हो तब तो उसे झूठी बातें और सच बातों फर्क करना बिल्कुल भी नहीं आएगा। फिर उसकी कई पीढ़ियां गुजर जाएगी और आगे आने वाली पीढ़ियों को भी वही सच लगने लगता है।"

"हां यह बात तुम्हारी सही है पर अब यह साबित करो कि तुम दोनों लोग जो कह रहे हो वह सच है । कैसे तुम लोगों ने जाना की ढाई हजार साल पहले क्या हुआ था?"

"मैंने ढाई हजार साल पहले की यात्रा की हुई है । मैं उस कालखंड में जा कर आ चुका हूं । मैंने खुद अपनी आंखों देखा है!"

सब उसकी और हैरानी से देखने लगे । सब में से कुछ लोग व्यंग से हंसी हंसने लगे । देखते देखते पूरे हाल में ठहाके लगे लगे।

"आप लोगों को लगता है मैं झूठ कह रहा हूं पर यकीन मानिए झूठ नहीं है हमने एक ऐसी मशीन बनाई थी जो टाइम ट्रेवल करती है । उस मशीन के जरिए हम भविष्य में और भूतकाल के किसी भी कालखंड में जाकर जा सकते हैं!"

सब शांत हो गए।

"अच्छा तो तुम यह कहना चाहते हो कि तुमने एक मशीन बनाई जिसके जरिए तुम ढाई हजार साल पहले कि उस कालखंड में होकर आए और वहां जो कुछ घटा तुमने सब कुछ अपनी आंखों से देखा?"

" हां।"

"पर तुम तो वैज्ञानिक नहीं हो। फिर टाइम मशीन कैसे बना ली?"

"टाइम मशीन मैंने नहीं बनाई मेरे दोस्त ने बनाई है जो की वैज्ञानिक है!"

"वह कहां है? उसे मिलवाओ वह भी तो आकर हम सबको बताएं जो तुम दोनों लोग कह रहे हो?"

"वह यहां नहीं आ सकता क्योंकि वह मशीन के बारे में कुछ भी बताना नहीं चाहता!"

"अरे पर क्यों, क्यों नहीं बताना चाहता?"

"वह अपनी बात से मुकर गया है शायद इसलिए क्योंकि वह मुंडक समुदाय से आता है वह नहीं चाहता कि हमारे समुदाय के लोग जागरुक हो और अपने हक के लिए लड़े?"

एक बार फिर से हाल में सन्नाटा छा गया।

"सामंता ने अभी जो कुछ कहा वह सही था अगर वह दोस्त अपनी बात से मुकर ना गया होता तो आप लोगों को समझाने में हमें इतनी देर नहीं लगती । वह स्वयं आकर अपनी बात सिद्ध कर देता और अपनी टाइम मशीन दिखाता पर वह क्योंकि मुण्डक समुदाय से आता है शायद इसीलिए अपनी बात से मुकर गया । वह तो यह भी स्वीकार नहीं करता है उसने कोई टाइम मशीन भी बनाई है। अब आप खुद सोचिए की मुंडक समुदाय के लोग कभी नहीं चाहते कि हमारे समुदाय के लोग उन्नत करें । उन्हें सच्चाई पता चले!"

"पर मैंने सच्चाई मानी है । मैं सच जानता हूं इसीलिए मुझे अपने लोगों से हमदर्दी है, प्यार है।

मैं चाहता हूं कि हमारे समुदाय के लोग भी बेहतर जिंदगी जिए। इस देश में तानाशाही खत्म हो और नयाना समुदाय के लोगों का शासन शुरू हो। जैसा की ढाई हजार साल पहले था और इसीलिए मैं और निमांडा जी ने ईमानदारी से आप लोगों के यहां बुलाया है । यकीन मानिए हमारा इसके पीछे अपना निजी स्वार्थ कुछ भी नहीं है। कोई भी मकसद नहीं सिर्फ और सिर्फ में अपने समुदाय की स्थिति को सुधारना है। पर वह ऐसे नहीं सुधरेगा। हम लोगों की एकजुट होना पड़ेगा । तानाशाही के खिलाफ बिल्कुल बजाना पड़ेगा बगावत करनी पड़ेगी हो सकता है । मामला बहुत सीरियस हो जाए कुछ लोगों को बलिदान भी देना पड़े पर एक समय आएगा जब इस देश पर अपने समुदाय का फिर से राज होगा लोगों के स्थिति फिर से ठीक होगीऔर हम अपने असली सरदार और उसके बेटे को उनका सम्मान दिला पाएंगे जिन्हें हर साल बेइज्जत किया जाता है!"

लोगों में खुसर फुसर होने लगी।

"हम सबको लगता है कि आप दोनों ठीक कह रहे हैं और इसीलिए हम आपका साथ देने की तैयार है पर मुंडक समुदाय बहुत ताकतवर है, सत्ता में है उसके खिलाफ हम इतने लोग क्या कर सकते हैं हमारे पास तो कुछ भी नहीं है?"

"अभी हम इतने लोग हैं पर देखते-देखते हमारे पास भी हजारों लोग होंगे। बस हम सब की जिम्मेदारी है उनको सच्चाई बताना अगर आप लोग पूरे तन मन धन से हमारे साथ जुड़े हैं तो आपकी भी जिम्मेदारी है कि लोगों को समझाएं उनको यहां लेकर आए हम लोग समझाएंगे । सब लोग समझ जाएंगे फिर हम मुंडक समुदाय के खिलाफ बिल्कुल फूंकने और उनकी तानाशाही सत्ता को जड़ से उखाड़ कर फेंक देंगे!"

सामंता ने ही पूर्व जन्म में समीरा बन कर गंडक के साथ धोखा किया था ये बात निमांडा ने ही ना बताने के लिए कहा था।

****

त्रिवेला सामंता के यहां से सीधा जमन्ता के घर आ गई। उसने सामंता से कहीं घूमने के लिए कहा था पर उसने मना कर दिया था ये कह कर कि उसे कुछ जरुरी काम है।

वह जब अपने गंतव्य पर पहुंची तो वह बरामदे में ही बैठा था और अभी अभी ही कहीं से लौटा था। उसके मिट्टी से सने कपड़े बता रहे थे। वह उस घडी जूते उतार रहा था।

" हाय।" उसने त्रिवेल को देखा तो मुस्कराया और बोला।

पर वह ना मुस्कराई। बल्कि और संजीदा हो गई। वह समझ नहीं पाया।

" क्या बात हैं.. तुम कुछ परेशान, गुस्से में लग रही हो?" कुर्सी पर बैठा वह जिसने दोनो जूते उतार लिए थे सीधा होकर तन कर बैठ गया।

" मुझे लगता था कि तुम अच्छे इन्सान हो, दोस्त हो पर तुमने तो दोस्ती की पीठ पर छुरा घोपने वाला काम किया।"

" मतलब?" उसके माथे पर बल पड़े।

" तुमने कोई टाइम मशीन बनाई थी.. और उससे तुम सामंता के साथ ढाई हजार साल पहले के काल खण्ड में गए थे.. हां या ना?"

" तु..तुम्हे कैसे पता?" वह हकला गया।

" कैसे भी पता है.. ये बोलो सच है कि नहीं?" लडकी काफ़ी क्रोध में जान पड़ती थी।

" सामंता ने बताया है?"

" जब समझते हो तो क्यो पूछ रहे हों?"

" हां तुम्हारी बात सही है।"

" फिर तुमने सबके सामने झूठ क्यों बोला कि तुमने कोई टाइम मशीन नहीं बनाई?"

" इसलिए क्योंकी मै नहीं चाहता की यहां के शांत माहौल में भारी उथल पुथल हो, खून बहे और सैकड़ो लोग बेमौत मारे जाएं। फ़िलहाल मशीन में सच में भारी गड़बड़ी आ गई है और एक तरह से उसे बेकार समझो। "

" हु। तो इस डर से सत्य को छुपा लोगों। जिनका जो हक है वह नहीं दोगे। "

" सब कुछ अच्छा चल रहा है। नयाना समुदाय के एक दो लोगों को छोड़कर सब चैन से रह रहे हैं किसी को कोई दिक्कत नहीं। फिर जो होना था वह हो गया और उसे गुजरे ढाई हजार साल बीत चुके हैं। क्योंकि गड़े मुर्दे उखाड़ना।"

" अगर मुण्डक समुदाय पर वही सब कुछ गुजरता जो नयाना समुदाय पर गुजरा तो भी तुम यहीं कहते?"

वह कुछ पल के लिए हड़बड़ा गया। फिर संभल कर बोला," फिलहाल ऐसा नहीं है। और तुम इतनी क्यों परेशान हो रही हो? हम दोनों ही मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। हम क्यों परेशान हो?"

" तुम्हारी नज़र में दोस्त की और दोस्ती की कोई कीमत नहीं। दोस्ती सिर्फ दिखावे के लिए थी?"

" वह भी तो नहीं समझ रहा। तुम्हे क्या लगता है वह हमारा भला सोच रहा है। नहीं। वह केवल अपने और अपने समुदाय के लोग के बारे में सोच रहा है। तुम एक बार सोच कर देखो जो वह चाहता है अगर हो गया तो हमारा, हमारे समुदाय का क्या होगा? जो नयाना समुदाय की स्थिति है वही हमारी होगी।"

" तो इस डर से हम सत्य को कुचल दे। नयाना समुदाय अगर सब कुछ हासिल कर लेगा तो क्या गलत है। वह उसका हक है जो मुण्डक ने, मुण्डक समुदाय के लोगों ने छीन लिया था और एक विकसित उन्नति सभयता को तहस नहस कर दिया था। ढाई हजार साल से गुलामी की जिंदगी जी रहा है वह समाज.. क्या उसे उसका हक नहीं मिलना चाहिए?"

" तुम्हारे दिल में सामंता के लिए प्रेम है इसलिए तुम ऐसा सोच रही हो.. सामंता को एक साइड करके सोचो।

" मै समझ गई । तुम भी मुण्डक समुदाय के उन लोगों की तरह हो जिन्हे शैतान कहते है जो सिर्फ अपने बारे में सोचता है। पर मै ऐसी नहीं हूं। मै भले ही मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखती हूं पर शैतान नहीं हूं।"

" तुम्हारी मर्जी।"

त्रिवेला वहां से पैर पटकते हुए वापस चली गई।

,****

रात का दूसरा पहर अभी शुरु ही हुआ था। घने जंगल में एक जगह आग जल रही थी। जलते समय लकड़ियों के चटकने की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ रही थी। उस जगह को छोड़ कर बाकी जगह अधेरा पसरा हुआ था।

जलती हुई लकड़ियों के पास एक शख़्स बैठा था। उसकी इस समय पीठ दिख रही थी जो की नंगी थी। कमर के नीचे उसने काला पैंट पहने हुए था जो काफ़ी चुस्त था। पूरा सर भी काले कपड़े से ढका हुआ था जो उसने गर्दन पर कसकर लपेट रखा था। आखों पर क्रिश फिल्म में ऋतिक रोशन की तरफ बडी सी काली पट्टी बांध रखी थी जिसमे से इसकी केवल आंखे चमक रही थी।

" किसी को नहीं छोडूंगा.. किसी को भी। सारे मुण्डक समुदाय को तहस नहस कर दूंगा। खत्म कर दूंगा सबको। और उन दुष्टों का जो साथ देगा उसको भी नहीं छोडूंगा। " वह बड़ बड़ा रहा था।

फिर उसने अपने चेहरे को भी काले कपड़े से मुक्त किया। आखों पर से काली पट्टी हटाई। अब उसके तन पर केवल काली चुस्त पैंट बची थी।

अब उसका चेहरा स्पष्ट रूप से दिख रहा था। वह द्विज था।

वह टक तकी लगाकर आग को घूर रहा था। अचानक उसकी आंखों के सामने उसकी मां, की तस्वीरे नाचने लगी। वह उस के साथ बिताए अच्छे पलो को याद करने लगा। उसके चेहरे पर मुस्कराहट छा गई। वह खुश नज़र आ रहा था।

अचानक उसके सामने उसके घर में लगी आग वाला दृश साकार हो उठा। भीड़ बेहद उग्र थी। उसने ही उसके घर को गुस्से में आग के हवाले किया था। घर के अन्दर भीषण आग मे उसकी मां घर के अंदर फंस गई थी । बचने के लिए चिल्ला रही थी, चीख रही थी । बचाने की गुहार लगा रही थी । पर भीड़ उन्हे मारने पर आमादा थी। जबकि उसकी मां का कोई दोष नहीं था। उसकी आंखो से आंसू निकल पड़े।

उसने मुण्डक शिब्रा पर्व पर बलि चढ़ाने का विरोध किया था। नयाना समुदाय के लोगों के हक की बात की थी। जो मुण्डक समुदाय को, युगांडा को बुरी लगी थी। उन्होने उसे समझाया था.. समझाया क्या एक तरह से धमकाया था की वह उनका विरोध ना करे। नयाना समुदाय के लोगों के हक की बात ना करे।

और फिर एक साजिश के तहत उसके गांव में, मोहल्ले में कुछ बच्चो की मौत हो गई। कहा गया ये सब द्विज के बलि का विरोध करने पर मुण्डक शिब्रा ने नाराज होकर किया है। लोगों को भड़काया गया। भीड़ ने उग्र होकर अंधे पन में उसके ही नयाना समुदाय के लोगों ने ही उसकी मां को जिन्दा जला कर मार डाला।

वह अगर भागता नही तो वह भी मारा जाता। उसने खुद को उन्मादी भीड़ से बचाने के लिए उफनती नदी में छलांग लगाई थी। और तब से जंगलों की ही खाक छान रहा था। छिप कर रह

रहा था।

" किसी को नहीं छोडूंगा। सबको मार दूंगा। असली दोषी मुण्डक समुदाय के लोग हैं। मेरे समुदाय के लोग तो अनपढ़ गंवार, जाहिल है। अगर इस बार वो भी बीच में आए और मुण्डक समुदाय के शैतानों की मदद की तो उन्हें भी नही छोडूंगा। बरहाल गेंहू के साथ कभी कभी घुन भी पिसता है, पिसे मुझे क्या!"

वह फिर बड़बड़ाने लगा।

पास की झाड़ियां में हल्की सरसराहट हुई।

****

वे दो थे। दोनों ही पुलिस के आदमी थे। एक दरोगा दूसरा सिपाही था। वे दोनों ही अपने अधिकारी द्वारा इस्तेमाल की गई लडकी जो उन शैतानों की हवस की प्यास बुझाते बुझाते मर गई थी उसी को ठिकाने लगाने जंगल में आए थे। लडकी को ठिकाने लगाते समय दूर जंगल में उन्हें आग जलती हुई दिखी।

" उधर जंगल में आग दिख रही है।" सिपाही ने आश्चर्य से एक तरफ़ देखते हुए कहा था। दरोगा मृत लडकी के शरीर से अपनी हवस पूरी करके अभी अभी हटा था और सिपाही की बात सुनकर तुंरत उस ओर देखने लगा था।

" इस सुनसान जंगल में रात के समय कौन आग जला रहा है?" उसे भी आश्चर्य हुआ।

" कहीं वह कालपुत्र तो नही है जो छिप कर जंगल में रह रहा हो।" सिपाही ने शंका व्यक्त की।

दरोगा सोचने लगा।

" हो सकता है।"

" चले ,देखे चलके। अगर वही हुआ तो दबोच लेगे। उस पर काफ़ी ईनाम भी घोषित है। वो सब हमे मिल जायेगा। हम मौज करेगे।"

" अगर वह कालपुत्र हुआ तो लेने के देने पड़ जायेगे। जानते तो हो वह कितना खतरनाक है!"

" जानता हूं पर हम दो है। अचानक उसके पास पहुंच कर उस पर हमला कर पकड़ लेंगे। उसे इस बात का जरा भी अनुमान नहीं होगा की उस पर इस तरह इस समय कोई हमला भी कर सकता है। "

" वह अकेला भी हम पर भारी पड़ सकता है।"

" आपकी सर्विस रिवाल्वर किस दिन काम आयेगी। वह ज्यादा होश्यारी दिखाए तो ठोक देना। वैसे भी इनाम जिन्दा मुर्दा दोनों कंडीशन में मिलेगा.. क्या कहते हो?"

" वो सब तो ठीक है पर तुम अपनी प्यास नहीं बुझाओगे?" दरोगा ने पूछा।

सिपाही ने जमीन पर पड़ी नंगी लाश की तरफ देखा तो कहा," प्यास बुझाने के और भी मौके मिल जायेगे।"

" तो फिर ठीक है। चलो देखते हैं आग के पास कौन है?"

वे दोनों उस ओर बढ गए।

****

वे दोनों झाड़ियां के पीछे छिप कर बैठें थे। उनकी पैनी नजर बराबर आग के पास सोच विचार में डूबे बैठे द्विज पर ही केंद्रित थी।

फिर उन्होने उस पर हमला कर उसे पकड़ने के लिए वहां से आगे बढ़े। तभी झाडियों में सरसराहट हुई थी। पर वह सरसराहट इतनी हल्की थी कि द्विज को सुनाई नहीं दिया। इसी लिए अपनी ओर बढ रहे खतरे को वह भांप नहीं सका।

वे दोनों पुलिसिए हथियार ताने उसकी ओर सावधानी से, बेहद सतर्कता बरतते हुए धीरे धीरे बढ़ रहे थे और वह खोया हुआ था अपनी पिछली उन यादों में जिन्होंने उसे जिंदगी भर का गम दिया था।

अचानक उन पुलिस वालों की तमाम सावधानी के बाबजूद उनके चलने से नीचे पड़े पत्ते और पेड़ो की छोटी बडी टूटीं पड़ी टहनियों पर पड़ने वाले दबाव की वजह से जो आवाज़ उभरी थी उसने उसे तुंरत चौकन्ना कर दिया। वह खतरा भाप गया। समझ गया उसके ठीक पीछे खतरा है। वह हरकत में आना चाहता था पर तभी पीछे आ पहुंचे पुलिसियो में से एक ने वार्निंग जारी कर दी।

" हिलना नहीं। नहीं तो मारे जाओगे। हमे तो वैसे भी इनाम मिलेगा। पर जिन्दा पकड़ा तो बात ही कुछ और होगी।" दरोगा उसके सर पर पिस्टल तानते हुए बोला," हांथ उपर करो, जल्दी!"

द्विज ने हांथ उपर कर लिए। पर चेहरे पर सख्ती आ गई थी। जबड़ा कस गया था। उसे ऐसे हमले की बिल्कुल आशा नहीं थी।

" तुम समझते थे तुम कालपुत्र बनकर सबको मारते रहोगे और कभी पकड़े नहीं जाओगे।," द्विज के पास पड़े काले कपड़ों को देखकर दरोगा दांती पिसते हुए बोला।

" तु.. तुम्हे गलत फहमी हुई है मैं द्विज हू। कालपुत्र नहीं हूं। मेरा उससे कोई लेना देना नही है। मै तो जानता भी नहीं हूं कि वह कौन है।" द्विज सफाई देने लगा।

" तो यहां जंगल में क्या कर रहा है?"

" आपको तो पता ही होगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। मैने नदी में कूद कर जान बचाई थी अपनी। और आगे भी खुद को बचाने के लिए ही यहां इस घने जंगल में रहता हूं।"

" साले, हरामी! अब पकड़ा गया तो बहाने बना रहा है।"

" मैं कोई बहाना नहीं बना.. ।"

" आप क्यों इससे बात कर रहे हो?," तभी सिपाही ने चिढ़ कर बोला," या तो इसे ठोक दो या गिरफ्तार कर लो।"

" इसे गिरफ्तार कर के ले चलेंगे। बीच चौराहे पर जब इसे फांसी पर लटकाया जाएगा तो बाकियों को भी नसीहत मिलेगी फिर कोइ भविष्य में कालपुत्र या देवपुत्र बनने की हिमाकत नही करेगा।"

" ठीक है तो फिर इसे गिरफ्तार करो।"

" ठीक है। चल हांथ पीछे कर ताकि तेरे हांथ बांध सकू।" दरोगा ने पास में पड़ी उसकी काली शर्ट उठाकर उससे कहा।

****

अगले दिन पुलिस थाने के प्रांगण में उन्ही दोनो पुलिसियों की लाशें पड़ी थी। दोनों की छातियों में तीर घुसा था। छाती, कपड़े रक्त रंजित थे। सीनो पर कालपुत्र लिखा था।

अभी सुबह सुबह घंटा भर पहले ही थाने मे किसी ने फोन कर सूचित किया था कि जंगल के पास सड़क पर दो पुलिस वालों की लाशे पड़ी है। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए तुंरत वहा पहुचने के काम को अंजाम दिया था।

थाने का हेड रबाना भी वहां मौजूद था। रात में उसी की अय्याशी के बाद उसने ही लडकी की लाश को ठिकाने लगाने का काम उन दोनों पुलिसियो को सौंपा था। उसने समझा था कि रात में लड़की की लाश को ठिकाने लगाने के बाद वे दोनों घर चले गए होगे। ऐसा ही उन्होने बोला भी था। वे दोनों उसके बेहद खास थे। उसके हर अच्छे बुरे हुकुम की तामील करते थे। बहुत मुंह लगे थे।

उन दोनों की सड़क पर लाशे देखकर वह दुखी था। पर उससे ज्यादा बेचैन था क्योंकि उन दोनों को कालपुत्र ने मारा था। दोनों लाशों के छातियों में तीर घुसे थे। छातियों पर उन्ही के खून से कालपुत्र लिखा था। ऊपर के कपड़े भी वही फटे पड़े थे।

उन दोनों की लाशे आनन फनन में थाने लाई गई थी और फिर वहां से मुर्दा घर पहुचाई गई।

खबर लगते ही मेयर खुद थाने आ धमका था। सबको हड़का कर, कालपुत्र को गिरफ्तार करने का हुक्म सुनाया था। ऐसा ना कर पाने की सूरत में सबकी छुट्टी कर देने की धमकी भी जारी कर गया था।

यह उसकी धमकी का ही असर था कि पुलिस और ज्यादा एक्टिव हो गई। वार फूटेज पर कालपुत्र की खोजबीन शुरू हो गई और बढ़ गई नयाना समुदाय के लोगों की दिक्कतें।

जिन पर ज़रा भी शक होता था उसे उठा लेते थे और जमकर यातनाएं देते थे। यह कई दिनों से लगातार जारी था।

पर अब एक नई तरकीब सोची गई थी। मेयर के द्वारा जिसे उसने सबको ना सिर्फ़ बताई बल्कि उस पर युद्ध स्तर पर काम करने को भी बोल दिया था।

और उसी प्लान के तहत पंपलेट बनवाए गए थे जिन पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था _ कुछ दिनों पहले उन सबके मुण्डक शिब्रा के गले में किसी नालायक शख्स ने जूते की माला डाली थी। एक घिनौना अपराध किया था और अब वही कालपुत्र बन कर लोगों को मार रहा है । उसे जल्द से जल्द पकड़वाने में मदद करें। जिस पर जरा भी शक हो तुरंत उसको उठा लो। और देश को सुरक्षित करें नहीं तो मुण्डक शिब्रा का कहर उन सब पर टूटेगा। ब्रिज का हवाला भी दिया गया था कि उस मामले में मुण्डक शिब्रा के कहर की हल्की झलक सब देख चुके हैं _लोगों से अपील की गई थी कि ऐसा वह कालपुत्र कर रहा है। अगर मुण्डक शिब्रा के कहर से बचना चाहते हो तो कालपुत्र को पकड़वाने में मदद करें। बकायदा उसे पकवड़वाने वाले को

तगड़ा इनाम देने की घोषणा भी पर्चे में छपी थी। जनता में इसी बात को जोर दार ढंग से रखने के लिए पुरोहित झमोला का सहारा भी लिया जा रहा था। वह मंच पर खडे हो कर लोगो को डरा कर, मुण्डक शिब्रा का कहर टूटेगा कहकर , भयभीत कर लोगो से कालपुत्र को पकड़वाने में मदद करने को बोलता था।

लोगों के हुजूम में डर भी साफ दिखता था। उन्होने एक साथ चिल्लाकर साथ देने की हामी भरी थी। वे मुण्डक शिब्रा का कहर टूटने नहीं देना चाहते थे।

*****

निमांडा के आश्रम के बड़े से कमरे में कुछ लोग मौजुद थे। वे वही यूवक थे जिन्होंने सामंता और निमांडा का साथ देने की हामी भरी थी। वहा पर सामंता और निमांडा भी मौजूद थे। कमरे में ख़ामोशी छाई थी।

" जैसा कि पर्चे बांटे जा रहे हैं और पुरोहित झमोला की सभाओं से हमारा काम और कठिन हो गया है। और ये सब कालपुत्र के कारण हुआ है। पहले मुझे लगता था कि वह हमारा मदद गार सबित होगा पर उसी की वजह से अब हमे लोगों को समझाने में दिक्कत पेश आने वाली है। लोगों में उसके प्रति गुस्सा है। क्योंकि उन्हें बताया जा रहा है कि मुण्डक शिब्रा के गले में जूते की माला डाल कर अपमान किया गया और वह कार्य कलपुत्र ने किया जिसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं फिलहाल।"

" आप सही कह रहे हैं। अब लोगो को समझाना सिर्फ़ मुश्किल ही नहीं हो गया है बल्कि जान जोखम में डालने जैसा हो गया है।" निमांडा की आवाज़ ने ख़ामोशी तोड़ी थी फिर उसकी बात का समर्थन करते हुए एक यूवक बोला। उसके स्वर में भय साफ दिख रहा था।

" तुम्हारी बात ठीक है। पर हमे डरना नहीं है, भयभीत नहीं होना है। क्योंकि हमारा लक्ष्य बडा है। नेक है। हमे अपने नयाना समुदाय को उसका हक दिलाना है,गुलामी की जिंदगी से निजात दिलानी है। हजारों साल पहले जैसे हमारा समुदाय यहा राज करता था वैसे ही फिर से करेगा।"

" कैसे? हजारों साल से लोगों की मानसिकता भी गुलामी वाली बन गई है। उसे खत्म करना बिलकुल भी आसान नहीं है।"

" जानता हूं। तभी तो कहा कि अपनी राह कठिन है। पर हमारा मकसद जितना बड़ा है उसके आगे तो यह समस्या बहुत छोटी है।" निमांडा जानता था कि वह जो कह रहा है केवल उत्साह बढ़ाने के लिए कह रहा है बल्कि हकीकत में समस्या लोगों को समझाने की बहुत ही विकेट थी। और अब जिस प्रकार से लोगों में भय दिखकर पुरोहित झमोला के द्वारा मुंडक का सहारा लेकर भड़काया जा रहा था उससे और भी ज्यादा मुश्किल हो गई थी पर उसे यह भी पता था कि जिस रास्ते पर वह चल रहा है इसमें समस्या तो आने ही आनी है और एक से एक विकट समस्याएं आनी है पर उसे सबसे निपटना है। सामंता वहां बोलना चाहता था पर वह जानता था कि लोगों में निमांडा का प्रभाव ज्यादा है वे उनकी ही बात सुनेंगे इसीलिए अभी तक वह खामोश था।

" वे अपना काम कर रहे हैं। हमे अपना काम करते रहना चाहिए। " इस बार सामंता काफी समय तक शांत बैठने के बाद बोला।

" लोग इस समय भड़के हुए हैं। ऐसे में उन्हें बताया गया कि मुण्डक ने ढाई हजार साल पहले विकसित नयाना समुदाय को धोखे से हथिया लिया। गंडक और दंडक शैतान नहीं बल्कि हमारे रहनुमा थे तो वे हमे कालपुत्र का साथी समझेंगे और फिर क्या होगा इस बात का सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है।"

" कालपुत्र ने हमारा काम खराब कर दिया है।" एक और शख्स बोला।

" नहीं। उसने काम खराब नही किया बल्कि झमोला ने और मुंडक समुदाय के कुछ चतुर चालाक लोगों ने अपना दिमाग चलाया । उन्होंने कालपुत्र जो मुण्डक समुदाय के लोगों के लिए घातक साबित हो रहा है और वे उस तक पहुंच नहीं पा रहे थे इसीलिए मुण्डक के गले में जूते वाली माल की जो घटना घटी थी उसका इस्तेमाल किया। हम लोगों के अलावा बाकी जनता में तो मुंडक का श्रेष्ठ स्थान है। उन्हें बताया गया कालपुत्र ने मुंडक शिब्रा के गले में जूते की माला डाली और घोर पाप कर डाला। मानसिक गुलाम हो चुके लोगों को इस तरह से भड़काना कोई कठिन काम नहीं है पर हमें भी कुछ ना कुछ सोचना पड़ेगा। हम लोग भी पीछे नहीं हटने वाले अंजाम चाहे कुछ भी हो।"

" बिलकुल। पर हम यह नहीं सोच पा रहे कि आखिर इस बात का तोड़ कैसे निकाले? आप लोग ही सोच कर बताएं तो बेहतर होगा।"

जवाब में निमांडा ने पास बैठे सामंता की ओर देखा।

फिलहाल उसके पास भी इस बात का तोड़ नहीं था।

" कुछ तो तोड़ निकालना ही पड़ेगा। हम ऐसे ही हांथ पर हांथ धरे तो नहीं बैठ सकते!" आखिर कार सामंता ने कह ही दिया,"हमे लोगों को जागरूप करना ही पड़ेगा। जन आंदोलन ही परिवर्तन ला सकता है।"

" बात तुम्हारी सही है पर इस समय नयाना समुदाय के लोग बहुत भड़के हुए हैं। उनसे अपनी बात करना ही खतरे से खाली नहीं है।" एक यूवक बेहद तनाव में दिखा।

" परेशान मत हो। तुम बस लोगों को यहां लाते रहो। हम उनसे बात करके समझाते रहेंगे।"

" निमांडा जी आप को अभी भी लगता है कि आप लोगों को समझ पाएंगे। उनसे कह पाएंगे कि मुंडक शिब्रा जो उनकी नजर में गॉड का स्थान रखता है वह शैतान था और जो शैतान का दर्जा रखते हैं गंडक और दंडक वे नयाना समुदाय के हीरो थे।"

" हां । तुम अपनी युवा शक्ति को इकट्ठा करते रहो मैं उन्हें जरूर समझाऊंगा ..समझाना ही पड़ेगा । ढाई हजार साल से जो गुलामी हमारा समुदाय करता आ रहा है उससे उन्हें मुक्ति दिलाने ही होगी ,भले ही अभी उनका दिमाग चेंज हो चुका है पर उनके दिमाग की मनोदशा को, सोच को बदल देंगे।"

"ढाई हजार साल से जिन लोगों को गुलामी में रहने की आदत हो गई हो उनकी मनोदशा कैसे आप बदलेंगे?"

"जैसे तुम लोगों की बदली है। काम कठिन है पर धीरे-धीरे सब कुछ होगा। युवा शक्ति को ही इसीलिए हमने टारगेट किया है क्योंकि उनकी सोच को बदलना आसान है। फिक्र मत करो बस नए लोगों को अपने साथ मिलाओ और यहां पर लेकर आओ! जाने को तो हम पब्लिक में

भी जाकर बात कर सकते हैं पर वह जाना फिलहाल खतरे से खाली नहीं होगा। यहां के प्रशासन को पता चल जाएगा और फिर वह हमारे लिए और मुसीबत खड़ी करेगा!"

" हूं। ठीक है।"उन युवकों का हेड नाभा नाभा उसने कुछ पल सोचा और फिर हां में मुंडी हिलाई।

उसके बाद वहां से फिर सारे युवक चले गए तब सामंत ने चिंतित स्वर में कहा,"समस्या तो वाकई में विकट है। हम लोगों को कैसे समझाएंगे अगर जन्मता ना मुकरता तो उन सबको समझाना एजी था। अब मैं खूब कहता रहूंगा कि मैं वह ढाई हजार साल पहले समय देख कर आया हूं पर मेरी बात पर कौन यकीन करेगा?"

"समस्याएं कितनी भी विकेट क्यों ना हो दिमाग जैसी चीज है अगर इंसान उसका उपयोग शांति और विवेक के साथ करता रहे तो कुछ ना कुछ हल जरूर निकल आता है । तुम परेशान ना हो । मेरे दिमाग में कुछ है जो समस्या से निजात दिला सकते हो!"

" ओह। अच्छा। फिर ठीक है।"

" फिल्हाल तुम उन युवकों को जिन पर पुलिस अत्याचार कर रही है, कालपुत्र होने के शक के आधार पर उन सबको बचाओ। ऐसे में हमे उन लोगों की हमदर्दी हासिल होगी। जो आगे उन्हे हमारी बात सुनने और मानने के लिए प्रेरित करेगी।"

" हूं। ठीक है।"

" पर कैसे ?"

" मुझे मालुम है।"

"गुड।"

****

रात का यह दूसरा पहर था। आसमान में बादल इधर-उधर तैर रहे थे जो कभी-कभी चंद्रमा को ढक लेते थे जिसकी वजह से अंधेरा और गहरा हो जाता था पर बादल हटते ही चांद फिर से चमकने लगता था। पर फिर भी पर्याप्त अंधेरा नहीं था और चारों तरफ खूब सन्नाटा बरस रहा था। कहीं कोई आवाज नहीं हो रही थी। वह नयाना समुदाय की एक छोटी सी बस्ती थी सब अपने-अपने घरों में सो रहे थे । कुछ लोगों के पास ही पक्के मकान थे बाकी के पास आज भी झोपड़ियां थी । उस छोटे से गांव के सबसे बाहरी छोर पर एक झोपड़ी स्थित थी । उसके बाहर भी अधेरा पसरा हुआ था। उसी गांव से सटा हुआ एक जंगल भी था और अभी-अभी जंगल से निकलकर कोई उस झोपड़ी की तरफ बढ़ रहा था हालांकि उसने खुद को काले कपड़ों में पूरी तरह छुपा रखा था पर वह बेहद सतर्क था। बेहद चौकन्ना था । यह उसकी चाल ढाल से स्पष्ट तौर पर समझ में आ रहा था।

शीघ्र ही वह उस झोपड़ी के पास पहुंचकर ठिठका । एक नजर उसने इधर-उधर डाली फिर घास फूस की बनी झोपड़ी के घास फूस के ही बने दरवाजे को हाथ से एक तरफ हटाने का प्रयास करने लगा। वह दरवाजा शायद अंदर से किसी रस्सी आदि से बंधा हुआ था । यह समझ में आते ही उसने उस घास फूस के दरवाजे में से हाथ अंदर डालने की जगह बनाई और फिर रस्सी खोलकर दरवाजा एक तरफ किया। अंदर पहुंचकर उसने उस दरवाजे को फिर से

पूर्वबात कर दिया और फिर उस झोपड़ी के अंदर प्रविष्ट हो गया । झोपड़ी के अंदर अंधेरा था । वह कुछ देर एक जगह पर आंखे बंद किए खड़ा रहा। फिर आंखे खोली । उस अंधेरे में झोपड़ी में तरफ एक चारपाई पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिस पर कोई गहरी नींद में सो रहा था । वह उसके पास पहुंचा और धीरे से हाथ के हल्के इशारे से जगाने का प्रयास किया।

सोने वाला हड़बड़ाया । और उठ कर बैठ गया। पर इससे पहले कि वह चीख पड़ता है वह बोला," मैं हूं।"

" कौन द्विज?"

" हां।"

" ओह मैं तो डर ही गया था।"वह चारपाई पर एक तरफ सिमट कर बैठते हुए बोला और उसे भी बैठने का इशारा किया पर वह बैठा नहीं।

"वह वक्त बहुत जल्द नजदीक आने वाला इसलिए इतनी गहरी नींद ना सोया करो!"द्विज ने अपनी भारी आवाज में कहा।

" हूं। ठीक है। बैठ जाओ।"

"मैं यहां बैठने नहीं आया हूं बल्कि तुम्हें याद दिलाने आया कि अब वह समय नजदीक आने वाला है जिसके लिए हम तैयारी कर रहे हैं! कल तुम सबको लेकर जंगल वाली उस गुफा में एकत्रित होना। सबको कुछ दिशा निर्देश करना है! "

" ठीक है। पर मुझे कभी-कभी बहुत डर लगने लगता है।"

"बहुत डर चुके! अब डर को खत्म करने का समय आ चुका है। अब डर से बाहर निकलना ही होगा ताकि हमारी आगे आने वाली पीढ़िया शांति से रह सके, निडर हो कर जी सके । उन्नति कर सके । अब हम डर कर नहीं रहेंगे। अच्छी तरह जानते हो?"

" हां वो तो है। मुंडक समुदाय के लोगों ने हमारे समुदाय के लोगों को सच में गुलाम बना कर रखा है । पर बाकियों को ये क्यों समझ में नहीं आता कि वह जो जीवन जी रहे हैं वह गुलामी का जीवन है। शायद मैं भी समझ नहीं पाता अगर तुमने समझाया न होता है। हालांकि जितने भी लोग समझे हैं और हमसे जुड़े हैं वे पक्के हो चुके हैं और यहां के तानाशाह के खिलाफ किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है! तुम जब नदी में डूब गए थे हम सब समझे थे कि तुम्हारी मौत हो चुकी है क्योंकि कई दिनों तक तुम्हारा कुछ पता नहीं चला! तुम्हारी मां के बारे में भी पता चला हालांकि उस समय तो मुझे कोई दुख नहीं हुआ था क्योंकि मैं भी उसी विचारधारा को फॉलो करता था। और बाद में तुमसे मेरा संपर्क हुआ। तुमने अच्छे से समझाया। गुलाम बनाए रखने की साजिश का एक हिस्सा था। मुण्डक समुदाय के लोगों ने ऐसी-ऐसी बातें गढ़ रखी है जिनकी वजह से हम कुछ सोच ही नहीं पाते । हम इसी बात में खुश रहते है कि मुण्डक समुदाय लोगों की सेवा करने के लिए ही पैदा हुए है। यही हमारा धर्म है। हर इंसान को अच्छे से जीने का हक है। कोई भी गुलामी करने के लिए पैदा नहीं होता है।"

" हुं। पर जब तुम पहली बार मुझसे मिले थे तब तो तुम मुझसे लड़ने की लिए तैयार हो गए थे। हालांकि मैं उसका कारण भी समझता हूं । अन्य लोगों की तरह बाद में तुम भी मान गए

थे। मेरा इरादा ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस बारे में जागरूक करना था और ये काम मैं गुप चुप तरीके से कर रहा था। फिलहाल हमने काफी लोगों को जागरुक कर लिया है । आगे भी करते रहेंगे और एक खास मकसद के लिए सबको तैयार करते रहेंगे। तुम उन सभी लोगों से संपर्क में हो । और मेरी जगह तुम उन सब तक आसनी से पहुंच जाते हो इसीलिए मैं तुमसे ही संपर्क करता हू जब कोई खास बात होती है। खैर उनसे सब से कह देना गुफा में जरूरी मीटिंग करनी है। सब टाइम से आ जाए।"

" ठीक है।"

" अब मै चलता हूं।"

इतना कहकर द्विज वहा से वापस आने के लिए जिस तरीके से आया था झोपड़ी से बाहर निकल गया। कुछ दूरी पर जाने उसका घोड़ा जो दूर एक पेड़ के तने से बधा हुआ था उसे खोला और उस पर सवार हुआ। फिर अंधेरे में जंगल की तरफ घोड़े को दौड़ा दिया।

****

उस देश का एकमात्र एयरपोर्ट जिस पर अभी-अभी एक विदेशी फ्लाइट लैंड हुई थी।

आज विदेशी फ्लाइट से उस देश के तानाशाह युगांडा का बेटा बरसों बाद विदेश से अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस आ रहा था । जब वह 10 ,12 साल का था तभी विदेश पढ़ने के लिए भेज दिया गया था और अब जब वह तकरीबन 35 वर्ष का था तो वापस अपने देश में लौट रहा था । उसके स्वागत की बड़ी ही भव्य तैयारी थी एयरपोर्ट पर। गाजे बाजे वाले मौजूद थे। चप्पे चप्पे पर सुरक्षा कर्मी तैनात थे। अपने बेटे को रिसीव करने के लिए मेयर के साथ खुद युगांडा एयरपोर्ट पर मौजूद था। युगांडा की पत्नी जिसका बेटा विदेश से पढ़कर आ रहा था उसकी बीमारी के चलते डेथ हो चुकी थी और युगांडा ने दूसरी शादी नहीं की थी । सभी को इंतजार था युगांडा के बेटे का जो 15 साल बाद विदेश से पढ़ाई पूरी करके वापस आ रहा था।

फिर उस फ्लाइट से उसका बेटा जब नीचे आया तो लगभग सभी लोग उसे देखकर दंग रह गए थे। हर कोई उसे ऐसे देख रहा था जैसे वह कोई अजूबा हो । हर किसी का मुंह खुला का खुला था।

"यह तो साक्षात मुंडक शिब्रा जान पड़ते हैं!"युगांडा के पास खड़े कई लोगों के मुंह से यह बात निकली। खुद मेयर और उसके पास खड़ी त्रिवेला भी हैरान थी।

सच में युगांडा का बेटा देखने में एकदम मुण्डक शिब्रा लगता था। वही कड़कती , फड़कती ,बलशाली पर्सनालिटी। वही चेहरा मोहरा । बस फर्क था तो यह की उसके कपड़े नहीं मिलते थे। उस समय वह सूट बूट में था। जबकि मुण्डक शिब्रा आदिवासी भेषभूषा में।

फ्लाइट से उतरकर जैसे ही वह उन लोगों के पास पहुंचा बाजे बजने शुरू हो गए । पिता ने अपने बेटे का बड़े आत्मीय तरीके से स्वागत किया । उसे बड़े प्यार से गले लगाया।

मेयर ने भी आगे बढ़कर बड़ी गर्म जोशी से उससे हाथ मिलाया था और फिर गले लगा था। वह मेयर को जानता था क्योंकि बचपन में उसके साथ काफी वक्त उसने बिताया था। मेयर उसके साथ दोस्ती का भाव रखता था।

त्रिवेला और वो बचपन में दोनों साथ-साथ खेलते थे। सबसे मिलने के बाद युगांडा का बेटा

मुरूदंड त्रिवेला से आकर मिला। उसने त्रिवेला को सर से लेकर पांव तक देखा । बचपन में जो बच्ची थी आज पूरी युवती बन चुकी थी । उसे देखकर वह मुस्कुराया। त्रिवेला भी मुस्कुराई। पर वह चिंतित भी हो गई थी पता नहीं क्यों..पर उसने चिंता के भाव बहुत जल्द खत्म कर लिए थे।

"तुम तो काफी हैंडसम हो गए हो। पहले तो दुबले पतले थे!"त्रिवेला मुस्कुरा कर बोली । जबाव में वह भी मुस्कुराया और उसने झट से त्रिवेला को गले लगा लिया । कुछ देर उसे गले लगाए रहा और फिर उसे बंधन मुक्त किया और बोला,"तुम भी तो पहले दुबली पतली थी आज कितनी खूबसूरत लग रही हो!"

त्रिवेला केवल मुस्कुराई। इसके बाद एक बड़ी सी कार में युगांडा अपने बेटे मुरुदंड के साथ बैठकर घर के लिए रवाना हुआ उसके पीछे मेयर की कार थी जिसमें मेयर और उसकी बेटी त्रिवेला बैठी थी और उन गाड़ियों के आगे पीछे सुरक्षा कर्मियों की कई गाड़ियां थी। आगे भी थी।

***

निमांडा सामंता के साथ अपने एक बड़े से कमरे में मौजूद था पर इस समय अपनी पूजा पाठ में व्यस्त था । आज कुछ युवक फिर से वहां पर आने वाले थे और उन्हें समझा बुझा कर अपनी तरफ करना था पर इस समय क्योंकि उसके पूजा का वक्त था और वह पूजा में आंख बंद किए तल्लीन था । सामंता उसके पास ही जमीन पर बैठा था। पूजा के दौरान उसने उसे डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा।

"वह भी आ गया है!"

अचानक पूजा स्थल में जल रही मामबत्तियां बुझ गई थी और निमांडा के मुंह से यह आश्चर्य जनक शब्द निकले थे।

" कौन आ गया है?"

सामंता समझ नहीं पाया कि आखिर निमांडा किसकी बात कर रहा है। पर उसने बात जिस अंदाज में की थी उससे जरूर वह हड़बड़ा गया था। उसने फौरन पूछा,"क्या बात है ..कौन आ गया है?"

"वही जिसने ढाई हजार साल पहले हमारे प्यारे नयाना समुदाय को गुलाम बनाया था । जिसकी वजह से हम आज भी गुलामी में जीने के लिए मजबूर है। वह फिर से आ गया है!"

"कौन मुंडक ?" सामंता को बड़ी हैरानी हुई जब निमांडा ने हां में गर्दन हिलाते हुए कहा,"हां वही मुंडक जो अथाह ताकत का मालिक था जिससे शेर भी घबराता था। उसे शैतान कहना भी राक्षसों और शैतानों की तौहीन करना है। वही मुण्डक फिर से आ गया है! अब मामला बेहद दिलचस्प होगा और हमारी मुश्किल और बढ़ेगी क्योंकि हम उसकी सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहते हैं । हमारे समुदाय के लोगों को उनका हक दिलाना चाहते हैं पर वह ऐसा कभी नहीं होने देगा । वह पहले भी ताकतवर था और आज भी ताकतवर है। उसके पराक्रम में कोई कमी नहीं आई।"

"मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं आप खुलकर बताइए प्लीज!"

"युगांडा का बेटा मुरुदंड विदेश से अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस आ गया है । बल्कि मुझे लगता है कि खुद युगांडा ने ही उसे बुलाया है और कुछ ही दिनों में वह उसे यहां का नया तानाशाह घोषित कर देगा । जैसा कि अभी तक उसके वंशज करते आए हैं,मुझे ऐसा लगता है! उसका बेटा और कोई नहीं बल्कि ढाई हजार साल पहले का मुंडक ही है। वह देखने में भी हु ब हू वही लगता है!"

"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"क्यों नहीं हो सकता ! जब ढाई हजार साल पहले का समीरा सामंता बनकर वापस आ सकता है तो मुंडक क्यों नहीं आ सकता । मुझे तो लगता है प्रकृति हमारे साथ खेल खेल रही है । उसने भविष्य में कुछ बड़ा ही भयानक राज छुपा रखा है इसीलिए उसने तुम्हे सामंता बनाकर इस धरती पर भेजा साथ ही साथ मुण्डक शैतान को भी वापस भेज दिया । शायद प्रकृति चाहती है ढाई हजार साल पहले जो तुमसे गलती हुई, पाप हुआ उसको तुम सुधर कर सको, पश्चातप कर सको । मुंडक से बदला ले सको । इस धरती पर अब कुछ भी आसान नहीं होने वाला है क्योंकि मुंडक पहले भी ताकतवर था ,शक्तिशाली था ,भयानक था और आज भी उसमें वही ताकत है। हमारी लडाई तगड़ी होने वाली है।"

"अगर ऐसा है तो भी मैं अपने काम से पीछे नहीं हटने वाला । इस देश की तानाशाही को खत्म करना है। बीच में शैतान मुंडक जो की जरूर आयेगा को धूल में मिलाना मेरा काम है । अच्छा किया प्रकृति ने उसे भेज दिया वरना मैं उसकी मूर्ति को तो वैसे भी तोड़ने वाला था। मिट्टी में मिलाने वाला था पर अब वह स्वयं आ गया है तो मूर्ति को बाद में देखूंगा पहले उसे देखूंगा!" सामंता ने दांती पीसते हुए बोला। उसके जहन मे ढाई हजार साल पहले की कहानी आने लगी।

"ठीक है पर जल्दबाजी में कोई निर्णय मत करना! वह तुमसे ताकत में कई गुना ज्यादा है इस बात का हमेशा ख्याल रखना! वैसे भी हमारा पहला मकसद है हमारे अपने लोगों के अंदर सच्चाई को भरना । उन्हें समझाना कि क्या सच है क्या गलत ताकि वह सब हमारा साथ दे सके और जनसमूह अगर हमारे साथ होगा तो सत्ता उखाड़ फेंकने में और आसानी रहेगी । बंदूक का रास्ता घातक है। हालांकि वो भी हमारे प्लान में शामिल है। पर जनता को अपने साथ लिए बिना अगर हमने बंदूक का रास्ता अपनाया तो हमारे लिए ही घातक साबित होगा। इस काम में थोड़ा वक्त लगेगा पर काम सफल होने के पूरे चांस होंगे।"

" हू। ठीक है।"

तभी बाहर से एक इंसान ने आकर उसे सूचना दी की कुछ लड़के आ चुके हैं।

"उन सबको उसे बड़े से हाल में बिठाओ मैं आता हूं!"

उसने आदेश दिया तो वह तुरंत वहां से वापस चला गया।

कुछ ही देर में निमांडा और सामंता उस बड़े से हाल में जा पहुंचे जहां पचास के करीब लडके उनका इंतज़ार कर रहे थे। उनमें कुछ लडके पुराने थे । पर ज्यादातर नए थे। उन दोनों ने नए लड़कों को ही टारगेट किया था वे जानते थे युवा शक्ति उनके काम आ सकती है और उन्हें समझाना भी उनके लिए बड़ी उम्र के लोगों से बेहतर होगा । बड़ी और पुरानी सोच को तोड़ना थोड़ा मुश्किल होता है पर नवयुवक में ऐसी समस्या नहीं होती। होती भी है तो उसे तोड़ना

आसान होता है । दूसरा उन्हें युवा शक्ति की जरूरत भी थी बिना युवा शक्ति के कोई भी जंग जीतना मुश्किल होता है। उनके साथ जो लड़के जुड़ चुके थे वह बढ़िया काम कर रहे थे।

हाल लगभग पूरा भरा हुआ था।

"यहां पर जो लोग हमसे पहले जुड़ चुके हैं । उन्हें तो सब कुछ पता ही है और हम आशा करते हैं कि जो लोग नए हैं उन्हें भी काफी कुछ पता होगा कि आखिर उन्हें यहां क्यों बुलाया गया है?"निमांडा ने जो सामंता के साथ एक ऊंची कुर्सी पर बैठा था ने गला खकारा और कहा।

"हमें बताया गया है कि यहां पर कुछ ऐसी बातें बताई जाएगी जिनसे हमारे समुदाय का भला होगा । हम सब की उन्नत होगी। हमारी आने वाली पीढ़ियां राज करेगी। हम सबके जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है पर यह नहीं पता कि वह सब कैसे होगा!"एक लड़के ने खड़े होकर तुरंत कहा।

"तुमने सही सुना है यहां पर जो मीटिंग हो रही है इसका मुख्य उद्देश्य हमारे यानी नयाना समुदाय की उन्नति ही है पर इसके साथ-साथ कुछ ऐसी बातें भी बताना है जिसे हमारे समुदाय के लोग बिल्कुल भी अनभिज्ञ है!"

"अच्छा तो बताइए!"

"पहले बताइए आप सबको मुझ पर भरोसा है या नहीं क्योंकि जो बातें मैं बताऊंगा उसके लिए भरोसा होना बहुत जरूरी है?"

"आपके लिए हम सबके दिल में अपार श्रद्धा है। हमारे समुदाय में वैसे भी काबिल लोगों की कमी है और मेरी दृष्टि में तो आप सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति है!"

निमांडा ने एक सर् सरी नजर हाल में बैठे सभी लड़कों पर डाली तो सभी लड़कों के मुंह से एक साथ निकाला,"हमें आप पर पूरा भरोसा है!"

सामंता जानता था उसके समुदाय के लोगों में निमांडा का काफी प्रभाव है इसीलिए उसने इस काम के लिए उसे फ्रंट पर रखा था और निमांडा ने अपने समुदाय की उन्नति के लिए उसका साथ देना भी स्वीकार भी कर लिया था । बिना किसी अंजाम के परवाह किए। उसने सामंता की बात का भरोसा किया था वह इसलिए क्योंकि कुछ चीजों के बारे में वह स्वयं भी पता कर सकता था और उसने उसी के आधार पर उसका भरोसा किया था । उसका मुंडक समुदाय से ताल्लुक रखता दोस्त भरोसा ना तोड़ता तो हालात कुछ और होते पर अभी सब कुछ उनको ही करना था।

"ठीक है जैसा आप मुझ पर भरोसा करते हैं वैसा ही मैं भी आप पर भरोसा करता हूं! मैं अपनी बात शुरू करूं इससे पहले मैं आप लोगों से कुछ बातें पूछना चाहता हूं,"निमांडा हर बार की तरह भूमिका बनाते हुए कहना शुरू किया,"क्या आप नयाना समुदाय के लोगों की आज तो दशा है उससे संतुष्ट हैं ? क्या आपको लगता है कि देश में, हमारे समुदाय के लोगों में सब कुछ सही चल रहा है जैसा उनका जीवन होना चाहिए वैसा ही चल रहा है?"

"नहीं ,हमारे समुदाय के लोगों का जीवन किसी भी तरह से बेहतर नहीं चल रहा!"

"उसकी वजह जान सकता हूं?"

"वजह क्या समुदाय के लोगों में शिक्षा की कमी है और आलस है, लापरवाह है । उन्हें गंदगी

में जीना अच्छा लगता है!"

"पर ऐसा क्यों है? क्या आपने कभी इस बारे में सोचा? नयाना समुदाय में शिक्षा की कमी क्यों है । उनमें लापरवाही क्यों है गंदगी में जीने में अच्छा क्यों लगता है.. इसके पीछे कारण क्या है क्या कभी आप लोगों ने सोचने की कोशिश की?"

सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

"मैं बताता हूं। ऐसा इसलिए है क्योंकि नयाना समुदाय के लोगों को शिक्षा के बेहद कम अवसर दिए गए या दिए जाते हैं उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कोई भी कदम नहीं उठाया गया । यहां शासन करने वाले लोगों की मनसा बिल्कुल भी नहीं है कि नयाना समुदाय के लोग शिक्षित हों,उन्नति करें। क्या आप लोग इस बात से सहमत हैं?"

"हां मुझे लगता है आप सच कह रहे हैं क्योंकि यह सारे काम तो शासन के ही होते हैं!"

"और यहां पर शासन मुण्डक समुदाय के लोगों का चलता है और वह भी तानाशाह के रूप में । क्या यह सही है ? अन्य देशों की तरह यहां क्या लोकतंत्र नहीं होना चाहिए ? क्या वोटिंग नहीं होनी चाहिए ? क्या हमारे समुदाय के लोगों को शासन में स्थान नहीं मिलना चाहिए?"

"आप शायद भूल रहे हैं कि मुंडक शिब्रा ने हजारों साल पहले हमारे समुदाय को गंडक और दंडक नामक दो शैतानों से आजाद कराया था अगर वह ऐसा ना करता तो नयाना समुदाय तो तभी खत्म हो चुका होता। इसके बाद मुंडक शिब्रा और उनके लोग यही बस गए हमारी रक्षा के लिए तो हमारा भी तो दायित्व है कि हम भी उनका एहसान चुकाये !"

"यह कौन सा एहसान है जो ढाई हजार साल तक अभी तक चुक ही नहीं पाया ? क्या इस एहसान के बदले हम लोगों को नरक की जिंदगी जीनी चाहिए। अगर मुण्डक ने हमारे समुदाय के लोगों को बचाया था तो उनकी बेहतरी का भी तो ख्याल करना चाहिए था। यह क्या बात हुई कि मुण्डक समुदाय के लोग ही हजारों साल से शासन करते आ रहे हैं। बेहतर लाइफ जी रहे हैं और हमारे सामुदाय के लोग ढाई हजार साल से गुलामी झेल रहे हैं। एहसान पटाने का यह कौन सा तरीका है?"

नए लड़कों में खुसर फुसर होने लगी।

"मुझे लगता है कि आपने हम लोगों को यहां मुंडक शिब्रा और मुंडक समुदाय के खिलाफ भड़काने के लिए बुलाया है!"एक लड़का तुरंत खड़ा हुआ और थोड़े नाराजगी से बोल।

"बिल्कुल नहीं ! हमने यहां आप लोगों को इसलिए बुलाया है ताकि इस बात पर चर्चा कर सके। नयाना समुदाय की वर्तमान स्थिति क्या है और क्या इसे बेहतर करना चाहिए या नहीं और करना चाहिए तो उसके लिए क्या करना चाहिए!"

"तो फिर आप यह मुंडक शिब्रा वाली बात क्यों कर रहे हैं? ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं जिससे मुझे लग रहा है कि आप हम सबको मुण्डक समुदाय के लोगों के प्रति भड़काना चाहते हैं जबकि हमारे पूर्वज हजारों साल से उनकी सेवा करते आ रहे हैं यह हमारा कर्तव्य है । उन्होंने हमारे समुदाय पर इतना एहसान किया था हमें भी तो कुछ करना चाहिए!"

"बिल्कुल करना चाहिए लेकिन तब जब सच में किसी ने तुम अहसान किया हो!"

"मतलब आप नहीं मानते की मुंडक शिब्रा ने हमारे समुदाय पर ढाई हजार साल पहले उन

शैतानों से बचाकर एहसान किया था?"

"अभी तक तो मैं भी यही मानता आ रहा था पर जब मुझे सच्चाई पता चली तब से मैंने मानना बंद कर दिया । सच्चाई जानकर ही मेरी सोच बदली। मैं सोचने पर मजबूर हो गया कि हमारे समुदाय के लोगों का जीवन बेहतर कैसे हो सकता है । ढाई हजार साल से बेहतर नहीं हुआ । जिन लोगों का यहां शासन था वे ढाई हजार साल से गुलामी कर रहे है!"

"किस सच्चाई की बात कर रहे हैं आप?"

"बताता हूं । आप लोग धैर्य से सुनो और बताने से पहले मैं स्पष्ट कर दूं कि मेरा लक्ष्य यह कतई नहीं है कि नयाना समुदाय के लोगों को मुण्डक समुदाय के लोगों के खिलाफ भड़काना बल्कि मेरा उद्देश्य है हमारे समुदाय के लोगों को सच्चाई बताना बाकी यह आप लोगों पर है कि उसके बाद आप सब क्या निर्णय लेते हैं!"

"ठीक है बताइए क्या सच्चाई है हमें भी तो पता चले!"

हाल में कुछ पल सन्नाटा छाया रहा ।

निमांडा ने उन्हें सच्चाई बताई।

"आपके कहने का मतलब है कि गंडक और दंडक हमारे हीरोज थे और मुंडक और उसके समुदाय के लोग खलनायक थे?"

"अगर आप लोग ऐसे ही समझते हैं तो..हा यही हकीकत है।"

"आपको इसके बारे में कैसे पता चला?"

हर एक की नजर उसी पर आकर स्थिर हो गई थी।

निमांडा ने जवाब में सामंता की ओर देखा और फिर सामंता खड़े होकर कहा,"निमांडा जी ने अभी जो भी कुछ कहा वह सब कुछ सच है। ढाई हजार साल पहले के उसे दौर में जाकर मैंने खुद देखा है। तभी मुझे सच्चाई पता चली।"

"आप यह कहना चाहते हैं की ढाई हजार साल के उसे दौर में आप गए और आपने पता किया पर मुझे तो यह बेहूदा बात लग रही है ..ऐसा कहीं होता है?"

"जिसको नहीं पता है उसको ऐसा ही लगेगा और यकीन मानो मैं ढाई हजार साल की यात्रा पूरी करके उस कालखंड में गया था! मेरे वैज्ञानिक दोस्त जन्मता ने टाइम मशीन बनाई जो टाइम ट्रेवल करती है। क्योंकि मैं भी पहले मुंडक शिब्रा का भक्त था और उसे बहुत मानता था । मेरी भी इच्छा थी कि काश मैं भी उसे दौर में होता तो अपने समुदाय के लोगों के लिए मुण्डक के साथ शैतानों से लड़ता। गंडक और दंडक को जैसा कि शैतान बताया जाता है मैं भी उन्हें शैतान मानता था । यह बात मेरे दोस्त को पता थी और उसने जब बरसो की मेहनत से उस आविष्कार को साकार कर दिखाया । उसने मुझे बताया इस बारे मे,फिर हम दोनों ही उस टाइम मशीन के जरिए उसे दौर में पहुंचे थे और सारी हकीकत पता चली थी!"

कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया । फिर खुसर फसल होने लगी।

"आपका वह वैज्ञानिक दोस्त कहां है? क्या वह हमें टाइम मशीन दिखा सकता है या हम में से कोई वहां जाना चाहे तो जा सकता है?"

" नहीं।"

" क्यों?"

"क्योंकि मेरा दोस्त जिसे मैं अपना जिगरी दोस्त समझता था उसे जब पता चला कि मैं अपने लोगों को नयाना समुदाय के लोगों को सच्चाई बताना चाहता हूं , उन्हें उनका हक दिलाना चाहता हूं तो उसे लगा कि अगर नयाना समुदाय के लोग जागरुक हो गए और उन्होंने मुंडक समुदाय के लोगों के खिलाफ बिगुल फूंक दिया तो शासन करने की मांग करने लगेगे तो गजब हो जाएगा इसीलिए उसने मेरा साथ छोड़ दिया बल्कि अब तो इस बात से भी इनकार करता है कि कोई टाइम मशीन बनाई थी ऐसा इसलिए है क्योंकि वह मुंडक समुदाय से ताल्लुक रखता है। वह नहीं चाहता कि मुण्डक समुदाय का शासन यहां से खत्म हो और हमारे समुदाय के लोग राज करे । बेहतर जिंदगी जी सके। जबकि मेरा उद्देश्य यही है कि इस देश में हमारे समुदाय के लोगों का ही राज हो जैसा हजारों साल पहले राज चलता था, सबसे उन्नत विकसित समुदाय था हमारा । ढाई हजार साल पहले का वही गौरव फिर से हम हासिल कर सके।"

एक बार फिर से वहां पर खामोशी पसर गई।

"अगर आपकी बात सच है तो यक़ीनन हमारे समुदाय के साथ बहुत बुरा हुआ । ढाई हजार साल से हम क्या सोच रहे हैं और हकीकत में क्या है! पर आपने जो बातें बताई है उन्हें मनाना थोड़ा मुश्किल हो रहा है!"एक युवक ने खड़े होकर कहा।

"मैं समझ सकता हूं । पर क्या आप लोगों को नहीं लगता की मुण्डक समुदाय के लोग हमारे समुदाय के लोगों को बेवकूफ बनाए हुए । अगर सच में मुंडक शिब्रा होता तो क्या वह हम सब के साथ हमारे समुदाय के लोगों को बेहतर जिंदगी जीने का अवसर नहीं देता ..क्या वह नहीं चाहता कि यहां के शासन में भी हमारे समुदाय के लोगों का हिस्सा हो जैसे मुंडक समुदाय के लोगो का है । हमारे समुदाय के लोग भी बेहतर जिंदगी जिए। हमारे लोगों में भी बेहतर शिक्षा हो ,बेहतर संसाधनों का प्रयोग कर रहे हो । कभी सोच कर देखिए आपको खुद ही पता चल जाएगा की हम लोगों के दिमाग में ऐसी सोच भरी गई ताकि हम लोग दिमागी रूप से गुलाम बने रहे और सारी अच्छी चीजो पर मुण्डक समाज के लोगों का अधिकार हो। आप लोगों में से काफी लड़के ऐसे होंगे जो इतना तो पढ़े ही होंगे जो इस बात को समझते होंगे कि किसी भी शख्स को जिस तरह रखा जाए उसकी सोच भी उसी तरह हो जाती है जब तक कि उसे हकीकत बताई ना जाए!"इस पर निमांडा बोला।

कुछ लड़के हां में गर्दन हिलाने लगे।

"आप लोगों ने उस कालपुत्र के बारे में तो सुना ही होगा जो मुण्डक समुदाय के लोगों को ही टारगेट कर रहा है और उन्हें मौत के घाट उतार रहा है । हालांकि हमें नहीं पता वह कौन है पर मुंडक समुदाय के लोग सोचते हैं यहां का शासन सोचता है कि वह हमारे समुदाय से ही है और हमें भी ऐसा ही लगता है पर इस समय मुंडक समुदाय या शासन करने वाले लोगों ने गहरी चाल चली है । वे जानते हैं कि हमारे समुदाय में मुंडक शिब्रा के लिए बहुत प्रेम है। अगाध श्रद्धा है । उसी का सहारा लेकर उन्होंने अपने समुदाय के लोगों को कालपुत्र के बारे में भड़काना शुरू किया है । वह नहीं चाहते कि वह अज्ञात काल पुत्र उनके खिलाफ कोई एक्शन ले। हमारे समुदाय के लोगों से ही उस काल पुत्र को पकड़वाकर उसे खत्म करवाना चाहते हैं

और आप देख ही रहे हैं कि हमारे समुदाय के ज्यादातर लोग भड़के हुए हैं इसी बात को लेकर क्योंकि उन्हें सच्चाई नहीं पता । सच्चाई पता होती तो वह काल पुत्र का समर्थन करते क्योंकि वह जो कोई भी हो हमारे लिए ही काम कर रहा है । शायद उसे भी सच्चाई पता है या फिर वह कोई सताया हुआ व्यक्ति है । जैसे की ब्विज था उसके बारे में तो आप लोग जानते ही होंगे?"

"हां। जानते है।"

"तो आप लोग जितने भी नए लोग हैं क्या कहते हैं इस बारे में? जो पहले आ चुके हैं वे सब जानते हैं, समझते हैं और हमारी बात से सहमत हैं।"

कुछ पल मौन छाया रहा फिर एक लड़का खड़ा हुआ और बोला,"आप लोगों की बातें सुनकर मुझे भी लगता है की हकीकत यही है । हमें अभी तक झूठी गढ़ी हुई बाते बता कर बरगलाया गया!"

" हां सच यही है। हमारे संप्रदाय को गुलामी में जीवन जीने के लिए विवश किया गया । उनकी सोच को गुलाम बनाया गया।"

"तो आप सब लोग मेरे साथ हैं? हमें अपने समुदाय को पुराने गौरव हासिल करने के लिए काम करना पड़ेगा!"

"बिल्कुल हम सब आपके साथ हैं । आप बताइए हमें क्या करना है?"लगभग सभी युवक एक साथ बोले उनके जोश को देखकर निमांडा और सामंता को बहुत खुशी हुई।

वह अपने आगे की रणनीति बताने लगे।

****

वह एक नदी के किनारे बना खूबसूरत सा रेस्टोरेंट था। जहां पर उस रेस्टोरेंट के खुले हुए हरे-भरे लोन में सजा धजा मुरुदंड खूबसूरत त्रिवेला के साथ बैठा हुआ था। उस खुले हुए परिसर में और भी कुछ मेजे और कुर्सियां पड़ी थी जिन पर लोग बैठे थे। और खा पी रहे थे ,इंजॉय कर रहे थे । उन सब से अलग थोड़ी दूर पर एक मेज पर वे दोनों काबिज थे। और खा पी रहे थे । बातचीत कर रहे थे। मुरुदंड खुद कार से उसके घर पहुंचा था और उसे साथ लेकर उस रेस्टोरेंट तक लाया था। सुबह का वक्त था । नदी के किनारे बने ऊंची पहाड़ी पर खूबसूरत रेस्टोरेंट की बात ही अलग थी। बड़ा ही आकर्षक व्यू था। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली । लेकिन त्रिवेला शुरू से ही उसके साथ कंफर्टेबल नहीं जान पड़ती थी।

"लगता है तुम मेरे साथ अनकंफरटेबल फील कर रही हो । मैं देख रहा हूं हम लोग जब से आए हैं तब से तुम्हारा मूड कुछ ठीक नहीं है । क्या बात है?"लड़के ने उसकी भावनाओं को शायद भाप गया था इसीलिए पूछा।

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं है!"उसने टालने वाले अंदाज में कहा।

"मैंने तुम्हें यहां चलने के लिए कहा था तब भी मुझे ऐसा लगा था जैसे तुम्हारा मन न हो । मैंने ही जोर देकर कहा था तब तुम्हें आना पड़ा। क्या कुछ गड़बड़ है या तुम्हारा मूड ठीक नहीं, तबीयत खराब है ..क्या बात है?"

"नहीं दरअसल हम लोग इतने सालों बाद मिल रहे हैं शायद उसकी वजह से है!"

" हूं।"उसे भी लगा कि शायद यही बात होगी इसीलिए उसने भी इस बात को टाल दिया और फिर मुस्कुराते हुए बोला,"हम लोग बचपन के दोस्त हैं। मैं विदेश में कितने ही साल रहा हूं पर तुम्हारी याद मुझे हमेशा आती थी?"

याद आती थी पर एक बार भी संपर्क करने की कोशिश नहीं की। त्रिवेला का मन गुस्से से भर गया क्योंकि वह जानती थी वह झूठ बोल रहा है अगर उसे उसकी याद आती होती तो न जाने कितनी बार उसे संपर्क किया होता ,बात की होती है पर ऐसा कुछ नहीं किया था । उसे पता था कि वह झूठ बोल रहा है विदेश में जाकर वहां लड़कियों की क्या कमी थी। पर फिर भी वह उसे नाराज नहीं करना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी वह देश के तानाशाह युगांडा का इकलौता बेटा है। इसलिए वह मुस्कुरा कर बोली," अच्छा। मुझे तो लगा था कि तुम मुझे भूल ही चुके हो?"

"तुम्हें भूलना मेरे बस की बात नहीं है। मैंने तो बचपन में ही तय कर लिया था कि मैं तुम्हें अपना जीवन साथी बनाऊंगा!"

त्रिवेला को सामंता की याद आ गई । उसका दिल धक से कर गया क्योंकि उसने उसे ही अपने जीवन साथी के रूप में देखा था। सोचा था। उसके ख्वाबों में रात दिन बस एक ही छवि थी और वह थी सामंता की जिसके साथ वह पूरा जीवन गुजारना चाहती थी। उसके साथ ही उसने जीवन में बड़े-बड़े अरमान संजो रखे थे वह उन्हें कैसे टूटने देती । उसका दिल जोर जोर से धड़कने लगा।

"वैसे तुम्हारा क्या इरादा है..?"मुरुदंड ने त्रिवेला की आंखों में झांकते हुए प्रश्न किया पर उसे जवाब देने का वक्त भी ना देते हुए उसने खुद ही जवाब दे दिया," तुम्हारा इरादा जो भी हो मुझे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता ! मैं तो तुम्हें बचपन से ही अपना मान चुका हूं और हमेशा अपना मानता रहूंगा । मेरा ख्वाब था कि तुम्हें इस देश की रानी बनाकर रखूंगा और देखो वक्त आ भी गया अब मैं हमेशा यही रहूंगा । हम दोनों शादी करके इस देश पर राज करेंगे! क्या बात है ?कहां खो गई?"

लड़की का ध्यान उसकी बातों पर बिल्कुल भी नहीं था वह शायद सामंता के बारे में ही सोच रही थी और इसीलिए शायद चौंक पड़ी।

" ओह हां हां बिल्कुल क्यों नहीं ..इतने बड़े देश की रानी बनना क्या कोई छोटी-मोटी बात है। ऐसे ऑफर को कौन ठुकरा देगा?"वह अपने दिल की बात नहीं बताना चाहती थी । वह जानती थी मुरुदंड बचपन से ही जिद्दी है जिस चीज को हासिल करना चाहता है वह करके ही मानता है और वह कहीं गुस्सा न हो जाए इसीलिए उसने दिल की बात रखने के लिए कह दी। अगर वह स्पष्ट कह देती तो वह जानती थी कि वह गुस्सा हो जाएगा और गुस्से में वह क्या कर सकता है कोई भी इस बारे में सोच भी नहीं सकता। फिलहाल वह मामला शांत रखना चाहती थी इसलिए उसने उसका दिल रखने के लिए कह दिया।

"मुझे पहले ही पता था तुम्हारे दिल में भी मेरे लिए वही भाव है जो मेरे दिल में है!"त्रिवेला की बात सुनकर वह खुश हो गया ऐसा लगा जैसे उसके दिल में खुशी के लड्डू फूटने लगे हो।

लड़की केवल मुस्कुराई। वह सच्चाई को छिपाए रखना चाहती थी इसीलिए उसने अपनी मुस्कुराहट में बनावटी पन नहीं आने दिया।

मुरूदंड ने त्रिवेला का हाथ थाम लिया । त्रिवेला हाथ छुड़ाना चाहती थी पर छुड़ा नहीं पाई । वैसा कुछ भी वह चाह कर भी नहीं करना चाहती थी जिससे उसेको पता चलता है कि वह उसे बिल्कुल भी नहीं चाहती है।

मुरूदंड त्रिवेला का हाथ अपने दोनों हाथों में लिए बैठा था । प्यार से उसकी ओर निहार रहा था जबकि त्रिवेला केवल उसकी तरफ प्यार से देखने की एक्टिंग कर रही थी।

तभी अचानक एक सरसराता हुआ तीर उन दोनों के बीच से गुजर कर आगे खाली पड़ी एक कुर्सी में धस गया।

वे दोनों बुरी तरह चौक गए। वहां जो स्टाफ काम कर रहा था उनके साथ-साथ वहां बैठे सभी लोग उछल कर अपनी जगह खड़े हो गए।

" यह क्या था?"उनके स्टाफ का जब एक व्यक्ति वहां घबरा कर पहुंचा तो मुरुदंड अपनी जगह पर खड़े होकर गुस्से में उबल पड़ा।

" प.. पता नही।" कर्मचारी बुरी तरह हड़बड़ा गया। उसकी खुद समझ में नहीं आया कि अचानक यह क्या हुआ।

जिस दिशा से तीर आया था मुरुदंड उस ओर देखने लगा। उसे दूर घोड़े पर सवार एक काला लबादा धारी नजर आया। जो उसे देखते ही देखते वापस नदी के किनारे जंगल में चला गया और आंखों से ओझल हो गया। यह पलक झपकते इतनी तेजी से हुआ था कोई कुछ समझ नहीं पाया।

" कौन था वो?" मुरूदंड ने पास में खड़े रेस्टोरेंट के एक स्टाफ के कर्मचारी से गुस्से में पूछा तो गए घबराकर बोला," का.. काल पुत्र होगा!"

" कालपुत्र! ये कौन है? और उसने यहां तीर क्यों चलाया? हम पर उसने हमला क्यों किया?"

स्टाफ के आदमी ने काल पुत्र के बारे में उसे बताया की कैसे वह मुण्डक समुदाय के लोगों को टारगेट करता है और उनके साथ देने वाले हर शख्स को भी मार डालता है! इस बार लगता है निशाना चूक गया।"

" क्या!"

" कु..कुछ नहीं।"

" कौन है ये कलपुत्र?"उसने गुस्से में चिल्ला कर पूछा।

"उसके बारे में किसी को कुछ नहीं पता । वह प्रेत की तरह अचानक कहीं भी प्रकट हो जाता है और मार कर गायब हो जाता है!"

"तुम्हें इस कालपुत्र के बारे में कुछ पता है?" उसने पास में खड़ी त्रिवेला से पूछा तो वह हकलाकर बोली,"मुझे भी.. इतना ही पता है जितना की इस आदमी को!"

" हूं।"

"मुझे लगता है हमें यहां से चलना चाहिए!" अचानक लडकी ने सुझाव दिया।

आखिरकार वहां पर खतरा भाप कर उसने भी वहां से चले जाने का निर्णय किया।

" ठीक है चलो।"

दोनों कार में बैठकर वहां से रुखसत हो गए।

****

यह घटना सामान्य घटना नहीं थी । इस घटना के बारे में जैसे ही मेयर को और युगांडा को पता चला खासकर युगांडा को तो उसने अपने बेटे को बुलाकर वर्तमान स्थिति के बारे में उसे अवगत कराया। काल पुत्र के बारे में जितनी भी डिटेल उसके पास थी उसने बता डाली। न सिर्फ बताई बल्कि उसे सचेत रहने के लिए भी कहा और बोला कि वह कहीं भी जाए सिक्योरिटी के साथ जाए । उसे बता कर जाए । वह अकेला कहीं नहीं जाएगा। मुरुदंड त्रिवेला के साथ चुप चाप गया था रेस्टोरेंट। पिता की बात सुनकर बेटे ने हालांकि मना भी किया पर उसका बाप नहीं माना। और उसने उसके साथ 24 घंटा रहने के लिए कुछ लोगों को नियुक्त कर दिया जिनकी जिम्मेदारी थी उसे कहीं भी आए जाए वे लोग उसके साथ हमेशा रहे सुरक्षा के लिए। वह नहीं चाहता था की कालपुत्र जो मुंडक समुदाय के लिए काल बन कर घूम रहा है उसके बेटे को कुछ हानि पहुंचा पाए । इस बार निशाना चूक गया जरूरी नहीं की हर बार उसका निशान चूके।

मेयर को भी अपने घर पर इस घटना के बारे में पता चलते ही त्रिवेला से साफ-साफ शब्दों में कह दिया था कि उसे इस तरह कहीं भी आना-जाना नहीं चाहिए । कालपुत्र मुण्डक समुदाय के लोगों के लिए साक्षात् मौत बना घूम रहा है हालांकि अभी तक उसने किसी भी स्त्री को नहीं मारा था पर इस बात की कोई गारंटी भी नहीं थी । वह स्त्रियों को नहीं मारता । अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए मेयर ने उसे सख्त अल्फ़ाज़ में कह दिया था कि आइंदा कभी कहीं जाए तो सिक्योरिटी के साथ जाए। उसने अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए दो लोगों को नियुक्त कर दिया था परमानेंटली।

आज मुरुदंड के आने की खुशी में युगांडा ने अपने किले जैसे घर में भव्य पार्टी दी थी जिसमें कई गणमान्य व्यक्ति आए हुए थे। पार्टी में जो सबसे अहम और खास बात हुई थी वह थी मुरुदंड के पिता युगांडा द्वारा उसकी शादी की घोषणा जो उसने और मेयर ने मिलकर की थी । घोषणा में कहा गया था कि कुछ दिनों बाद मुरुदंड की शादी मेयर की बेटी त्रिवेला से की जाएगी। दोनों बचपन के मित्र हैं और उन दोनों को शादी के बंधन में उनके घर वाले बांधना चाहते हैं। त्रिवेला को एक धक्का सा लगा था पर वहां वह कुछ कह नहीं पाई बल्कि स्टेज पर बस मुस्कुराती ही रही । मुरुदंड ने उसका हाथ पकड़ लिया था तभी एक तीर फिर से सरसराते हुए उन दोनों के बीच से गुजर कर पीछे खंभे में गड़ गए।।

यह घटना इतनी जल्दी घटी थी कि किसी के कुछ भी समझ में नहीं आया पर जब तक समझ में आया सबके होश काफ़ूर हो गए थे । तीर जरा सा इधर उधर हो तो उन दोनों में से किसी के भी सीने में गढ़ सकता था पर फिलहाल ऐसा नहीं था।

जिस दिशा में तीर आया था उस दिशा में सब देखने लगे और फिर कोई जोर से चिल्लाया था,"वो रहा छत पर ! उसे पकड़ो । वह भागने ना पाए!"

पार्टी महल में एक खुलें हरे-भरे परिसर में हो रही थी। वह जगह चारों तरफ से किले जैसी दीवाल से घिरा हुआ था सुरक्षित था सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम था पर फिर भी वह छत पर कैसे पहुंच गया किसी के समझ में नहीं आ रहा था।

हां जो सिक्योरिटी गार्ड तैनात किए गए थे वह भी नजर नहीं आ रहे थे। किले की दीवार पर खड़ा हुआ शख्स काला लबादा ओढ़े हुए था। सब जानते थे वह कालपुत्र है। जैसे ही नीचे से कुछ सिक्योरिटी गार्ड उसे पकड़ने के लिए ऊपर की ओर दौड़े साइड में सीढ़ियां थी उनकी तरफ वैसे ही वह कालपुत्र गायब हो गया।

सिक्योरिटी गार्ड जल्दी से सीढ़ियों से चढ़ते हुए उस जगह पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां पर तैनात सारे सुरक्षाकर्मी मरे पड़े हैं। सबके सीने में तीर लगे थे । उनकी छातियों पर कालपुत्र लिखा था खून से। दीवार पर एक लंगर जैसा फंसा हुआ था नीचे रस्सी लटक रही थी उन्हें समझते देर न लगी कि इस रस्सी के सहारे से कालपुत्र ऊपर तक पहुंचा होगा। वह दीवार पर खड़े नीचे घोड़े पर सवार कालपुत्र को भागते हुए देखते रहे हालांकि उन्होंने जब होश संभाला तो अपने हथियारों से हमला भी किया पर उन्हें कोई सफलता हाथ नहीं लगी। वह उनकी रेंज से बहुत दूर जा चुका था।

इस हमले ने सबको हैरान कर दिया था । कोई इस बात को सोच भी नहीं सकता था कि वह अज्ञात कालपुत्र वहां जाकर ऐसी हरकत कर सकता है।

सब इस बात का शुक्र मना रहे थे कि कोई ज्यादा बड़ी अनहोनी नहीं हुई । उसका तीर मुरुदंड को यदि लग जाता या त्रिवेला या किसी अन्य को लग जाता तो कयामत आ जाती पर ऐसा नहीं हुआ था । क्या ऐसा तीर चलाने वाले की गलती की वजह से हुआ था या फिर उसने जान बूझकर नहीं मारा । किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"काल पुत्र ने यहां आकर हमला करके हमें चुनौती दी है। हमें बताया है कि वह कहीं भी पहुंच सकता है और कुछ भी कर सकता है । मुझे किसी भी हाल में काल पुत्र को जिंदा या मुर्दा पकड़ कर लाओ!"युगांडा ने मेयर को सख्त आदेश दिया क्योंकि सुरक्षा का जिम्मा उसी के हाथ होता था। काल पुत्र ने उसकी अच्छी बजाई थी। युगांडा ने उसके साथ पहली बार गुस्से में बात की थी और साफ-साफ सख्त लहजे में चेतावनी दे दी थी।और यह भी कहा था कि अगर उसके बस का यह काम नहीं है तो बताएं वह किसी और को सौंप सकता है पर उसे काल पुत्र जिंदा या मुर्दा चाहिए।

मेयर जो खुद हैरान था कि काल पुत्र ने युगांडा के महल में आकर वहां पर तीर से हमला करके बड़ा दुस्साहस का काम किया था । ऐसा तो उसने सोचा भी नहीं था और इस हमले से वह काफी घबराया हुआ भी था। फिर भी साहस बटोर कर उसने कहा था,"आप फिक्र न करें इस बार काल पुत्र बचेगा नहीं। हम उसे ढूंढ कर जिंदा पकड़ कर या फिर मार कर आपके पास जरूर लाएंगे!"

"कुछ दिनों बाद मुंडक पर्व है उसमें मैं अपने बेटे मुरुदंड को यहां का राजा घोषित करूंगा । मैं उसमें कोई भी बावल , विघ्न बाधा नहीं चाहता हूं समझ गए तुम!"

" जी।"

*****

दोपहर का समय था। आसमान में हालांकि बादल थे । ठंडी ठंडी हवा चल रही थी। बादलों को देखकर लगता था कि कुछ ही देर में वर्षा हो सकती है। ऊपर से नदी का किनारा । आसपास जंगल। वहीं पर एक मखमली घास पर त्रिवेला और सामंता के साथ मौजूद थी। कुछ देर पहले

ही वह कार से उसकी गेराज में पहुंची थी और उसे जबरदस्ती यहां ले आई थी। वह तो मना कर रहा था पर वह जिद पर अड़ी रही और तब उसे यहां तक आना ही पड़ा था। पहले भी दोनों मिलते थे तो एक दूसरे को देखकर ही खुश हो जाते थे पर अब कुछ दिनों से उन दोनों के बीच वैसा भाव नहीं दिखता था । लडकी की तरफ से तो कोई कमी नहीं आई थी पर सामंता की ओर से काफी फीका फीका माहौल था। उसके चेहरे पर कोई खुशी नहीं थी। वह चुपचाप शांत बैठा नदी को घूर रहा था।

"यहां कितनी शांति है ! तुम्हें याद है हम यहां पर कितनी बार आ चुके हैं?"त्रिवेला ने सन्नाटा खत्म करने के इरादे से मुस्कुरा कर कहा।

सामंता ने कोई जवाब नहीं दिया।

" बोलो ना ! इस तरह उदास होकर मत बैठो। मुझे तुम्हारा उदास चेहरा बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।"

"तुम जब मिली थी तो कह रही थी कि कोई जरूरी बात करनी है?"सामंता ने धीर गंभीर स्वर में ही उसे याद दिलाया जबकि उसने जो पूछा था उसकी बात को उसने पूरी तरह से इग्नोर कर दिया था । इस बात ने ही शायद त्रिवेला को अंदर तक झकझोर डाला। उसे दुखी कर दिया था पर फिर भी वह स्थिति को संभाल गई । वह कुछ दिनों से अपने प्रेमी के बदले हुए मूड के बारे में अच्छी तरह वाकिफ थी ,जानती थी कि उसका इरादा इस समय क्या है। वह क्या करना चाहता है । शायद इसीलिए उसका सारा ध्यान अपने लक्ष्य की तरफ है। और उसका लक्ष्य था अपने समुदाय को न्याय दिलाना। उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाना बल्कि यह कहा जाए कि नयाना समुदाय का इस देश में शासन स्थापित करना। जो की एक बेहद जटिल काम था।

"कल युगांडा के यहां भव्य पार्टी थी । उसका बेटा मुरुदंड विदेश से पढ़कर आया है इस खुशी में । हम सब भी वहां मौजूद थे मैं और मेरे पापा । मैं वहां खुशी से नहीं गई थी पापा की जिद्द की वजह से गई थी और वहां पर युगांडा ने मेरी और मुरुदंड की शादी की घोषणा कर दी जिसमें मेरे पिता की भी सहमति है!"

सामंता की नज़रें सामने नदी के बहते हुए जल पर स्थित थी।

"तुमने कुछ कहा नहीं ? क्या इस खबर ने तुम्हें जरा भी दुःखी नहीं किया!"

"तुम जानती हो इस समय मेरा लक्ष्य क्या है और उस लक्ष्य की प्राप्ति किए बिना मैं बिखरना नहीं चाहता ! मैं ने तुमसे पहले भी कहा था कि तुम मुझे भूल जाओ!"

"मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकती!"

सामंता फिर से खामोश हो गया।

"एक बात बताना तो भूल ही गई। ," कुछ पलो की खामोशी के बाद अचानक उसे याद आया और वह बोली," वहां पर एक और बड़ी घटना घटी थी जिसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी। ।"

सामंता ने उसकी तरफ देखा। लगा जैसे पूछ रहा हो कि क्या घटना घटी।

" अचानक पता नहीं वहां पर कहां से कालपुत्र प्रकट हो गया । उस समय मैं मुरुदंड के साथ

खड़ी थी तभी उसने तीर चलाया था पर लगा हम में से किसी को नहीं । शायद उसका निशाना चूक गया। पता नहीं किस पर उसने निशाना साधा था। उसका टारगेट असल में कौन था पता नहीं चला। इस घटना के अलावा भी एक ऐसी ही घटना और घटी थी पर मैं तुम्हे बताना भूल गई थी। "

" अच्छा?" सामंता जानने का इच्छुक जान पड़ रहा था।

"जब इसके एक दिन पहले मैं और मुरुदंड एक रेस्टोरेंट के खुले हुए परिसर में बैठे थे तब वहां भी ऐसा ही एक तीर सन सनाता हुआ हम दोनों के बीच से गुजरा था। अचानक ना जाने कहा से कालपुत्र प्रकट हो गया था। उसने ही हमारी तरफ तीर छोड़ा था। पर उस बार भी निशाना चूक गया था। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि आखिर काल पुत्र क्या चाहता है । क्या सच में दोनों बार उसका निशाना चूक गया था या फिर जानबूझकर उसने ऐसा किया था और अगर ऐसा जानबुझ कर किया था तो क्यों ? क्या तुम इस बारे में कुछ बता सकते हो?"

"मैं कैसे क्या बता सकता हूं ? वैसे मुझे तो लगता है कि निशान ही चूक गया होगा !"

" जिस हिसाब से उसकी वारदाते सामने आ रही है उससे तो लगता है वह बहुत बढ़िया निशाने बाज़ है फिर कैसे?"

" तो फिर जानबूझ कर उसने ग़लत निशाना लगाया होगा।"

" क्यों?"

उसने कुछ पल सोचा और फिर कहा," शायद उसे तुम्हारा मुरुदंड से मिलना अच्छा नहीं लगता है। वह वार्निंग दे रहा हो कि तुम उससे दूर रहो।"

लड़की ने उसे घूरने लगी।

" तुम मुझे इस तरह क्यों घूर रही हो?"

लडकी टकटकी लगाए उसकी ओर देखती रही और बोली "कभी-कभी मुझे लगता है कि वह काल पुत्र तुम हो और इसीलिए निशाना चूक गया । क्या तुम्हें मेरा मुरुदंड के साथ साथ घूमना फिरना अच्छा लगता है ?

वह शांत रहा।

" कुछ तो बोलो।"

"तुम गलत सोच रही हो । ऐसा कुछ नहीं है। मैं अगर कॉल पुत्र होता तो मेरा निशाना कभी नहीं चूकता क्योंकि तुम्हें पता है मैं जिस रास्ते में हूं वह उस रास्ते की सबसे बड़ी बाधा बनकर सामने आएगा और ऐसी बाधा को इतनी आसानी से दूर करने का जब अवसर मिल रहा था तो मैं क्यों छोड़ता?"

"हां ये बात भी है। वैसे मुझे बताओ कि मैं क्या करूं। मैं उससे शादी नहीं करना चाहती। तुम्हारे कुछ भी कहने से पहले मैं ही बता देती हूं कि मैं अपने घर पर अपने पिता से इनकार नहीं कर सकती अगर कर भी दूंगी तो कोई मानेगा नहीं इसलिए इनकार करने से कोई फायदा नहीं । मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा मैं क्या करूं इसीलिए तुम्हारे पास आई हूं।"

"तुम्हें पता है एक वक्त ऐसा आएगा जब हम दोनों में जंग होने ही होनी है । उस जंग में जो

जीत गया जो बच गया तुम उसी से शादी कर लेना!"

" मै मुरूदण्ड से शादी किसी भी कीमत पर नहीं करने वाली!" लडकी बेहद गुस्से में जान पड़ी।

कुछ देर कोई कुछ नहीं बोला।

"तुम्हें पता है उस मुरुदंड की शक्ल मुंडक शिब्रा से मिलती है । मुझे तो ऐसा लगता है कि पिछले जन्म का वही मुंडक है बिल्कुल वैसा ही दिखता है। कभी-कभी मुझे लगता है कि इतिहास दोहराया जाने वाला है। तुमने भी बताया था कि पिछले जन्म में तुम समीरा थे। तुमने जन्म लिया है और मुंडक ने भी। लगता ये वक्त तुम्हे अपनी गलती सुधारने का मौका देना चाहता है तभी तो तुम्हे और मुरुदंड को वापस इस भूमि पर भेजा है। सच में कुछ बहुत भयानक होने वाला है । इस बात को सोच कर ही मैं डर जाती हूं!"

"तुमने सही कहा । पर कुछ भयानक होगा ये बहुत पहले ही तय हो गया था और उसका अब टाईम निकट आ रहा है। यह बात तो तय है क्योंकि अब नयाना समुदाय किसी की गुलामी नहीं करेगा । किसी का दास नहीं बनेगा। यहां की मिट्टी हमारी है, यहां के जंगल हमारे है, नदिया हमारी है, पहाड़ हमारे है। यहां का सबकुछ हमारा है। हमारे पुरखों का इस मिट्टी के कण कण में रक्त मिला हुआ है। उन्होने अपना खून पसीना लगा कर नयाना समुदाय को सींचा है, विकसित किया, समृद्ध किया। वह इस देश के पुराने राजा रहे हैं । उन्होंने यहां शासन किया है और फिर से उनका ही शासन होगा! कोइ दूसरा यहां कैसे राज कर सकता है!"

सामंता के चेहरे पर बुरी तरह गुस्सा और दृढ़ता दिख रही थी, चेहरे पर बेहद सख्ती थी। और आखों में ज्वालामुखी धधक रहा था।

एक बार तो त्रिवेला भी उसकी ऐसी हालत देखकर भीतर तक कांप गई। ऐसा लगा।

******

मुण्डक पर्व बेहद नजदीक आता जा रहा था। सामंता और निमाड़ा के साथ नए लड़के जुड़ रहे थे और जिनकी अच्छी खासी तादाद हो चुकी थी। निमांडा के निवास स्थान पर एक अंडर ग्राउंड बड़ा सा हाल बना हुआ था वहीं पर बड़े ही गुपचुप तरीके से मीटिंग करके लड़कों को तैयार किया जा रहा था । जो इन फ्यूचर उनके काम में मदद करने वाले थे । उन सबको ट्रेंड किया जा रहा था । सबको धनुष बाण चलाने की ट्रेनिंग के साथ लड़ाई का हर गुर सिखाया जा रहा था। निमांडा एक अच्छा धनुर्धर रहा था अपने जमाने में । सामंता भी कॉलेज टाइम एक बेहतरीन तीरंदाज था। यानी उसे भी अनुभव था । वे दोनों ही सबको धनुष बाण चलाने की ट्रेनिंग देते थे । इसके साथ साथ तलवार बाजी भी सिखाई जाती थी। उन दोनों की देखरेख में सब कुछ होता था । इन दिनों निमांडा काफी व्यस्त रहता था। अपने भक्तों से बहुत ही कम हो गया था उसका मिलना। दिन भर में एक घंटा ही अपने भक्तों को समय दे पाता था। इसके पीछे वजह उसने बताई थी कि उसका स्वास्थ ठीक नहीं रहता ।

हर चीज का इंतजाम करने में निमांडा का बहुत बड़ा रोल था। उसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । वह अपने सभी लड़कों को बेहतरीन तीरंदाज, लड़ाका बनाने में लगा था।

हालांकि लड़कों ने पूछा भी था कि आज बंदूक और गोली के जमाने में तीरंदाजी कितनी कामयाब होगी तो उन्हें जवाब दिया गया था कि फिलहाल गोली बंदूक का इंतजाम फिलहाल नहीं हो पाएगा । तानाशाह युगांडा की सख्ती के कारण। अपना काम धनुष बाण,तलवार से ही

चलाना होगा। हमारे पूर्वज चलाते थे और सब पर विजय प्राप्त कर लेते थे। वह एक योजना बद्ध तरीके से काम करेंगे तो धनुष बाण से ही सफलता मिल जाएगी । बाकी उन्हें आश्वासन दिया गया था कि बाकी आधुनिक हथियारों का भी प्रबंध किया जाएगा और वह भी उन्हें वक्त पर मुहैया कराए जायेंगे। हथियार बड़े ही कड़ी निगरानी में रखे होते थे जहां की सुरक्षा व्यवस्था बहुत टाइट थी। और उसकी एक वजह ये भी थी कि वह नहीं चाहता था कि उनकी तैयारी के बारे में किसी को पता चले अगर पहले से ही उनके बारे में किसी को पता चल गया तो मेहनत पर पानी फिर जाएगा।

" पर आज के आधुनिक जमाने में क्या हम तीर और तलवारों से सफलता प्राप्त कर पाएंगे?"लड़कों के मन में यह भारी प्रश्न हमेशा बना रहता था और लगभग सभी के समझाने के बावजूद भी पूछते रहते थे ।

"परेशान मत हो उन हथियारों का भी इंतजाम किया जाएगा!"निमांडा ने बड़े ही कॉन्फिडेंस , आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा था।

फिर भी लड़के पूरे जी जान से सीख रहे थे तलवारबाजी , तीरंदाजी और लड़ाई के अन्य गुर।

"अब हमारे पास हालांकि अच्छी खासी संख्या लड़ाकों की है और मुझे लगता है कि अभी भी नयाना समुदाय का एक बड़ा हिस्सा हमसे दूर है,हमें कुछ ऐसा करना पड़ेगा जिससे ज्यादा से ज्यादा हमारे समुदाय के लोगों का दिल और दिमाग हमारी तरफ हो जाए। ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है ताकि वक्त आने पर वह हमारे खिलाफ ना हो।"निमाड़ा ने सामंता के पास जाकर बेहद गंभीर स्वर में कहा था।

"हमें इसके लिए क्या करना चाहिए ?" उसने भी गंभीर स्वर में ही पूछा।

"हमें कुछ न कुछ तो ऐसा करना ही पड़ेगा जिससे नयाना समुदाय के ज्यादा से ज्यादा लोगों का ध्यान या जुड़ाव हमसे हो सके और मुंडक समुदाय के खिलाफ उनके मन में विद्रोह की भावना हो तभी अपने काम में कामयाब होंगे।

" पर कैसे?"

"एक आईडिया है मेरे दिमाग में!"

" अच्छा। बताइए।"

निमाड़ा ने उसे बताया जिसे सुनकर वह पहले तो काफी देर शांत बना रहा फिर चिंतित स्वर में बोला,"ऐसा करना क्या ठीक होगा?"

"ताकत वर दुश्मनों से सबको आजाद करने के लिए ऐसा कुछ करना ही पड़ेगा । मौजूदा वक्त की यही मांग है।"

" हूं।"

****

काल पुत्र ने सब की नाक में दम कर रखा था और जब से कत्लेआम शुरु किया था हर तरफ त्राहि त्राहि मची हुई थी। देश की तानाशाही को खुला चैलेंज दे रहा था वह अज्ञात कातिल। मेयर के आदेश पर उसे ऐसे ढूंढा जा रहा था जैसे घर में लगी आग के वक्त पानी ढूंढा जाता

है। क्योंकि पानी न मिला तो घर जल कर राख हो जाएगा। कातिल ना मिला तो पूरा देश बर्बाद हो जाएगा। पूरी पुलिस फोर्स, सुरक्षा की अन्य एजेंसियां सब उसे बुरी तरह ढूंढने के अतिमहत्वपूर्ण इस काम में लगे हुए थे।

जैसा कि सबको अनुमान था कि कालपुत्र का ताल्लुख नयाना समुदाय से ही है । इसीलिए पुलिस वाले नयाना कम्युनिटी से जुड़े हर व्यक्ति से कड़ाई से पूछ तांछ कर रहे थे ,जिन पर जरा भी शक होता था उनके साथ बेहद बेरहमी से पेश आ रहे थे जिसके चलते लोग बहुत परेशान थे पर कुछ कह नहीं पा रहे थे।

इस समय एक थाने में नयाना समुदाय के कुछ लड़कों को पकड़ कर लाया गया था । उन पर कालपुत्र होने का शक था और उनसे कड़ाई से पूछताछ की जा रही थी ।

थाने के अंदर उन्हें उल्टा लटका कर बुरी तरह मारा पीटा जा रहा था।

"यह साले लगता है कुछ नहीं बताएंगे?"लड़कों को पीटते पीटते जब सिपाही थक गया तो हथियार डालने वाले अंदाज में गालियां बकते हुए बोला पर तभी पास खड़े शैतान से दिखने वाले काले कलूटे दरोगा ने सिपाही के हाथ से उस मोटे दंडे को छुड़ा लिया और क्रोध में उन लड़कों पर बरसाना शुरू कर दिया।

"बस कीजिए सर! नहीं तो ये सब मर जाएंगे!"दरोगा जब मारपीट करने से काफी देर तक रुका नहीं और लड़कों की चीखे बढ़ गई और पूरे थाने में गूंजने लगी तब एक सिपाही जो वहीं मौजूद था ने घबरा कर कहा।

"मर जाने दो सालों को! जब तक यह कुछ बोलेंगे नहीं मैं इनको छोड़ने वाला नहीं ।" दरोगा कुछ ज्यादा ही गुस्से में जान पड़ता था। वह किसी की नहीं सुन रहा था।

"मुझे तो लगता है सर कि वह द्विज ही कालपुत्र होगा। उसी में बहुत अकड़ थी और उसी ने मुण्डक पर्व पर बलि का विरोध किया था!"

दरोगा सिपाही की बात सुनकर ठिठका । कुछ पल सोच में डूबा रहा और फिर लड़कों से मुखातिब होकर पूछा,"तुम में से कोई जानता है उस दुष्ट द्विज के बारे में ? कुछ भी जानते हो तो बताओ । मै तुम्हे अभी छोड़ दूंगा।"

थाने में उल्टे लटक रहे सभी लड़कों ने इनके जिस्मो पर अंडरवियर को छोड़कर और कोई कपड़ा नहीं था तुरंत ना मैं गर्दन हिलाने लगे।

"यह साले कुछ नहीं बताएंगे!"दरोगा गुस्से में फिर पिल पड़ा उन सब पर और कुछ देर और मारपीट करने के बाद जब सिपाही ने रोकना चाहा तो उसने गुस्से में डंडा वहीं फेंक कर लॉकअप से बाहर निकल गया। लड़कों की चीखे फिर भी गूंजती रही।

दरोगा बाहर अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। वह बुरी तरह हाफ रहा था ऐसा लगता था जैसे बहुत मेहनत करके आया हो और वह उस समय भी बहुत आग बबूला था। शायद मेयर की तरफ से मिली वार्निंग की वजह से जिसमें कहा गया था कि कालपुत्र को जिंदा मुर्दा जैसे भी हो पकड़ो नहीं तो नौकरी गंवाओगे।

वह कुर्सी पर बैठा खुद को रिलेक्स कर ही रहा था कि तभी वहां वह सिपाही दौड़ता हुआ आया और घबराए स्वर में बोला,"साहब ! साहब! वे लड़के.. वे लड़के.. ।

" क्या हुआ.. उन लड़कों ने बता दिया कालपुत्र के बारे में?"

" नहीं।"

" फिर?"

" वे.. वे लड़के मर गए।"

" मर गए ! कैसे?"दरोगा घबरा कर अपनी कुर्सी से उठ बैठा।

"शायद आपकी ज्यादा मारपीट करने की वजह से!" सिपाही ने धीरे से दबी जुबान में कहा।

दरोगा तुरंत सिपाही के साथ दौड़कर लॉकअप में पहुंचा । देखा उल्टे लटक रहे लड़के बेजुबान हो चुके थे । उन सब की आंखें बाहर को निकली हुई थी। पलके नहीं झपक रही थी। शरीर में कोई हरकत नहीं हो रही थी।

"सबको जल्दी से नीचे उतारो और उनकी लाशों को ठिकाने लगाने का इंतजाम करो!"

"पर हम लोग इनको घर से उठाकर लाए थे। उनके घर वालों को क्या जवाब देंगे साहब?"

दरोगा का दिमाग भी जाम होता जान पड़ा। पर उसने दिमाग पर जोर डाला। आइडिया सोचा।

"कह देंगे ये लॉकअप तोड़कर भाग गए शायद इन्हीं में से कोई काल पुत्र था!" दरोगा ने कहा," बाकी के उसके सहयोगी थे।"

सिपाही को कुछ कहते नहीं बना पर अपने दरोगा का हुकुम को तो उसे बजाना ही था । उसने अपने कुछ साथियो के साथ मिलकर लड़कों की लाशे नीचे उतारने लगा।

उसी समय थाने के बाहर काफी शोर उभरा।

"बाहर यह शोर कैसा है?" सब ठिठक गए थे। पर आवाज सिर्फ दरोगा की निकली।

तभी लॉकअप रूम में बाहर से एक सिपाही दौड़ता हुआ आया और घबराए स्वर में बोला,"साहब! लड़कों के घर वाले और साथ में उनके गांव वाले भी हैं वह लड़कों को छोड़ देने की जिद कर रहे हैं!"

सिपाही की बात सुनकर दरोगा और सिपाहियों दोनों को पसीना आ गया।

उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहें।

अचानक दरोगा सिपाही से बोला,"सब से जाकर कहो कि लड़के लॉकअप तोड़कर भाग गए !"

पर वह सिपाही दरोगा के फरमान को बाहर भीड़ को सुनाने जाता इससे पहले ही एक दूसरा पुलिस वाला भागता हुआ वहां आया और हांफते हुए घबराए स्वर में बोला," भीड़ किसी भी वक्त अंदर आ सकती है। कोई हमारी नहीं सुन रहा।"

"भीड़ तो अंदर ही घुसी चली आ रही है साहब!"एक और सिपाही ने भीड़ को अंदर आते देखा तो चीखा।

सबके प्राण कांप गए। कोई और वक्त होता तो भीड़ को थाने के अंदर घुस ने की कभी हिम्मत नहीं पड़ती पर अभी सिचुएशन विकट थी। लॉकअप में लड़कों की लाशे लटक रही

थी। जिसका जवाब उन्हें देना पड़ता जो देने की स्थिति में वे नहीं थे।

"अरे उनको थाने के बाहर करो जाकर । अंदर मत आने दो । ," फिर भी दरोगा चीखा। यह उसकी भौखलाहट साफ तौर पर दिख रही थी।

"अंदर कैसे आ रहे हैं? तुम सब क्या कर रहे हो । जाओ उन सब को रोको!"

पर तभी भीड़ जिसमें 60, 70 लोग थे थाने के अंदर घुस आए और सीधे उस जगह पर आ गए जहां पर लॉकअप था और लॉकअप के अंदर लड़कों की लाशे लटक रही थी।

" ये तो मर चुके है।" भीड़ के कुछ सदस्य लॉकअप के अंदर जबरदस्ती घुस गए पुलिस वालों के रोकने के बावजूद और लड़कों को नीचे उतारने लगे पर अचानक उन्होंने लड़कों के शरीर में जब कोई हरकत नहीं देखी तो उन्हें अपने हिसाब से चेक किया और चिल्ला कर बोले।

भीड़ लडको की लाशे देखकर बौखला गई। उन सब पर मानो भूत सवार हो गया हो। उनके गुस्से के सामने पुलिस तिनका जान पड़ी। भीड़ क्रोध में पागल थी। कई पुलिस वाले तो अपनी जान बचा कर वहां से भाग गए। कुछ वही छुप गए।

पगलाई भीड़ ने थाने में उथल पुथल मचाते हुए चारों लडको की लाशे लेकर वहां से निकल गई।

पिछे लुटा पिटा दरोगा जो भाग कर थाने के पीछे जंगल में आ कर छिप गया था भौचक्का खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक ये सब क्या हो गया। कैसे हो गया। सोच नहीं पा रहा था कि आखिरकार भीड़ को यह सूचना किसने दी कि लड़के मर चुके हैं क्योंकि उसे ऐसा लगा कि उन्हें सूचना हो चुकी थी तभी इतनी तादाद में लोग आए वर्ना इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था । उन्होंने पहले भी कई बार इस प्रकार से लड़कों को उठाया था पूछताछ के लिए।

वह लॉकअप से जब निकला था तो लड़के जिंदा थे फिर अचानक चारों लड़के कैसे मर गए एक साथ इस बारे में भी उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

फिर उसका दिमाग जब स्थिर हुआ तो उसने तुंरत इस घटना की जानकारी अपने सीनियर को दी।

*****

चारों लडको की लाशों को बीच चौराहे पे रख कर भीड़ हो हल्ला कर रही थी। भीड़ की तादात हज़ार के करीब पहुंच चुकी थी। नयाना समुदाय की वह भीड़ पगलाई जान पड़ती थी । उसकी वजह थी की ऐसी घटनाएं और भी घट चुकी थी कुछ महीनो के अंदर पर उनमें से कोई कुछ बोल नहीं पाया था पर आज बरसो से गूंगे हुए लोगों को भी मौका मिल गया था और शायद इसीलिए वहां पर धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जा रही थी। थाने के लॉकअप में चार नौजवान लड़कों की मौत हुई थी। कोई साधारण मामला नहीं था। भीड़ की अगवाई कुछ नए लड़के कर रहे थे और उन लड़कों की भीड़ की सहायता के लिए सामंता और निमांडा भी वहां मौजूद थे। एक तरह से कह सकते हैं कि वे ही दोनों भीड़ के नेता थे और पुलिस द्वारा हुए अत्याचार के खिलाफ बोल रहे थे। इस समय नयाना समुदाय का हर शख्स उनके साथ ही जान पड़ता था। और सभी अत्यधिक क्रोध में भी जान पड़ रहे थे।

कुछ ही देर में वहां पर ढेर सारी पुलिस आ गई। जिस दरोगा के थाने में यह घटना घटी थी वह नदारत था। पुलिस के साथ त्रिवेला का बाप मेयर भी वहां मौजूद था और साथ में था झमोला। सबका आध्यात्मिक गुरु। जिसके आगे पूरा देश सर झुकाता था।

झमोला का भीड़ बहुत ही आदर करती थी इसीलिए उसके एक बार कहने मात्र से ही सारी भीड़ शांत हो गई थी।

"तुम सब लोग इतना शोर शराबा क्यों कर रहे हो? किसके लिए कर रहे हो ? क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि हमारे मुंडक शिब्रा के गले में जूते का हार पहनाने का जघन्य अपराध किया गया, उस अज्ञात काल पुत्र ने किया और हम उसे ढूंढ रहे हैं ताकि उसे सजा दे सकें , क्या तुम लोग नहीं चाहते कि हमारे मुण्डक शिब्रा के खिलाफ इतनी गंदी हरकत करने वाले को सजा मिले.. बोलो?"

भीड़ एकदम खामोश रही।

"मुझे पता है आप सबके दिल में भी मुण्डक शिब्रा के लिए अपार सम्मान और प्रेम है। आप सब लोग भी चाहते हैं कि उस अज्ञात दुष्ट काल पुत्र को सजा मिले पर वह ढूंढे नहीं मिल रहा है । उसी को ढूंढने के लिए पुलिस वाले रात दिन एक किए हुए हैं । रही बात इन लड़कों की मौत की तो उनकी मौत पुलिस की वजह से नहीं हुई ।"

भीड़ में खुसर फुसर होने लगी।

" मुण्डक शिब्रा के कहर से हुई जिसका अपमान किया गया । वो अथाह ताकत का मालिक है। उसने ही इन पर गाज गिराई है । आप सबको पता है कि ये लड़के कोई नेक लड़के नहीं थे । शरीफ और ईमानदार नहीं थे। इनके अंदर हजारों बुरे एब थे। और अब तो मुझे लगता है कि मुण्डक शिब्रा का हर उस शख्स पर टूटेगा जिसने इसकी शान में गुस्ताखी करने की कोशिश की है इसलिए मैं आप सबसे कहता हूं अपने-अपने घर जाइए जो निर्दोष है उस पर कोई भी आंच नहीं आएगी और जो दोषी होगा वह बचेगा नहीं। चाहे जो कुछ हो जाए।"

"मुंडक शिब्रा बड़ा शक्तिशाली है और अथाह शक्ति का मालिक है । वह उस काल पुत्र को ढूंढ क्यों नहीं देता। उस एक काल पुत्र की वजह से बाकी सब को क्यों सजा दे रहा है?"इस बार सामंता ने कमान अपने हाथ में संभाली और जब उसने यह बात कही तो झमेला के तन बदन में आग सी लग गई क्योंकि वह जानता था कि वह सभा को समाप्त कर सकता था और इसीलिए भीड़ पर ऐसा दबाव बनाया था पर सामंता के विरोध ने पानी फेर दिया क्योंकि भीड़ में से ही ज्यादातर लोग वे लड़के जो सामंता और निमाड़ा के साथ थे सब एक स्वर में बोले सब ने एक स्वर में सामंता की बात का समर्थन किया था।

बाकी भीड़ में भी उच्च स्वर में इस बात को समर्थन प्रदान किया था।

झमोला सामंता के नजदीक आया और गुस्से में बोला,"तो तुम लोगों को भड़काने का काम कर रहे हो इसका अंजाम जानते हो ना .. ना जानते हो तो द्विज याद कर लो? उसने भी ऐसी ही गलती की थी फिर मुण्डक शिब्रा की ताकत ने उसके साथ क्या किया सबको पता है आज तक उसका कुछ पता नहीं चला।"

"द्विज के साथ जो भी हुआ वह मुंडक शिब्रा ने नहीं किया बल्कि तुम सब ने किया। और सबसे बड़ी बात जैसा उसके साथ हुआ वैसा काल पुत्र के साथ भी मुंडक शिब्रा कर सकता

है। तुम्हारा ताकतवर मुण्डक शिब्रा इतना ही ताकत वर है तो काल पुत्र का पता नहीं लग पा रहा है । वह कौन है ,क्या है ? इतनी भी उसमें शक्ति नहीं है और इसीलिए उसके चक्कर में निर्दोष लोगों की जान ले रहा है अगर उसमें सच में कोई शक्ति है ,ताकत है तो वह स्वयं काल पुत्र को ढूंढ कर उसे सजा दे बाकियों को सजा क्यों दे रहा है?"

सारी भीड़ एक स्वर में चिल्लाने लगी,"सामंता ठीक कह रहा है। इसका जवाब दो!"

इसका जवाब उन दोनों के पास नहीं था।

तब तक भीड़ में शामिल सामंता और निमाड़ा के द्वारा तैयार किए गए लड़कों ने चिल्लाना शुरू कर दिया,"हमें इंसाफ चाहिए इंसाफ चाहिए जिन पुलिस वालों ने ऐसा किया है उन्हें सरेआम फांसी पर लटकाया जाए!"सारी भीड़ यही चिल्लाने लगी।

"तुमने लोगों को भड़का कर अच्छा नहीं किया । इसका अंजाम तुम्हें भूगतना पड़ेगा । तुम सबको गिरफ्तार किया जा सकता है शायद तुम्हें यहां के कानून के बारे में पता नहीं है कि इस तरह से भीड़ जमा करके शोर गोल करना कानून के खिलाफ है!"

"किस कानून की बात कर रहे हैं आप ? उसे कानून नहीं कहते उसे तानाशाही कहते। अगर सच में कानून होता तो हमारी बातें मानकर उन पुलिस वालों को इनकी वजह से इन बच्चों की जान गई है उनके खिलाफ एक्शन होता है पर बजाय उनके खिलाफ कोई भी एक्शन लेने के आप जिन पर जुल्म हुआ है उन्हीं को दबाने की कोशिश कर रहे है। यह होता है कानून ? यह कानून नहीं होता यह तानाशाही होती है और अब तानाशाही नहीं चलेगी!"

"तानाशाही नहीं चलेगी.. नहीं चलेगी!"लड़कों के साथ भीड़ भी उच्च सर में चिल्लाने लगी।

"लगता है यह सब ऐसे नहीं मानेंगे । मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। मुझे लगता था कि मेरी बात ही मान कर सब कुछ खत्म कर देंगे पर यहां तो मामला कुछ और ही चल रहा है मैं देखता हूं।" मेयर झमौला से बोला।

फिर दूर जाकर फोन पर युगांडा से बात की।

"मैंने उन्हें समझाने बुझाने की खूब कोशिश की पर वह लोग मानने को बिल्कुल तैयार नहीं । धरना तभी खत्म करेंगे जब दोषी पुलिस वालों को फांसी पर चढ़ाया जाएगा!"

"तुम बेवकूफ हो क्या ,वह पुलिस वाले हमारे समुदाय से ताल्लुक रखते हैं आज अगर हमने उनकी बात मानी तो कल आए दिन यह बात हो जाएगी । वे धरना देगे और हमें उनकी सारी बातें माननी पड़ेगी । उनके धरने को पूरी मजबूती के साथ कुचल दो इतनी की दोबारा वह कभी ऐसा धरना धरने की कोशिश ना करें!"

"लेकिन इसके परिणाम कुछ और भी हो सकते हैं। ," उसने चेताया,"हो सकता है आज हजार लोग हैं कल 10000 लोग हमारे खिलाफ खड़े हो जाएं फिर?"

"ऐसी नौबत ही नहीं आएगी । उस धरने को कुचल दो जो हमारे खिलाफ खड़ा हो । भले ही सैकड़ो लोगों को फसियों पर चढ़ाना पड़े। गोली मारने पड़े । इन सब लोगों को डरा धमका कर ही रखना होगा नहीं तो कल को यह अपने हक की मांग करेंगे और यहां पर शासन करने तक की बात करने लगेंगे। ऐसी बात अगर किसी के दिमाग में भी हो तो उसे फौरन से फौरन खत्म कर दो!"

" ठीक है।"

युगांडा से बात करने के बाद उसने तुरंत पुलिस वालों को जो संख्या में काफी ज्यादा थे पर भीड़ से कम ही थे उन पर लाठी चार्ज करने का आदेश दे दिया और यह भी कहा कि कोई अगर विरोध करें तो सीधे गोली मार दी जाए।

पुलिस वालों ने तुरंत एक्शन लिया और भीड़ पर पिल पड़ी । उन लड़कों ने कुछ विरोध भी किया और भीड़ से उन लड़कों को देखा देखी कुछ लोग भी आगे आए पर फिर सब भीड़ इधर-उधर भागने लगी । सामंता और निमाडा भी कुछ क्षण उनसे बहस करते रहे, मार खाते रहे। पर लाशों को पुलिस ने कब्जा कर ही लिया और उन सबको वहां से वापस जाना पड़ा। कुल मिलाकर आंदोलन कुचल दिया गया।

पर इस घटना से नयाना समुदाय के ज्यादा से ज्यादा लोग जागृत हो चुके थे , तानाशाही के खिलाफ उनमें गुस्सा भर चुका था जो आगे बगावत का रूप भी ले सकता था। या यह कहे कि उन्हें जागृत , गुस्सा किया जा रहा था । सामंत और निमाड़ा का यही प्लान था। इसी प्लान के तहत उन्होंने भीड़ का साथ दिया था । वह चाहते थे की पूरा नयाना समुदाय तानाशाही और मुण्डक समुदाय के खिलाफ खड़ा हो जाए हालांकि इसके लिए उन्हें कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। पर फिर उन्हें रास्ता मिला और उसके तहत ही उन चारों लड़कों को जो सच में बैड कैरेक्टर के थे। उन्हें थाने में ही मारने का प्लान बनाया गया था निमांडा की बातों से प्रभावित कुछ ऐसे लोग भी थे जो पुलिस के साथ काम करते थे उनमें से एक शख्स ने , सिपाही ने उन चारों लड़कों को दरोगा की मार पीट के बाद उसके लॉकअप से बाहर जाने पर जहर का इंजेक्शन देकर मार दिया था और उसके बाद जो कुछ हुआ वो सब प्लान हिस्सा था। गांव वालो को प्लान के मुताबिक़ ही वहां बुलाया गया था। सामंता और निमांडा का ही रचा हुआ था सारा प्लान। उसके सिखाएं पढ़ाए लड़कों ने ही भीड़ में शामिल हो कर थाने में लड़कों की मौत पर बबाल काटा था। वे लड़के ही उन सारे लोगों को लेकर थाने पहुंचे थे क्योंकि उन्होंने उन्हें बताया था कि लड़कों की मौत थाने में पुलिस के पीटने से हुई। गांव वालो ने आक्रोशित होकर उन लड़कों के साथ तुरंत थाने में चढ़ाई कर दी थी। और उसके बाद जो भी कुछ हुआ सब प्लान का हिस्सा था और उसका नतीजा यह था कि अब धीरे-धीरे सारा नयाना समुदाय में मुंडक समुदाय के खिलाफ, युगांडा की तानाशाही के खिलाफ क्रोध भर रहा था। जगह-जगह पर धरने प्रदर्शन होने लगे थे ।पुलिस वाले जिन्हें मजबूती से कुचलने की कोशिश कर रहे थे। पर सामंता , निमांडा और उसके द्वारा तैयार किया लड़के पीछे हटने वाले नहीं थे।

****

उस घटना के बाद नयाना समुदाय में भरी आक्रोश देखा जा रहा था । ज्यादातर लोग तानाशाही के खिलाफ खड़े होने लगे थे और यह बात तानाशाह को चिंता में डालने वाली थी । जबकि वो दिन बेहद नजदीक आ रहा था जब वो अपने बेटे मुरुदंड को उस देश का नया तानाशाह घोषित करने वाला था। वह कोई विघ्न बाधा नहीं चाहता था । पर देश के हालात बेकाबू हो रहे थे। तानाशाही के खिलाफ जनता का बगावत का शोर जोर पकड़ने लगा तो उसने सुरक्षा के मुख्य करता धरता मेयर को बुलाया और उससे बातचीत की।

"देश में उपद्रव कुछ ज्यादा ही बढ़ता ही जा रहा है । तुम उसको कुचलने में नाकाम हो रहे हो अगर ऐसा ही चलता रहा तो यहां की सत्ता के लिए बहुत हानिकारक होगा। मुंडक पर्व आने

वाला है और उस दिन मैं अपने बेटे को यहां का तानाशाह घोषित करने वाला हु। मैं चाहता था इस दिन कुछ भी बबाल ना हो पर वह बवाल बढ़ता ही जा रहा है!"युगांडा चिंतित होने के साथ-साथ नाराज भी था।

"यह सब उस कालपुत्र पुत्र का ही किया धरा लगता है। इसका उद्देश्य आपको पता ही है वह शायद यहां की सत्ता के खिलाफ की लोगों को खड़ा करना चाहता है और वह इसमें काफी हद तक सफल भी है । उसने मुण्डक शिब्रा के गले में जूते की माला डाल कर पहले ही बता दिया था वह क्या चाहता है। फिर हमारे लोगों को मारना शुरू किया । उसे पता था कि ऐसा करने पर हम नयाना समुदाय के लोगों पर शक करेंगे और सख्ती करेंगे । उसी सख्ती में कुछ लोग मारे भी जा सकते हैं जिनका उसने अपने हिसाब से फायदा उठाया। नयाना समुदाय के लोगों को हमारे खिलाफ भड़काने के लिए।"

"तुम्हारी बात सच जान पड़ती है पर मैं चाहता हूं कि यह विद्रोह यहीं पर थम जाए उसके लिए क्या उपाय करना चाहिए। जोर जबरदस्ती तो तुम करके देख चुके हो। झमोला भी उन्हें मुंडक शिब्रा का डर दिखा कर समझा चुका है पर उन पर कोई असर नहीं हो रहा इसीलिए मैंने एक फैसला लिया है।"

" क्या?"

"नयाना समुदाय के लोगों की मांग है उनके जितने भी लोग मारे हैं और उनकी मौत में जो भी पुलिस वाले इंवॉल्व है उन्हें सजा मिलनी चाहिए और मैंने भी निर्णय किया है कि उन सभी पुलिस वालों को सजा दी जाए। इस समय बस यही एक तरीका है जिससे नयाना समुदाय के लोगों में गुस्सा शांत किया जा सकता है और इस एक चाल से ही उस दुष्ट कालपुत्र की सारी चालाकियों को हम हरा सकते हैं!"

"बात तो आपकी ठीक है सर पर इस प्रकार से अपने ही लोगों को फांसी पर चढ़ाना क्या समझदारी होगी । कल को फिर कोई बात होगी तो नयाना समुदाय के लोग फिर से यही तरीका अपनाएंगे और फिर हमें अपने ही लोगों को फांसी पर चढ़ाना पड़ेगा!"

"ऐसा हर बार नहीं होगा । अभी मामला ताजा है उसे शांत करना बेहद जरूरी है। फिर हमें सिर्फ घोषणा ही करनी है। एक बार मामला शांत हो जाए फिर तुम उस दुष्ट कालपुत्र को ढूंढ कर खत्म करो। वह खत्म हो गया तो नयाना समुदाय के लोगों को भड़काने वाला कोई नहीं होगा!"

"ठीक है! "

"तो फिर इस खबर को कि दोषी पुलिस वालों को फांसी सजा दी जाएगी तुरंत ही पूरे देश में प्रसारित कर दिया जाए ताकि प्रदर्शन थम जाए।"

" जी।"

और इसके बाद देश में जब इस बात की घोषणा हुई कि दोषी पुलिस वालों को फांसी दी जाएगी। नयाना समुदाय के सभी लोगों का गुस्सा शांत हो गया पर यह सामंता और निमांडा के लिए बेहद बुरी खबर साबित हुई। वे नहीं चाहते थे नयाना समुदाय के लोगों का गुस्सा कम हो पर युगांडा की एक चाल ने उनके सारे किए कराए पर पानी फेर दिया था। उसके समुदाय के लोग शांत हो गए थे । सब कुछ खत्म सा हो गया । लोगों की बातें मान ली गई थी इसलिए

कोई कारण भी नहीं था आंदोलन जारी रखने का। इस बात ने सामंता और उसके साथियों की चिंताएं बढ़ा दी। उन्हें लगता था तानाशाह लोगों की बातें नहीं सुनेगा। उन्हें बल पूर्वक रोकेगा। और फिर लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच जाएगा। पर ऐसा नहीं हुआ।

"ऐसा तो हमने सोचा भी नहीं था । मुझे तो लगता था युगांडा तानाशाह है और वह अपनी जिद्द पर रहेगा । वह बलपूर्वक लोगों को दबाने की कोशिश करेगा और यही हमारे लिए फायदेमंद होता पर उसने दोषी सिपाहियों को सजा देने की घोषणा करके हमारे सारे किए कराए पर पानी फेर दिया!"सामंता बेहद चिंतित जान पड़ता था। वह निमांडा के सामने उसके ही एक छोटे से कक्ष में आमने-सामने बैठा था और इसी बात पर चर्चा कर रहा था।

"बात तो तुम्हारी ठीक है पर हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। कम से कम हम इस बारे में तो सफल हुए की एक बार ही सही नयाना समुदाय के लोगों में उत्साह भर सके । उनका डर खत्म हुआ। वे उस शासन के खिलाफ खड़े हो सके जिनके खिलाफ खड़े होने की कोई सोच भी नहीं सकता था इसलिए ज्यादा चिंता मत करो। वक्त आने पर उन्हें फिर से खड़ा किया जा सकता है! फिलहाल अपने आगे के कार्यक्रम पर ध्यान देना चाहिए और शिद्दत से उस पर कार्य करना चाहिए! अपने साथ जितने भी लड़के शामिल है उनका उत्साह कम नहीं होने देना चाहिए

बस इस बात का ध्यान रखना है क्योंकि वह वक्त बहुत जल्द आने वाला है जब हमें आर पार की लड़ाई लड़नी है। नयाना समुदाय को उनका हक दिलाना ही होगा।"

" हूं। ठीक है।"

*****

जन्मता अपने एक साथी मित्र के साथ जो पुरा तत्व विभाग में कार्य रत था के साथ यू ही घूमने के लिए उस साइट की तरफ आ गया था जहां जानवर चराने वाले बच्चों में से एक को सोने का कड़ा मिला था और पुरातत्व विभाग वालों ने वहां खुदाई शुरू कर दी थी।

जब से उसने टाइम मशीन के बारे मे झूठ बोला था तभी से सामंता से उसकी बात चीत नहीं हो रही थी। सामंता उससे नाराज़ था। उसने भी अपनी तरफ से रिश्ते को ठीक करने की कोई पहल नहीं की थी। बल्कि अपने पुराने मित्रो की तरफ उसका रुख ज्यादा हो गया था।

" तुम्हे पता है वहां साइट पर खुदाई में क्या निकला है?" चलते चलते उसके दोस्त ने कहा।

" सोने का कड़ा मिला था वहां .. सोना ही निकला होगा और क्या?"

" नहीं।"

" फिर?"

" वही चलकर देखते हैं। बताने से क्या फायदा।

" हु।"

*****

मुण्डक समुदाय से ताल्लुक रखने वाला एक ताकत वर युवक अपने साथी के साथ नयाना समुदाय की एक 16 वर्षीय खूबसूरत लड़की के साथ जंगल जैसे इलाके में बुरी नियत से

दबोचे हुए थे। वे वहां कार से पहुंचे थे। लड़की को अगवा कर लाए थे। लड़की के कपड़े फाड़ रहे थे दोनों और उसके जिस्म पर इधर उधर काट रहे थे, नोच रहे थे। वह बुरी तरह चिल्ला रही थी।

" चीख, जितनी तेज चीख सकती है। यहां तुझे बचाने कोई नहीं आएगा।"

तभी एक तीर उसके खोपड़ी में आर पार हो गया। खून का फव्वारा छूटा और वह कटे पेड़ की तरह लड़की के ऊपर से दूसरी तरफ जमीन पर गिरा।

दूसरे लड़के का नशा हिरन!

फिर जब उसने तीर जिस दिशा से आया था उधर देखा तो एक काले लबादा धारी को देखा। वह समझ गया कि वह काल पुत्र है। वह भय से कांपने लगा और अचानक उठ कर एक तरफ भगा।

तभी एक तीर उसकी पीठ से होता हुआ छाती के पर निकल गया। वह भी कटे पेड़ की तरह धड़ाम से भूमि पर गिरा। दोनों के प्राण पाखेरू उठ चुके थे।

****

उस लड़की को घोड़े पर बिठाकर उसके गांव में गांव के बाहर छोड़कर कालपुत्र वापस जंगल की ओर मुड गया।

जंगल में स्थित झरने के बहते पानी से उनसे मुंह धुला। और इसके लिए उसने सर से काला कपड़ा उतार दिया था जो बाद मे फिर से सर मुंह आदि को ढक लिया था।

एक शख्स पेड़ की आड़ में छिप कर सब देख रहा था।

****

युद्ध

और फिर वह दिन भी आ गया जिसका सभी को बेसब्री से इंतजार था यानी कि मुण्डक पर्व का। आज ही के दिन युगांडा अपने बेटे मुरुदंड को देश का अगला तानाशाह घोषित करने वाला था।

सभी तैयारियां बड़ी जोर शोर से की गई थी। वही मैदान था जहां पर मुण्डक की बड़ी सी मूर्ति लगी हुई थी और उसके सामने गंडक और दंडक की मूर्तियां लगी थी । उस विशाल मैदान में एक तरफ बड़ा सा पंडाल सजा हुआ था ऊंचाई पर जिस पर एक बड़े से सिंहासन पर युगांडा विराजमान था और उसके बगल में वैसे ही सिंहासन पर बैठा था उसका बेटा मुरुदंड और उसके पास खड़ा था मेयर, त्रिवेला का बाप । उनके पास ही एक छोटा सा सिंहासन था जिस पर झमोला बैठा था । बाकी सुरक्षा व्यवस्था काफी चाक-चौबंदी थी । उस पंडाल के, मंच के आसपास भी कोई ना जा पाए इसकी पूरी व्यवस्था की गई थी । चारों तरफ से सुरक्षाकर्मियों ने घेर रखा था। चप्पे चप्पे पर सुरक्षाकर्मी मौजूद थे । जरा भी उन्हें किसी पर शक होता तो वह उसका काम तमाम करने के लिए तैयार थे। सभी के हाथों में आधुनिक हथियार थे। कुछ दिनों से कुछ गतिविधियां ऐसी हो रही थी जिनको मध्य नजर रखते हुए सुरक्षा व्यवस्था इतनी टाइट की गई थी।

बाकी देश की बहुत सारी जनता वहां धीरे-धीरे इकट्ठा हो रही थी । मेले की रौनक बढ़ती जा रही थी।

मेले में दूर अतिरिक्त शोर भी सुनाई दे रहा था।

हर बार की तरह इस बार भी मेले का शुभारंभ मुंडक पर्व पर मुण्डक की पूजा अर्चना की शुरुआत से की गई थी और फिर बुल फाइट प्रतियोगिता शुरू हुई । इस बार भी सामंता उसमें भाग ले रहा था।

उसके साथ कुछ अन्य लोग भी पार्टिसिपेट कर रहे थे। सभी एक से एक बढ़कर योद्धा थे।

वह समय भी आ गया जब उस बड़े से मैदान में उसे बेहद ताकतवर और खतरनाक साढ़ को सामंता और उसके साथ पार्टिसिपेट करने वाले साथियों के सामने छोड़ दिया गया। वे सब लकड़ी के चारों तरफ से घिरे बड़े से गोल घेरे में थे।

सभी एक-एक करके उस ताकतवर साढ़ को काबू करने लगे पर साढ़ तो ज्यादा ही खूंखार जान पड़ता था । उसने उन सभी को लहूलुहान कर दिया और वे डर कर वहां से घेरे से बाहर भाग गए । अब बचा था केवल सामंता पर वह भाग नहीं सकता था या यह कहे कि भागना नहीं चाहता था। वह उस ताकतवर साढ़ को हराना चाहता था। मंच पर मुण्डक की शक्ल वाला मुरुदंड बैठा देख रहा था। और उसके चोट खाने या पिछड़ने पर वह व्यंग में धीरे से मुस्करा रहा था। जबकि सामंता उसके इस भाव पर क्रोध में पागल हुए जा रहा था। उसे लग रहा था कि उसके सामने मुण्डक ही है। मुरुदंड उसकी तरफ देख कर लगातार मंद मंद मुस्करा रहा था ।

उस साढ ने उसे भी कई बार पटकने की कोशिश की पर हर बार उसने खुद को बचाया इसीलिए शायद खूंखार जानवर कुछ ज्यादा ही गुस्सा हो गया था और एक बार उसने उसको सींग के ऊपर धर कर दूर फेंक दिया । उसके जिस्म से खून की हल्की धार बहने लगी थी। शरीर में काफी दर्द उठा था पर जब उसने मंच की तरफ देखा तो मुरुदंड को अपने ऊपर मुस्कुराते हुए देखा । उसके तन बदन में आग लग गई । उसने सब कुछ भूल कर फिर से सांड की तरफ ध्यान दिया और उसकी ओर उत्साह से बढ़ गया।

उन दोनों की ज़ोरआजमाइश काफी देर तक चलती रही । कभी जानवर का पल्ला भारी रहता है तो कभी उसका पर अचानक सांड का पल्ला ज्यादा भारी नजर आने लगा । उसने फाइट के दौरान उस को उठाकर न सिर्फ घेरे के बाहर फेंक दिया बल्कि घेरे की मजबूत बल्लियों को भी तोड़कर सामने लगे मंच की तरफ दौड़ लगा दी। भीड़ में अफरा तफरी मच गई थी । किसी के भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें । कुछ सुरक्षा कर्मी उसकी ओर दौड़े पर उन्हें भी उसने उछाल कर दूर फेंक दिया पर इससे पहले कि वह मंच की तरफ पहुंचता और नुकसान पहुंचाता अपनी कुर्सी पर विराजमान मुरुदंड ने छलांग भरी और मंच से नीचे कूद आया। इससे पहले सांड कुछ हरकत करता है उसने उसकी दोनों सींगों को पड़कर काबू करने की कोशिश की और ताकतवर जानवर ने उसे उछलने की पूरी कोशिश की पर उसने दोनो सींगों को पड़कर सांड की गर्दन को जमीन में रगड़ दिया । जानवर की हालत खराब होने लगी। वह निहाल हो गया और इसके साथ ही उसने साढ़ को एक कस के मुक्का मारा दोनों हाथों को जोड़ के उछलकर तो सांड को लगा जैसे चक्कर आ गए हो । वह वही चक्कर खाकर गिर पड़ा।

मुरुदंड ने मिट्टी से सने अपने दोनों हाथ झाडे और उछल कर फिर से अपने कुर्सी पर जाकर

बैठ गया । उसकी ताकत को देखकर सब ने दांतों तले उंगली दबा ली और फिर तालियों से पूरा माहौल गूंज उठा । अपने सिंहासन पर बैठा युगांडा पहले तो डर सा गया था पर जब बेटे की बहादुरी देखी तो उसका सीन फक्र से चौड़ा हो गया था । यही हालत मेयर की भी थी । उसे भी लगा कि उसने अपनी बेटी त्रिवेला के लिए सही लड़का चुना है।

सामंता दूर लज्जित सा खड़ा कुछ देर देखता रहा और फिर एक तरफ जाकर खड़ा हो गया।

इस बार क्योंकि सांड को मुरुदंड ने काबू किया था तो इसलिए बलि देने का हक भी उसे ही था पर जब इस बात की घोषणा की गई तो उसने अपना यह अधिकार सामंता को दे दिया था।

पर सामंता ने बलि देने से इनकार कर दिया था ना सिर्फ इनकार किया था बल्कि पुरजोर विरोध करते हुए कहा था,"आज से इस बलि प्रथा को बंद कर देना चाहिए । बल्कि इस खेल को ही बंद कर देना चाहिए ऐसे खेल से कोई फायदा नहीं जिसमें किसी निर्दोष प्राणी की जान जाने का खतरा हो!"

"तुम्हारे या किसी के कहने से हजारों साल की परंपरा को हम बंद नहीं कर सकते । यह सब मुण्डक शिब्रा ने शुरू किया था और उसकी ही आज्ञा से आज भी हो रहा है!" झमोला मंच से माइक पर तुरंत बोला।

फिर मुरुदंड ने उस सांड की बलि दी मुण्डक शिब्रा की मूर्ति के सामने। उस सांड को गंडक और दंडक जिन्हे वे शैतान समझते थे का प्रतीक मानते थे।

उसके कुछ देर बाद जब मंच पर खड़े होकर युगांडा ने अपने बेटे मुरुदंड को अगला तानाशाह घोषित किया तो सामंता ने चीख कर तुरंत ही इस बात का विरोध करते हुए कहा,"हमें यह मंजूर नहीं है। इस देश में हजारों साल से मुंडक समुदाय का ही शासन चला रहा है । नयाना समुदाय के लोगों का जीवन निम्न स्तर का है। हम चाहते हैं कि इस देश में तानाशाही खत्म हो लोकतंत्र की व्यवस्था हो और लोकतांत्रिक ढंग से ही सब कुछ चले। इस देश में रहने वाले हर नागरिक को अधिकार मिलें उसके साथ समान व्यवहार हो। नयाना समुदाय के लोगों का भी बराबर का हक मिले। यह देश पहले भी नयाना समुदाय के लोगों का था जब उनका राज हुआ करता था और अब से ऐसा ही होना चाहिए । नयाना समुदाय किसी भी गुलामी करने के लिए पैदा नहीं हुआ है। ढाई हजार साल पहले हमारे हमारे पूर्वज इस देश में शासन करते थे पर धोखे से उन्हें शैतान साबित कर दिया गया और ढाई हजार साल से यहां पर गलत बातें कई माध्यमों से बताई जा रही हैं। लोगों को भी लगने लगा की मुंडक शिब्रा ने उन गंडक और दंडक शैतानों से नयाना समुदाय के लोगों को मुक्त किया जबकि यह झूठ है। गंडक और दंडक नयाना समुदाय से ही ताल्लुक रखते थे और हमारे हीरो थे । मुंडक शिब्रा हमारा हीरो नहीं बल्कि खुद शैतान था जिसने धोखे से हमारे सरदार और उसके बेटे को मारा था पर अब ऐसा नहीं चलेगा । यहां की धरती हमारी है, यहां का आकाश हमारा है, नदी हमारी है, पहाड़ हमारे है। यहां का सब कुछ हमारा है और हम ही गुलामी में रहे ऐसा अब नहीं चलेगा।"

सामंता के इस लंबे भाषण के बाद वहां सन्नाटा पसर गया।

" सामंता ठीक कह रहा है। अब तानाशाही नहीं चलेगी.. नहीं चलेगी।" भीड़ में शामिल सामंता के साथियों ने प्लान के मुताबिक़ तुंरत उच्च स्वर में उसकी बात का समर्थन किया।

"द्विज की तरह तुम्हारा भी दिमाग लगता है खराब हो गया। तुम भ्रम फैलाकर लोगों को

आपस मे लड़ाना चाहते हो । यहां बर्बादी हो, लाश के ढेर हो । इसके पीछे तुम्हारा क्या मकसद है हमें नहीं पता पर तुम्हारी यह शैतानियत नहीं चलेगी । हम तुम्हें चेतावनी देते हैं कि यहां से चले जाओ वरना अंजाम बुरा होगा।" झमोला ने खड़े होकर तुरंत ही उसे चेतावनी देते हुए कहा।

"लाशों के ढेर क्यों लगेगे? क्या अपने हक की बात करना गलत है ? गलत तो तुम सब ढाई हजार साल से कर रहे हो । झूठी और मनगढ़ंत बातें करके। मैं तुमसे डरने वाला नहीं । अब फैसला होकर रहेगा। ढाई हजार साल से हम गुलामी का जीवन जी रहे हैं पर अब नहीं जिएंगे। हमारे पूर्वज यहां के राजा थे और हमारे ही लोग यहां के राजा बनेंगे। तुम सब की चालाकी अब नहीं चलेगी!"

"तुम लोगों को गलत बातें कहकर बरगलाने की कोशिश कर रहे हो जबकि हकीकत क्या है सभी को पता है। समुदाय के लोगों को अच्छी तरह मालूम है कि तुम्हारे पूर्वजों को गंडक और दंडक नामक शैतानों ने गुलाम बना कर रखा था । मुण्डक शिब्रा ने स्वर्ग से अवतरित होकर उनकी मदद की थी और उसी का एहसान मानते हुए तुम्हारे समुदाय के लोगों ने खुद सेवा करना स्वीकार किया था!"

"ऐसा कुछ नहीं है। यह सब झूठी बातें हैं । तुम्हारे जैसे चालक लोगों ने खुद से गढ़ी है जबकि हकीकत इसके उलट है । मुंडक शिब्रा नहीं बल्कि बड़ा शैतान था जो दूसरे टापू पर रहता था। असभ्य जंगली था। उसने धोखे से हमारे हीरो गंडक और दंडक को मारा था और समुदाय पर कब्जा किया था।"

"तुम इतनी बड़ी बात इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हो?"

"क्योंकि मैंने ढाई हजार साल की समय यात्रा करके उसे कालखंड में जाकर खुद देखा था और सारी हकीकत मालूम की थी!"

"अच्छा ..तो तुमने ढाई हजार साल पीछे जाकर पता किया! लगता है तुम्हारा सच में दिमाग फिर गया है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। यहां खड़ा हर शख्स जानता है तुम्हारी इसी बात से मुझे लग रहा है कि तुम्हारा दिमाग हिल गया है और इसीलिए हम तुम्हें माफ करते हैं यहां से तुरंत चले जाओ!"

"मेरा दिमाग नहीं हिल गया है मैं सच कह रहा हूं। मेरा दोस्त जन्मता जो वैज्ञानिक है उसने टाइम मशीन बनाई थी और उसी टाइम मशीन से हम दोनों ही वहां पर गए थे । हम दोनों को ही हकीकत मालूम है पर वह चूंकि मुंडक समुदाय से आता है इसलिए सच्चाई को स्वीकार नहीं कर रहा वरना हकीकत बहुत पहले ही खुल गई होती!"

भीड़ में अभी काफी फुसफसाहट हो रही थी किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आखिर यह क्या बातें हो रही है।

"आप लोगों को क्या इस सिरफिरे की बातों पर यकीन है?"अचानक झमोला ने जनता को संबोधित करते हुए सीधा प्रश्न किया जनता शांत खड़ी थी। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहें।

पर सामंता और निमाड़ा की बातों से जो प्रभावित थे उनमें से कुछ लोगों ने जरूर कुछ स्वर में कहा था,"हमें नहीं पता वह क्या कह रहा है , इसकी बातों में कितनी सच्चाई है पर उसकी

बात यह सच है कि इस देश में तानाशाही नहीं होनी चाहिए । लोकतंत्र ढंग से देश चलना चाहिए और नयाना समुदाय के लोगों को बराबरी का हक मिलना चाहिए!" सामंता के सिखाए पढ़ाए लड़के भीड़ में मौजूद थे उन्होंने चिल्ला कर यह बात कही और फिर देखते ही देखते सारी भीड़ यही बात कहने लगी।

भीड़ का शोर गुजने लगा।

और फिर मुरुदंड अपने स्थान पर उठा । उसने माइक अपने हाथ में लिया झमोला से और तेज स्वर में बोला," सामंता ने जो भी कुछ कहा है वह सब कुछ सच है। मुझे भी सब कुछ पता है क्योंकि मुझे भी पिछले जन्म के सपने आते थे और मैं हैरान रह जाता था पर समझ गया कि सपने सच थे। मैं पिछले जन्म में मुण्डक था। आप लोग देख ही रहे हैं कि मुण्डक शिब्रा की मूर्ति की शक्ल मुझसे मिलती है। "

भीड़ में पैना सन्नाटा पसर गया।

"पर शायद आप सबको यह नहीं पता है कि नयाना समुदाय में वो कौन था जिसने गद्दारी की थी.. गद्दारी तो कई लोगों ने की थी पर उनका हेड कौन था जिसकी वजह से पूरा समुदाय गुलाम हुआ था। जिसकी वजह से तुम सबके नयाना समुदाय सरदार गंडक और और उसके बेटे दंडक दोनों की मौत हुई थी?"

मुरुदंड की इस बात ने भयंकर सन्नाटा पसरा दिया था । पूरे समाज में फिर से खुसर फुसर होने लगी थी और फिर भीड़ एक साथ स्वर में बोली,"कौन था वह गद्दार बताओ हमें हम उसे जीवित नहीं छोड़ेंगे?"

सामंता के चेहरे पर चिंता की साफ लकीरें दिख रही थी।

"तुम्हारे सामने ही खड़ा है। यह सामंता ही वह गद्दार है जो पूर्व जन्म का समीरा है । आज से ढाई हजार साल पहले यह भी समीरा के रूप में मौजूद था और इसकी ही गद्दारी की वजह से नयाना समुदाय छिन्न-भिन्न हुआ था । इसकी वजह से ही गंडक और दंडक दोनों मारे गए थे। सजा देनी है तो इसको दो । यही सबसे बड़ा दोषी है।"

जनता में सामंता के खिलाफ रोष बढ़ने लगा था।

अचानक सामंता ने चीख कर कहा।

"मैं स्वीकार करता हूं कि मैं पूर्व जन्म में समीरा के रूप में मौजूद था और मेरी ही गद्दारी के कारण सब कुछ तबाह बर्बाद हुआ था। मैंने जो पाप किया था मैं उसकी कोई माफी नहीं चाहता। आप लोग मुझे सजा देना चाहते हैं तो जरूर दे सकते हैं पर मैं मरने से पहले आप सब लोगों को आपका अधिकार दिलाना चाहता हूं । समानता का अधिकार। जो मेरी गद्दारी के वजह से नयाना समुदाय छिन्न-भिन्न हुआ था । उसे उन्नति शील देखना चाहता हूं। इस देश से तानाशाही खत्म करके लोकतंत्र स्थापित करना चाहता हूं । मैं आप सब की भलाई चाहता हूं और इसमें मेरे प्राण भी चले जाए तो मुझे कोई ग़म नहीं पर मैं अब हमारे समुदाय के बच्चे को गुलाम नहीं रहने दूंगा और इस देश से तानाशाही खत्म करके ही मानूंगा ,अंजाम चाहे कुछ भी हो क्या आप लोग मेरा साथ देंगे?"

भीड़ में खामोशी छाई थी। मंच पर मौजूद हर शख्स व्यंग से मुस्कराया।

" हां.. हां।" भीड़ में खड़े उसके समर्थक चिल्लाए तो देखा देखी पूरी भीड़ चिल्लाने लगी।

अब मंच पर मौजूद सब चिढ़ गए।

भीड़ का समर्थन सामंता की ओर देखकर मंच पर उपस्थिति युगांडा अपने स्थान से उठा और गुस्से में चिल्ला कर बोला,"गिरफ्तार कर लो इस देश द्रोही को । यही है जो सबको गलत बातें बताकर हमारे खिलाफ भड़का रहा है तुरंत इसे गिरफ्तार करो।"

युगांडा का आदेश पाकर मंच के नीचे सुरक्षा कर्मियों में से कुछ पुलिस वाले उसकी ओर बढ़े पर इससे पहले कि वह सामंता के पास पहुंचकर उसे गिरफ्तार करते दो तीन तीर हवा में सनसनाते हुए बेहद तेजी से आए और दोनों पुलिस वालों की खोपड़ी में घुस गए। वे बिना चीखे चिल्लाए भूमि पर गिरे। खोपड़ियों से खून का फव्वारा निकल रहा था। वे जमीन में कटे पेड़ की तरह गिर पड़े।

यह हमला अप्रत्याशित हुआ था। इसीलिए लगभग हर कोई चौक पड़ा था।

और फिर सब ने एक साथ उस दिशा में देखा था जिस दिशा से तीर आए थे।

उस स्थान पर जहां पर मुंडक शिब्रा और गंडक ,दंडक की विशाल मूर्तियां बनी हुई थी उसी विशाल चबूतरे के ऊपर मूर्ति के पीछे से निकलकर एक शख्स धनुष बाण लिए खड़ा था जिसने खुद को पूरी तरह काले कपड़ों में छुपा रखा था।

" कालपुत्र!"उसे देखकर सबके मुंह से यही शब्द निकला।

कुछ पल के लिए सन्नाटा पसर गया।

"यही वह कालपुत्र है जिसने इस देश में अस्थिरता लाने की कोशिश की। मुंडक शिब्रा के गले में जूते की माला डालकर उसकी बेज्जती की और न जाने कितने लोगों को मारा। इस शख्स को फौरन गिरफ्तार करो ताकि इसे सबसे सख्त सजा दी जाए। शायद फांसी भी कम पड़ेगी!"युगांडा उसकी और देखकर बेहद गुस्से में बोला।

"तुम्हारी तानाशाही का वक्त खत्म हो चुका है युगांडा ! तुम्हारी सत्ता जाने वाली है । यह देश जिनका था उनको ही मिलने वाला है!"

नकाबपोश की भारी भरकम आवाज सुनाई दी थी । युगांडा और जल भुन गया।

"गिरफ्तार करो इसे..!"

" किसे किसे गिरफ्तार करोगे?"

युगांडा कुछ कहना चाहता था पर तभी भीड़ से निकाल कर सैकड़ो काले कपड़ों में छुपे हुए लबादाधारी हाथों में धनुष बाण लिए बाहर निकल आए थे।

" इतने सारे कालपुत्र ? " हर किसी के मन में इस वक्त का सवाल जंगल में लगी आग की तरह फैलना शुरू हुआ था और अंदर ही अंदर सबको जलाए दे रहा था।

सब के सर चकरा कर रह गए थे।

"इतने कालपुत्र ! इनमें असली वाला कौन है?"भीड़ युद्ध की संभावना को देखकर पीछे जरूर खिसक गई थी पर इतने सारे कालपुत्रों को देखकर खुश थी और खुसर फुसर करने लगी थी

कि आखिर इनमें से असली कालपुत्र कौन है? सबके मन में यही शंका रह-रह कर उठने लगी थी।

"तुम में से कौन असली कालपुत्र कौन है ..इससे कोई फर्क नहीं पड़ता पर मुझे लगता है कि तुम सब मुर्ख हो । तुम्हें क्या लगता है तुम सब यह धनुष बाण तलवार लेकर हमसे टकरा लोगो ?"

" हां। पर फिक्र मत करो हमारे पास हर प्रकार का इंतजाम है जो वक्त पर तुम्हें दिखाई देगा।"

"भुन डालो इन विद्रोहियों को और ऐसा सबक सिखाओ दोबारा इनमें से कोई भी दुस्साहस करने की, विद्रोह करने की कोशिश ना करें! सोचे तक नहीं। इस देश में हजारों साल से मुंडक शिप्रा के वंशजों का राज रहा है और उनका ही राज रहेगा!"युगांडा ने सिपाहियों को आदेश दे दिया।

युगांडा की बात सुनकर कई सिपाही उन सब की ओर हथियार लेकर दौड़े और अब वहां पर युद्ध शुरू होने वाला था । भीड़ दूर भाग गई थी। सिपाहियों ने भी मोर्चा खोल दिया था। सिपाहियों के पास राइफल थी पर धनुष तीर वाले ज्यादा तेज निकले तीरों की लगातार बौछार होनी शुरू हुई जो वहां मौजूद बंदूकधारियों पर भारी पड़ रही थी हालांकि कई नकाब धारी भी गोलियों का शिकार हो रहे थे पर बहुत कम। वह छुप कर वार कर रहे थे।

इसके अलावा कुछ सैनिकों और लबादा धारियों में उठा पटक भी हो रही थी । शायद वे उनकी बंदूको को छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे और छुड़ाकर उन पर ही वार भी रहे थे । इसके बाद धनुष तीर की जगह वह भी गोलियों का प्रयोग कर रहे थे। युगांडा को इस बात का पहले से अहसास था इसीलिए उसने वहां भारी फोर्स लगा रखा था जो अब सामने आ रहा था।

कुल मिलकर भीषण युद्ध चल रहा था। भीड़ पहले ही तितर वितर होकर दूर हो गई थी। पर सब अपनी जान बचाने के लिए जिसे जहां जगह मिलती भाग रहा था।

लड़ाई के दौरान निमाड़ा जो खुद कालपुत्र वाली भेषभूषा में था एक दूसरे लबादा धारी से बोला ," तुम द्विज हो न?"

" हां और तुम निमांडा.. है न? उसने कहा।

"यानी कई सारे लड़ाके तुमने तैयार किए .. तुम्हारा इरादा भी आज ही हमला करना था? हमने भी कई लड़ाके तैयार किए थे आज ही के दिन के लिए। पता होता तो मिलकर काम करते?"

"पहले पता नहीं चला कोई बात नहीं। पर अभी हम मिलकर ही तो लड़ रहे हैं।"

" हां ये बात भी सही है। वैसे क्या तुम असली कालपुत्र को जानते हो?"

" यही सवाल मै भी तुमसे पूछ सकता हूं।"

फिर कोई कुछ नहीं बोला। और लड़ने में व्यस्त हो गए।

मंच पर युगांडा ,मेयर, झमोला और मुरुदंड मौजूद थे। मंच को सुरक्षाकर्मियों ने पहले ही घेर रखा था और वहां किसी को जाने नहीं दे रहे थे पर अचानक एक तीर तेजी से सन सनाता हुआ आया । और झमोला के सर में प्रवेश कर इधर से उधर पार हो गया और उसके बाद

युगांडा के जिस्म में अनगिनत तीर आकर समा गए। वे दोनों वहीं तुरंत ही ढेर हो गए। उन दोनों ने सोचा भी नहीं होगा कि उनका इस तरह से अंत होगा।

अपने बाप को मरता देख मुरुदंड गुस्से में पागल हो गया और ऊपर से मंच से ही छलांग लगा कर सामंता के उपर कूदा। सामंता जो सैनिकों को मारने पीटने में लगा था। सामंता ने एक सैनिक के हाथ से तलवार छुड़ा ली थीं जो उसने एक मर चुके लबादधारी से छीनी थी और अब तक कई दुश्मनों को परलोक का टिकट दे दिया था। मुरुदंड भी जिसको भी पकड़ता था हवा में उछाल देता था या जमीन में गाड़ देता था। उसको पागलों की तरह अपनी ओर बढ़ते देख सामंता भी गुस्से में पागल हो गया और सैनिकों को छोड़ उससे भिड़ गया। दोनों योद्धा एक दूसरे के खून के प्यासे होकर एक दूसरे से लड़ रहे थे।

अचानक मुरुदंड ने उसको हवा में उछाल दिया । हवा में कलाबाजियां खाता हुआ सामंता जमीन में गिरा पर फौरन ही उठ बैठा और फिर से उससे जाकर भिड़ गया। दोनों ही योद्धा एक दूसरे को मार डालने के लिए उतारू जान पड़ते थे। कभी लगता था सामंत भारी पड़ रहा है तो कभी लगता था मुरुदंड । कुछ ही पल में दोनों ही खून से सन चुके थे पर यहां यह कहना गलत ना होगा मुरुदंड का पल्ला कुछ भारी था । वह खून से सना हुआ था फिर भी मुस्कुरा रहा था और उससे ज्यादा खून से सना हुआ था सामंता और क्रोध में पागल था।

उसकी मदद के लिए एक लबादा धारी आगे बढ़ा था पर मुरुदंड ने उसको भी पकड़ लिया ।

" तुम में असली कालपुत्र कौन है बता? " उसने उससे पूछा।

" तुम कभी नहीं जान पाओगे।"

" क्यों?"

" क्योंकि आज तुम्हारी तानाशाही का, तुम्हारे जुल्मों का तुम्हारे साथ जुल्म करने वाले हर शख्स का अंत है। झमोला का ,अपने पिता का अंत तो देखा ही होगा। "

इसके साथ ही उसने उस पर भी वार किया।

गुस्से में पागल हो रहे मुरुदंड ने उसे उठा उठा के पटका । वह उसे मार ही डालता लेकिन तभी सामंता ने उसे जोर से धक्का दिया और वह भूमि पर जा गिरा। नीचे पड़े लबादाधारी को उसने हाथ बढ़ाकर उसका हाथ पकड़कर उठाया। वह काफी घायल हो चुका था। चल सकने की हालत में भी नहीं था।

तभी मुरुदंड भयंकर गुस्से में फिर से उठा और इस बार सामंता पर झपटा। सामंता उसे खा जाने वाले अंदाज में देखते हुए भिड़ गया। उसे वह मुण्डक शिब्रा ही समझ रहा था। उसके लिए उसके हृदय में बहुत क्रोध था। हालांकि उसे वह अच्छी टक्कर दे रहा था पर लगता नहीं था कि उसे हरा पाएगा । मुरुदंड पिछले जन्म में भी जब वह मुंडक शिब्रा था तब भी बेहद ताकतवर था। और आज भी बेहद ताकतवर था। उसने सांड को बड़ी आसानी से काबू में कर यह पहले ही साबित कर दिया था। पर अब वह सामंता पर भारी पड़ रहा था। सामंता को उसने धूल चटा दी थी।

"तूने पिछले जन्म में भी गद्दारी की थी और तेरी ही गद्दारी की वजह से तेरे सरदार गंडक और दंडक मारे गए थे। नयाना समुदाय गुलाम बन गया था और आज भी तू अपनी सत्ता के साथ

गद्दारी कर रहा है!"भूमि पर घायल पड़े सामंता से गुस्से में बोला।

सामंता की नजरों के सामने ढाई हजार साल पहले की कहानी चलचित्र की भांति घूमने लगी।

"हां ,मैंने उस समय गद्दारी की थी और उसी का परिणाम है मेरा पूरा समुदाय आज तक भुगत रहा है पर तू सिर्फ गद्दार ही नहीं बल्कि धोखेबाज भी है। ढाई हजार साल पहले भी तू अपने वादे से मुकर गया था। मैं जीवित रहता तो तुझे तभी मार डालता। मुझे अपनी गलती सुधारने का मौका देने के लिए ही पुनर्जन्म मिला है और मैं उसे ऐसे ही जाने नहीं दूंगा । चाहे मेरी जान ही चली जाए!" वह फुर्ती से अपनी जगह उठ कर खड़ा हो गया।

"तो फिर तू जान देने के लिए तैयार हो जा । अभी तक यहां कोई ऐसा पैदा नहीं हुआ जो मुझे हरा सके। ना पहले था ढाई हजार साल पहले और ना ही अब है।"

"तुझे हराने का दम पहले भी गंडक और दंडक में था । पर मेरी गलती से धोखे से उन्हें मार डाला। वरना वे दोनों ही तेरा काम तमाम कर देते!"

"पर अब तो गंडक नहीं है दंडक नहीं है। कौन करेगा मेरा काम तमाम ! तेरा काम तो मैं अभी तमाम किए देता हूं । बाकी कुछ कालपुत्रों को लेकर तू मुण्डक समुदाय को ,उनकी सत्ता को खत्म करना चाहता है बेवकूफ ! तू कुछ नहीं कर पाएगा । मैं तुम्हारे साथ सबको मार डालूंगा!"

" अब मरने का वक्त तेरा है मुण्डक! "

सामंता इस बार पूरी ताकत से उससे भिड़ गया । इस बार मामला आर पार का लगता था पर इस बार वह मुरुदंड पर भारी पड़ रहा था । उसने कई बार मुरुदंड को हवा में इधर-उधर उछाला। कई घूंसे बरसाए। एक बार तो उसने पीछे से उसकी गर्दन बुरी तरह पकड़ ली,लगा कि वह उसको मार ही डालेगा। जैसे तैसे उसने खुद को उससे छुड़ाया तो वह उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके सीने पर , मुंह पर घूंसे बरसाने लगा और इसके बाद उसकी गर्दन को पकड़ कर उसे दबाना शुरू किया।

पर तभी एक लबादाधारी जिसके हाथ में नंगी तलवार थी ने सामंता को लात मारी तो वह उछलकर काफी दूर जा गिरा।

वह और मुण्डक दोनों ही हैरत में थे। क्योंकि दोनों की जानकारी में लबादाधारी नयाना समुदाय की तरफ थे । सामंता सोचने लगा यह कौन है जो उसके खिलाफ है । मुण्डक सोचने लगा कि यह कौन है जिसने उसे बचाया। पर उस समय सोचने का ज्यादा वक्त नहीं था । दूसरे उस लबादाधारी का खतरनाक इरादा देखकर सामंता ने भी जमीन पर पड़ी एक तलवार उठा ली । और फिर विरोधी ने उस पर वार करना शुरू कर दिया।

विरोधी तलवारबाजी में पूरी तरह पारंगत जान पड़ता था। सामंता को उसके सामने टिकना मुश्किल जान पड़ने लगा।

" तुम कौन हो.?"सामंता ने तलवार बाजी में पिछड़ते हुए जैसे तैसे खुद को सम्भाला और जल्दी से पूछा।

" कालपुत्र।"

" कालपुत्र!" उसके शरीर में सनसनी सी हुई ।

" तुम कालपुत्र हो तो मुरुदंड को क्यों बचा रहे हो? क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि वह पूर्व जन्म का मुण्डक है। उसकी वजह से ही नयाना समुदाय ढाई हजार साल से गुलामी का जीवन जी रहा है?"

" नयाना समुदाय इतने सालों से गुलामी झेल रहा है उसमें मुण्डक से ज्यादा तुम दोषी हो।" लबादधारी की भरभराती आवाज सुनाई दी," कोई बचेगा नहीं!"

और एक वक्त ऐसा आया जब सामंता पर वह भारी पड़ा। कालपुत्र ने अपनी तलवार सामंता की तलवार पर रखकर जमीन पर उसे गिरा लिया । वह अपनी तलवार से उसकी तलवार को हटाने का प्रयास कर रहा था पर कर नहीं पा रहा था। कालपुत्र उस पर भारी पड़ रहा था।

" तुम्हारी वजह से मुरुदंड बच गया।"

"वह मेरा शिकार है उसे मेरे अलावा कोई नहीं मार सकता!" कालपुत्र गुस्से में जान पड़ा।

"तुम असल में कौन हो? अपना नकाब उतारो!"

खुद को असली कालपुत्र बताने वाले ने जब चेहरे से नकाब उतारा तो सामंता और दूर खड़ा मुरुदंड दोनों हैरान रह । फिर जहां सामंता हैरान था वहीं मुण्डक खुश।

" तुमने साबित कर दिया त्रिवेला कि तुम मुझे चाहती हो तभी मेरा बुरा होते देख बचाने आ गई।" वह दूर से बोला। हालांकि वह उन दोनों की बाते नहीं सुन पा रहा था।

"त्रिवेला ! तुम हो असली कालपुत्र !"

"हां, मैं हूं असली कालपुत्र!" त्रिवेला गुस्से में तलवार पर अपना पूरा भार डालती हुई बोली।

"यह तो अच्छी बात है। हम दोनों मिलकर मुरुदंड को समाप्त कर देंगे!"

त्रिवेला ने गुस्से से फिर कहा,"वह मेरा शिकार है । मेरा अपराधी है। मैं उसे अपने हाथों से मारूंगी! पर जितना मेरा वह दुश्मन है उतने ही तुम भी हो! ढाई हजार साल पहले तुमने मेरे पति और मेरे बेटे के साथ गद्दारी की ,उनकी मौत का कारण बने । मेरे पति ने तुम पर भरोसा किया, जिगरी दोस्त बनाया ,मेरा 16 वर्षीय मासूम बेटा जिसकी शादी होने वाली थी ,जो खुशियों में झूलने वाला था जो तुम्हे चाचा कहता था, तुम्हे दोस्त समझता था पर तुमने क्या किया.. अपनी आंखों के सामने दोनों को मरने दिया बल्कि तुम्ही उनकी मौत का कारण बने। नयाना समुदाय की बर्बादी के तुम ही सबसे बड़े दोषी हो। मैं तुम्हें भी नहीं छोड़ने वाली!"

" क्या तुम पूर्व जन्म में गंडक की पत्नी और दंडक की मां थी?"

" हां। जैसे तुम्हें सपना आता था वैसे ही एक सपना मुझे भी आता था और जिसमें मुझे वक्त रहते हकीकत बताई। मुझे भी सब कुछ पता चल चुका था और बाकी ढाई हजार साल पहले की यात्रा करके लौटकर तुमने बता दी थी। इसीलिए मैंने कालपुत्र बनकर मुंडक समुदाय के लोगों को चुन-चुन के मारना शुरू कर दिया था।"

सामंता त्रिवेला की आंखों में प्यार से देखने लगा जबकि त्रिवेला के चेहरे पर गुस्सा था पर उसे लगातार प्यार से अपनी ओर देखते वह थोड़ी विचलित होने लगी। उसकी आंखों से आंसू मचलने लगे थे।

"तुमने सही कहा । सब कुछ मेरे ही कारण हुआ था । एक मेरी गलती से सब कुछ बर्बाद हो

गया । मैंने अपने जिगरी दोस्त और उसके बेटे की मौत का कारण बना। अपने समुदाय के लोगों को हजारों साल के लिए गुलाम बनने को मजबूर किया । मुझसे बड़ा पापी कोई नहीं होगा । इस जन्म में मुझे प्रायश्चित करने का मौका मिला था और मैं उसे पूरा करना चाहता था पर मैं तुमसे माफी नहीं मांगूंगा क्योंकि माफी मेरे पाप नहीं धुल सकती। नहीं ,मेरे लिए क्या सजा हो सकती है मुझे नहीं पता पर शायद जो मुझे पता है वह मौत ही है! तुम देर मत करो अपना बदला ले लो।"

अचानक त्रिवेला की आंखों के सामने उसके साथ गुजारे प्रेम के पल घूमने लगे। आंखें डबडबा आई थी। लगा जैसे उनसे आंसू निकलने वाले हैं जबकि सामंता शांत था। पर फिर अचानक वह मुस्कुराया त्रिवेला का हाथ कांप रहा था सामंत ने नीचे से अपनी तलवार खींच ली और ऊपर से त्रिवेला की तलवार जो दबाव डाल रही थी अचानक उसके गले में धस गई और खून की तेज धार निकलने लगी। सामंता हिचकियां लेने लगा।

और देखते ही देखते उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

त्रिवेला घबराकर उठकर खड़ी हो गई । तभी पीछे मुरुदंड खड़ा हो गया आकर और प्रसन्नता से बोला,"तुमने सही किया इस गद्दार की यही सजा थी और जितने भी गद्दार हैं सबको हम दोनों मिलकर सजा देंगे और बाद में शादी करके इस देश पर हुकूमत करेंगे । यह देश मुण्डक समुदाय के लोगों के लिए ही बना है । और नयाना समुदाय के लोग गुलामी करने के लिए ही बने हैं। पर तुमने ये कालपुत्र जैसा ड्रेस क्यों पहना हुआ है? ओह समझा ! दुश्मन को धोखा देने के लिए.. वेरी स्मार्ट।"

" मैं किसी को धोखा नहीं देती । और धोखा देने वाले को जीने नहीं देती। यह देश पहले भी नयाना समुदाय का था और आज भी नयाना समुदाय का है । तुमने पहले भी धोखे से सत्ता हथियाई थी लेकिन अब नहीं । अब यहां पर नयाना यानी मेरे समुदाय का ही राज्य चलेगा। तुम्हारे जैसे शैतान का नहीं!"

" क्या? ये.. ये तुम क्या कह रही हो?" वह भौचक खड़ा था।

जबकि वहां काले कपड़ों वाले और सैनिकों के बीच लड़ाई जारी थी।

त्रिवेला ने जहर बुझे स्वर में बोली तो वह कुछ समझ नहीं पाया।

" हां मैं नयाना समुदाय से ही ताल्लुक रखती हूं। मेरे बाप ने मुझे अनाथ आलय से गोद लिया था।"

" हु।"

" तुमने ढाई हजार साल पहले मेरे पति और बेटे को छल से मार था और मेरे समुदाय को हजारों साल के लिए गुलाम बना दिया था। तुम्हारे हर पाप का आज अंत होगा। सारे हिसाब चुकाने होगे तुझे।"

" ओह तो तुम गंडक की पत्नी हो..।" मुण्डक व्यंग से मुस्कराया," तुम तो पहले ही मर चुकी थी मुझे बताया गया था। काश जिंदा होती तो.. मै तुम्हे नहीं मारता बल्कि तुम्हे तो मैं अपनी रानी बना कर रखता।"

" शुक्र मना मै जीवित नहीं थी वरना तभी तेरा क्रिया कर्म कर देती।"

" फिर तो तेरे टुकड़े करने में मुझे मजा आता। तेरे जैसे जिद्दी दुश्मन मुझे बहुत पसंद हैं। उनकी जान लेने में जो मजा आता है उसकी बात ही अलग है। पर तू तो मेरे सामने तिनके के समान है.. औरत में कितना दम हो सकता है? मर्द के आगे और वो भी मेरे जैसे मर्द के आगे तो तू दो मिनट भी नहीं टिक सकती। तेरे इतने टुकड़े करूंगा कि इस देश का हर गिद्ध तुझे चखेगा।"

" तुझे औरत की ताकत का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं वरना तू ऐसी मूर्खतापूर्ण बात नहीं करता और रही बात टुकड़े करने के तो वो मैं तेरे जरूर अनगिनत टुकड़े करुंगी जो तुझे मेरे पति गंडक और मेरे बेटे दंडक के साथ साथ नयाना समुदाय के हर एक शख्स जिसके साथ हुए अत्याचार का हिसाब दे सके।"

" चल तुझे तेरी औकात बताता दूं। बताता हूं मुण्डक क्या बला है। एक औरत मुझे चैलेंज करे । उसकी इतनी हिम्मत।" अचानक मुरुदंड गुस्से में उस पर झपटा। पर क्रोध में ज्वालामुखी बनी खड़ी त्रिवेला ने खुद को एक तरह करते हुए उसकी पीठ पर उछल कर लाते जमाई और वह दूर जा गिरा।

उसे लड़की से ऐसी आशा बिल्कुल भी नहीं थी। पर वह गुस्सा होने की जगह मुस्कराया।

" बढ़िया। तुझमें दम है। तुझसे लड़ने में मजा आएगा। और तेरे टुकड़े करने में भी।"

पर इससे पहले वह उससे भिड़ता । लड़की ने खुद आगे बढ़ कर उसे बड़ा तेज धक्का दिया। वह उछल कर फिर दूर जा गिरा। पर तीसरी बार उसने लड़की को हवा में ही पकड़ लिया और हवा में उसे उछाल दिया बहुत ऊपर। वह नीचे गिरती तो निश्चित तौर पर अपना सर फुड़वा लेती पर वह कलाबाजियां खाती हुई आई और दोनों पैरों पर खड़ी हो गई।

वह यह देखकर गुस्से में पागल हो गया। उससे भिड़ गया। पर लड़की और उसका जुनून उस पर भारी पड़ा। लड़की ने उसे उठा उठा कर इधर उधर खूब फेंका। देखने वाले हैरत में थे। फिर अचानक मुरुदंड ने पास पड़ी तलवार उठा ली। और त्रिवेला पर झपटा । तब तक लड़की ने भी अपनी गिरी पड़ी तलवार उठा ली थी। तलवार बाजी में कभी लगता मुरुदंड भारी पड़ रहा है तो कभी लगता त्रिवेला भारी पड़ रही है। दोनों ही एक दूसरे के खून के प्यासे थे। जिसे भी मौका मिलता वही दूसरे को काट डालता। पर एक बार तगड़े वार से मुरुदंड की तलवार उसके हाथ से छिटक कर दूर जा गिरी।

त्रिवेला ने क्रोध से उसकी ओर देखा जो उसे सर पर तलवार लटकते देख कर भी शादी कर रानी बना कर रखने का प्रलोभन दे रहा था।

त्रिवेला की आंखों के सामने अपने पूर्व जन्म के पति गंडक और मासूम बेटे की रक्त रंजित लाशे तैरने लगी और उसका क्रोध बढ़ने लगा, रक्त उबलने लगा। वह रक्त रंजित थी पर जरा भी परवाह नहीं कर रही थी अपनी।

इससे पहले की वह कुछ समझ पाता वह क्रोध में चीखी और उसकी तलवार चली । मुरुदंड की गर्दन धड़ से अलग होकर जमीन पर जा गिरी साथ ही साथ रक्त का तेज फव्वारा छूटा था जिसके अनगिनत छींटे त्रिवेला के ऊपर पड़े। मुरुदंड का सर लुढ़कता हुआ कुछ दूर चला गया था ।

पर त्रिवेला सर काटने के बाद रुकी नहीं बल्कि तलवार से मुरुदंड की बॉडी के न जाने कितने टुकड़े कर डाले। उसकी दशा पागलों जैसी हो गई थी । वह मुरुदंड के जिस्म पर तलवार से

वार करती जा रही थी और चिल्ला रही थी। उसने न जाने कितने टुकड़े कर दिए थे और फिर एक बार ऐसा आया जब वहीं जमीन पर बैठकर उसने मुंह उपर करके एक भयंकर जोरदार अट्टहास किया जिसे सुनकर सारा आसमान थर्रा गया।

" मेरे पति और बेटे को धोखे से मारने वाले इस दुष्ट को मैने मारकर उनकी मौत का बदला ले लिया। ढाई हजार साल से मेरे नयाना समुदाय को गुलाम बना कर रखा था पर अब कोई गुलाम नहीं रहेगा। सबको बराबरी का हक मिलेगा।" उसने मंच पर चढ़ कर माइक से ऐलान किया। मुरुदंड को जब वह हरा रही थी तब सब मुंह में उंगली दबा कर देख रहे थे। किसी को यकीन नहीं हो रहा था कि मुरुदंड जैसे ताकतवर को साधारण दिखने वाली लड़की ने धूल चटाई थी। उसे बड़ी बेरहमी से मार डाला था।

मंच पर मौजूद सभी लोग मारे जा चुके थे । मुरुदंड भी मारा जा चुका था । अब कोई भी लड़ने के लिए काबिल नहीं था । निमांडा ने मंच पर पहुंच कर माइक पर सबसे उच्च स्वर में यही कहा था,"तुम सब नयाना समुदाय से ही ताल्लुक रखते हो और अभी तक गुलामी का जीवन जी रहे थे अब इस देश में नयाना समुदाय का शासन होगा। तानाशाही का शासन खत्म हुआ। सबको बराबर का सम्मान मिलेगा और आज से इस देश की बाग डोर त्रिवेला के हाथ में होगी। मुख्य कर्ताधर्ता होगी यही होगी। किसी को कोई शक हो कि वह शासन नहीं चला सकती तो बताए। "

कोई कुछ नहीं बोला। सब देख चुके थे लड़की की ताकत।

"आप सबको मैं बता दूं की नयाना समुदाय के बारे में अभी तक जो स्टोरी सुनाई जाती थी कि गंडक और दंडक शैतानों को मुण्डक ने मार कर हम पर कोई एहसान किया है बिल्कुल झूठी है। हमारे हीरो गंडक और दंडक है । मुंडक नहीं या युगांडा जैसे लोग नहीं! त्रिवेला हमारी सरदार गंडक की पूर्व जन्म की पत्नी है दंडक की मां है और इसलिए हम सभी को इसका सम्मान करना चाहिए । उसे देश की रानी स्वीकार कीजिए। आज से इस देश की बागडोर त्रिवेला ही संभालेगी!"

भीड़ शांत खड़ी थी अचानक सभी उद्घोष करने लगे,"हमारी रानी त्रिवेला की जय हो, हमारे सरदार गंडक , दंडक की जय हो!"

****

देश में सत्ता परिवर्तन हो चुका था । मुंडक समुदाय का साम्राज्य खत्म हो चुका था पूरी तरह से और अब नयाना समुदाय का साम्राज्य स्थापित हो चुका था । इसकी मुख्य कर्ताधर्ता त्रिवेला ही थी। निमांडा को उसने अपना मुख्य सलाहकार नियुक्त किया था। द्विज को देश की सुरक्षा व्यवस्था संभालने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। बाकी मुण्डक समुदाय के लोगों से कहा गया था कि उनके प्रति किसी प्रकार का भेद भाव नहीं होगा।

मुण्डक की मूर्ति तोड़ दी गई थी। अब वहां गंडक और दंडक की ही मूर्ति बनी हुई थी जिनकी बड़े धूम धाम से पूजा अर्चना की गई थी। उन्हें सम्मान दिया गया था। ज्यादा तर लोगों ने अभी तक इन दोनों मूर्तियों का अनादर करने के लिए माफी मांगी थी।

नयाना समुदाय के कुल शिब्रा, कालपुत्र की मूर्ति मुण्डक की मूर्ति की जगह वही बनाई गई थी।

अब हर साल तीनों मूर्तियों की पूजा अर्चना की घोषणा की गई थी। नाम दिया गया था कालपुत्र शिब्रा पर्व। किसी को कोई एतराज नहीं था। था भी तो किसी ने जाहिर नहीं किया।

अब तक मुण्डक शिब्रा की जो कहानी बताए जा रही थी वो पुस्तक जला दी गई थी और अब एक नई पुस्तक बनाई गई जिसमें सच्चाई थी। पूरा निजाम बदल गया था। अब जो भी कार्य शुरू किए गए उनमें सबकी भलाई थी।

उस समय रात के 8 बज रहे थे। त्रिवेला अपने शयन कक्ष में थी तथा वहां निमांडा और द्विज भी मौजूद थे। उसके बुलाने पर ही वे दोनों वहां उपस्थित थे।

कक्ष तक पहुंचने से पहले रास्ते में निमांडा ने द्विज से पूछा," अब तो साबित हो गया है कि त्रिवेला ही असली कालपुत्र है। और तुम त्रिवेला के साथ मिलकर लड़ रहे थे .. तुम्हें उसके बारे में कब पता चला.. और तुम साथ में कब हुए.. ?"

" मैं तो भटक रहा था इधर उधर। त्रिवेला ही मुझे जंगल में मिली और उसने मुझे बताया कि वह कालपुत्र है। उसका उद्देश था देश से मुण्डक तानाशाही को खत्म करना और इसके लिए उसे मेरी जरूरत थी। उसी के कहने पर मैने लड़के जुटाए और उन्हें प्रशिक्षित किया। "

" यानी कई कालपुत्र तैयार किए?"

" हां। त्रिवेला के आदेश पर सब काम करते थे क्योंकि वह नहीं चाहती थीं कि समय से पहले उसके बारे में किसी को पता चले। कई जगह उसके कहने पर मैं और कई बार मेरे सिखाए लड़के कालपुत्र बनकर गए थे।"

" हु। क्या तुम्हें उसके पूर्व जन्म के बारे मे पता था?"

" हां उसने ही बताया था। तभी तो मुझे यकीन हुआ। दूसरे कालपुत्र के कारनामे मैने भी सुने थे और मानता था कि वह जो कोई भी है ताकतवर है और बुद्धिमान भी है। इसीलिए मैने उसका साथ दिया क्योंकि जो वह चाहती थी वही मैं भी चाहता था। हमारी मंजिल एक थी। "

" ऐसा था तो उसने हमारा साथ क्यों नहीं लिया? हम भी तो वही चाहते थे जो वह चाहती थी?"

" सामंता के कारण। उसे पूर्व जन्म का आभास हो चुका था। वह सच जानती थी और सामंता से नफरत करती थी। "

" ऐसा था तो उसने उसे पहले ही क्यों ना मार दिया?"

" इसलिए क्योंकि युगांडा की, मुरुदंड की तानाशाही खत्म करने में उसकी आवश्यकता थी।"

" हूं।

फिर वे दोनो त्रिवेला के कक्ष में पहुंचे। वह टहल रही थी। दोनों शांत खड़े रहे।

"आपको कैसे पता था कि मैं पूर्व जन्म की गंडक की पत्नी हूं?" फिर त्रिवेला ने टहलते हुए निमाड़ा से पूछा।

"आपको शायद इस बात की जानकारी नहीं है । यहां पर पुरातत्व वाले को जगह की खुदाई कर रहे हैं और वहां पर खुदाई करते वक्त उन्हें वही गुफा मिली थी जिस गुफा में ढाई हजार

साल पहले आप गंडक से मिला करती थी । आपने ही उसमें गंडक और दंडक और अपनी तस्वीर बनाई थी । पुरातत्व विभाग वालों में से एक व्यक्ति का जन्मता से दोस्ती वाला कनेक्शन है । वह अक्सर वहां जाता रहता था और फिर जब उसने उन तस्वीरों को देखा तो फौरन उसने इस बारे में बताया । "

" किसे?

" उसने मुझे ही बताया था। सामंता से तो उसकी बात नहीं हो रही थी। फिर मैने ही सामंता को इस बारे मे बताया। सत्ता परिवर्तन के कुछ दिन ही पहले की ही बात थी ये! उसने भले ही किसी वजह से टाइम मशीन के अपने आविष्कार के बारे मे झूठ बोला हो पर वह सामंता का दुश्मन नहीं था बल्कि मन ही मन दोस्त मानता था।"

"सामंता को पता थी यह बात? ," त्रिवेला को हैरत हुई "यानी .. यानी वह पहले से ही जानता था मेरे बारे में।"

"हां और वह यह भी जानता था कि काल पुत्र तुम ही हो । गुफा में मिले चित्रों की जानकारी के बाद उसने ऐसा अनुमान लगाया था और एक दिन जंगल में उसने तुम्हे नकाब उतार कर झरने के पानी से मुंह घुलते भी देखा था तो सब साफ हो गया था। जब से उसे गुफा में मिले चित्रों की जानकारी हुई और उसने खुद वहां जाकर देखा था। गुफा के अंदर दीवार पर गंडक , दंडक और तुम्हारी तस्वीर बनी थी जो तुमने ढाई हजार साल पहले अपने हाथों से बनाई थी। हालांकि दंडक की तस्वीर तो बचपन की ही तस्वीर थी। वह यह भी जानता था कि तुम्हें भी पूर्व जन्म का सब कुछ याद है और तुम उससे भी बदला लेना चाहती हो इसीलिए उसने सब कुछ जानकर भी कोई विरोध नहीं किया क्योंकि वह माफी नहीं चाहता था । वह चाहता था उसे सजा मिले । वह इसे ही अपना पश्चाताप समझता था।

"यानी तभी सामंता ने अपनी तलवार लडाई के वक्त नीचे से खींच ली थी और..!"

त्रिवेला कुछ नहीं बोली पर लग रहा था कि अंदर ही अंदर वह बहुत व्यथित हैं। दुखी थी।

" उसने जो किया था उसके लिए मैं उसे माफ कर सकती थी क्योंकि उसे सच में उसे अपने किए पर पछतावा था। वह प्राश्चित कर रहा था।" त्रिवेला दुखी स्वर में बोली।

" वह जानता था कि तुम्हारे दिल में उसके लिए प्रेम उमड़ सकता है क्योंकि कभी तुम दोनों के बीच प्रेम संबंध थे। पर वह माफी नहीं चाहता था। सच में उसने पूर्व जन्म में जो किया था उसके लिए बहुत शर्मिंदा था। और माफी तो किसी भी सूरत में नहीं चाहता था। उसे जब तुम्हारे बारे में पता चला था वह समझ गया था कि तुम उससे बदला जरूर लोगी। पर वह दुखी नहीं था बल्कि खुश था। कहता था चलो उसके कुछ पाप तो कम होगे।"

त्रिवेला का चेहरा सपाट था जिस पर कोई भाव नहीं था।

"

A

"

"

"

"